महानऋषि

महंत स्वामी महाराज

– डॉ. किरीट शेलत, IAS (Rtd.)

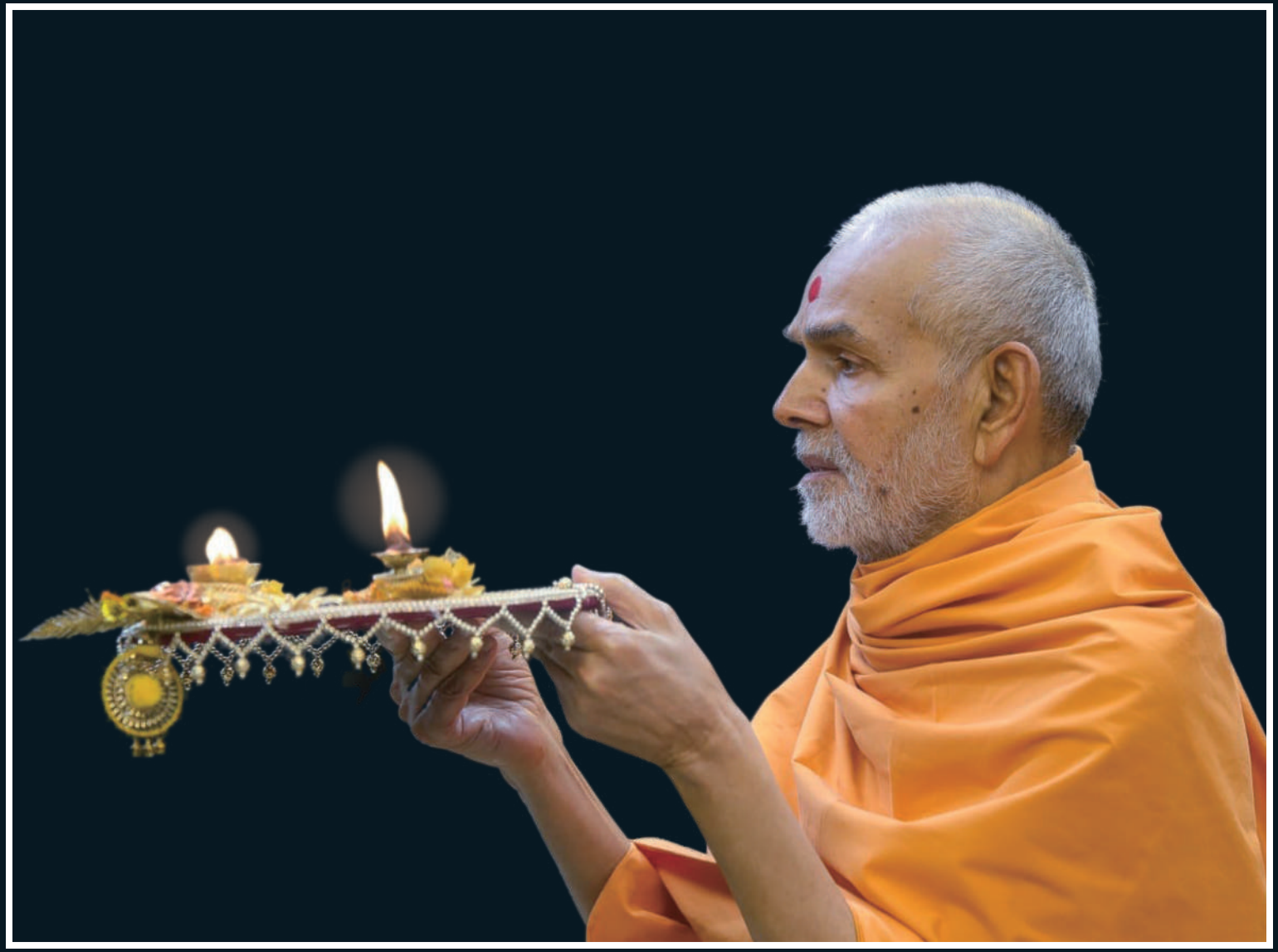

महानुभाव ऋषि

महंत स्वामी महाराज

डॉ. किरीट शेलत, IAS (Retd.)

महान ऋषि

महंत स्वामी महाराज

डॉ. किरीट शेलत, IAS (Retd.)

प्रथम संस्करण (गुजराती) : जून, 2019
द्वितीय संस्करण (अंग्रेजी) : मई, 2021
तृतीय संस्करण (हिन्दी) : 2022

सत्संगी, हरिभक्त और पाठकों के सुझाव और व्यक्तिगत अनुभवों का स्वागत है ।

डॉ. किरीट एन. शेलत
अहमदाबाद-380054
गुजरात (भारत)
ई-मेल - drkiritshelat@gmail.com
फोन : 0091- 79 26421580 - 091 9904404393

ISBN : 9789356597723

मूल्य. : 000/-

Dedicated

परम पूज्य शास्त्रीजी महाराज

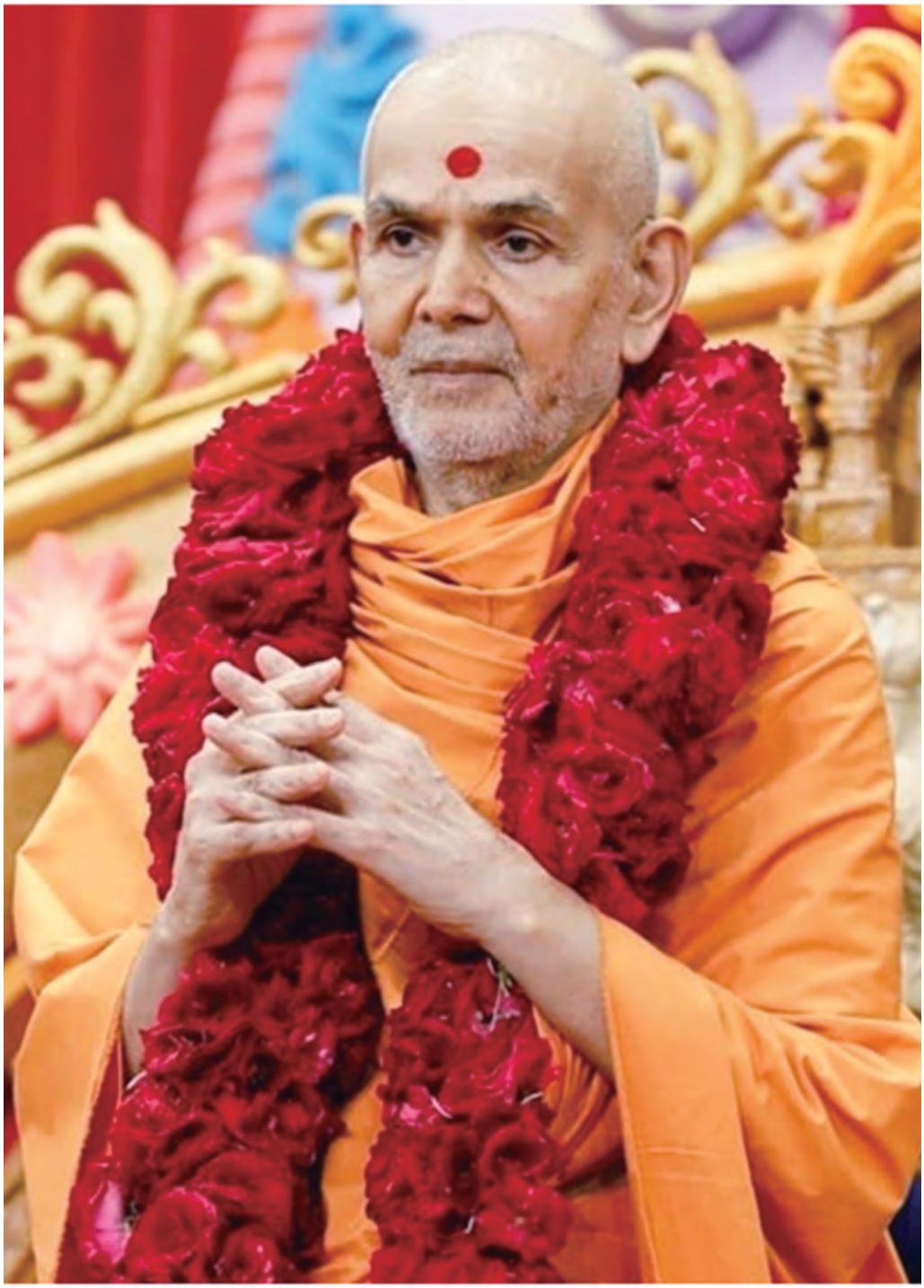

प्रस्तावना

प्रो. आर. सी. मजुमदार प्रमुख इतिहासकार और भारतीय इतिहास के प्रोफेसर, कोलकाता ने स्वामिनारायण संप्रदाय को गुजरात के सुधारवादी संप्रदायों में सबसे श्रेष्ठ कहा । प्रो. रेमंड ब्रैडी विलियम्स, वबास कॉलेज, इंडियाना यूएसए में मानविकी और धर्मशास्त्र में प्रतिष्ठित प्रोफेसर ने बीएपीएस को तेजी से बढ़ता 'धार्मिक समूह' कहा है । 19वीं सदी की शुरुआत में श्री सहजानंद स्वामी ने यह धार्मिक आस्था के विकास को प्रेरित किया । 1830 में उनके स्वर्गवास के समय संप्रदाय के विकास के दो प्रमुख केंद्र थे - कालुपुर मंदिर और वड़ताल मंदिर लेकिन बीएपीएस - बोचासणवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था के तहत ज्यादातर विस्तार और प्रसार हुआ । BAPS की स्थापना 1907 में शास्त्री जी महाराज ने की थी ।

प. पू. गुणातीतानंद स्वामी द्वारा आरंभिक गुरुपरंपरा का अनुसरण श्री शास्त्रीजी महाराज ने किया । उन्होंने साधुओं को अनुयायियों के दरवाजे तक पहुंचने के विचार का फैलाव किया । भगवान श्री स्वामिनारायण की रचनात्मक ऊर्जा स्पंदन गुरुओं के पास होती रही है । इस परंपरा में शास्त्रीजी महाराज के बाद योगीजी महाराज एवम् प्रमुख स्वामी महाराज रहे और BAPS के वर्तमान गुरु महंत स्वामी महाराज है । इन गुरुओं ने इस आध्यात्मिक आस्था सनातन धर्म को दुनियाभर में सुदृढ़ किया और सब जगह जाति या पंथ के बावजूद दूसरों की सहायता की ।

स्वामिनारायण संप्रदाय से हमारा जुड़ाव बहुत पुराना है । भगवान स्वामिनारायण ने उमरेठ-आनंद जिले के बलाली पोल में हमारे पैतृक घर का दौरा किया था । मेरे पिता स्वर्गीय न्यायमूर्ति नानुभाई और माता तारालक्ष्मीबेन संप्रदाय की भक्त थीं । 1959 में जब मेरे पिता राजकोट में जिला एवं सत्र न्यायाधीश थे, तब हमारा संपर्क और दृढ़ हुआ । मातापिता के साथ हम सभी गोंडल जाते थे और योगीजी महाराज को वंदन करते थे । उस समय प्रमुख स्वामी महाराज और योगीजी महाराज दोनों युवा थे - महंत स्वामी हमेशा योगीजी महाराज के साथ नोट्स लेते थे जबकि प्रमुख स्वामी महाराज सभी गतिविधियों की देखरेख कर रहे थे । हमें उनके साथ बातचीत करने का सौभाग्य मिला । हमारा पूरा परिवार, मेरे भाई-रोहितभाई, सुरेशभाई, महेंद्रभाई और बहन उर्मिलाबहन, इंदिराबहन और गीता सभी संप्रदाय का पालन करते हैं

हम संतो को सम्मान देते थे । योगीजी महाराज और प्रमुख स्वामी महाराज दोनों हमारे घर आए थे और हम सभी को आशीर्वाद दिया था । मेरे भाई-सुरेशभाई कानूनी मामलों में बीएपीएस को सलाह देते हैं और बेटा मितुल उनकी सहायता करता हैं ।

संत आत्मस्वरूप स्वामीश्री ने मेरे बेटे व्रजेश और उनके पुत्रों-ओम और अर्जुन में आध्यात्मिक मूल्यों को विकसित किया । ब्रह्मविहारी स्वामी ने मितुल को ढाला ।

मैंने अपनी पुस्तक मेपिंग डेवलपमेंट (2003) में सबसे पहले बीएपीएस राहत गतिविधियां -भूकंप के बाद राहत कार्य - के बारे में लिखा था । प्रमुख स्वामी महाराज से प्रेरित BAPS ने उत्कृष्ट कार्य किया । इसने मुझे उनके जीवन के तरीके - दूसरों को समर्पित जीवन के बारे में लिखने के लिए प्रेरित किया । मुझे एक ओर अवसर मिला जब हम - मेरी पत्नी इला और मेंने 2004 में नेसडन मंदिर - लंदन का दौरा किया । प्रमुख स्वामी महाराज भी वहां जा रहे थे । मैंने आत्मस्वरूप स्वामी से पूछा - क्या में उनकी जीवनी लिख सकता हूँ ? उन्होंने मुझसे कहा 'बापा' से पूछें और उनकी अनुमति लें - जब मैंने ऐसा किया तो 'बापा' ने अपनी आकर्षक मुस्कान के साथ इसकी अनुमति दे दी । मैंने 'बापा' और 'युगपुरुष' पूज्य प्रमुख स्वामी महाराज से प्रेरित यह चुनौती ली । पुस्तक 'युगपुरुष -प्रमुख स्वामी महाराज - दूसरों को समर्पित जीवन' का विमोचन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी - गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री द्वारा जनवरी 2005 में सूरत में किया गया था।

मैं महंत स्वामी महाराज का अनुसरण कर रहा हूँ । उनके पास योगिक जीवन शैली है - सुबह मैं जल्दी उठना, योग और प्रार्थना करना । वे मित-भाषी है -बहुत कम बोलते है । उन्हें हमारे पवित्र शास्त्रों का गहरा ज्ञान है । मेंने उनकी जीवनी लिखने के बारे में सोचा । मई 2017 में हमारी सारंगपुर यात्रा के दौरान, मैंने कोठारी स्वामी, ज्ञानेश्वर स्वामी और आत्मस्वरूप स्वामी के साथ इस पर चर्चा की । उन्होंने मुझे उनकी सहमति लेने की सलाह दी । मैंने पूज्य महंत स्वामी से इस कार्य को करने के लिए उनकी अनुमति और आशीर्वाद मांगा, जो उन्होंने स्मित के साथ दिया ।

इस संत - महान ऋषि महंत स्वामी महाराज की जो प्रेरणा है, वह है उनकी विनम्रता । सभी छोटे बड़े अनुयायियों और गैर-अनुयायियों तक पहुंचने की रीत । वास्तव में वे BAPS का प्रतिनिधित्व करते हैं और प्रमुख हैं -BAPS अरबों अनुयायियों के साथ 55 से अधिक देशों में फैला बहुराष्ट्रीय धार्मिक और आध्यात्मिक संगठन है । महंत स्वामी महाराज सच्चे योगी हैं । उन्हें सामान्य व्यक्ति के जीवन को सरल व सहज बनाने की चिंता है और इसलिए वे अक्षर पुरुषोत्तम दर्शन की बात करते हैं । वे जो लगातार हमारे

जीवन को और हमारी निंद को परेशान करते हैं ऐसे हमारे मन में जमा दूषित विचारों को बाहर लाने के तरीके बताते हैं । वे हमारे स्वयं के लिये चार जीवित दीवारें बनाने की बात करते हैं - हमारे घर को महल बनाने की हमारी मानसिकता बनाते हैं ।

महंत स्वामी महाराज ने स्वयं धार्मिक शास्त्रों में आधुनिक सन्दर्भो की रचना की है और संप्रदाय में अन्य साधुओं को शोध और लेखन के द्वारा आधुनिक समय में हमारी संस्कृति के मूल्यों को पुनर्जीवित करने के लिए प्रोत्साहित किया है ।

युवाओं में उनकी रुचि है और उन्हें उत्कृष्ट बनाए रखते हैं । इन्होंने सत्संग दीक्षा शास्त्र में 300 श्लोकों के पाठ द्वारा युवाओं को प्रेरित किया वे युवाओं में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन लाना चाहते हैं ताकि वे जीवन में बहुत अच्छा प्रदर्शन करें । महंत स्वामी सलाह देते हैं कि आलस्य प्लेग से भी बद्तर है - यह व्यक्ति को अपना सर्वश्रेष्ठ हासिल करने में स्थायी रूप से अक्षम कर देता है । जीवन में आलस्य एक बाधा है और सचेत प्रयास से इसे दूर करने की जरूरत है ।

महंत स्वामी महाराज संप्रदाय में न केवल अपने पूर्वगामीयों का अनुसरण करते हैं, बल्कि हमारे वशिष्ठ, विश्वामित्र, अगस्त्य, शंकराचार्य जैसे महान ऋषि इत्यादि का भी अनुसरण करते है ।

यह सब आने वाले पृष्ठों में दर्शाया गया है । लेखक ने गुजराती पुस्तक प्रो. डी. आर. पटेल के साथ संयुक्त रूप से तैयार किआ था ।

पुस्तक में गुरु परंपरा, कैसे साधुओं और स्वयंसेवकों की भूमिका से सनातन धर्म - दुनिया भर में फैल गया और एक संगठन के रूप में BAPS कैसे विकसित हुआ आदि फोटो कहानियां के साथ शामिल है ।

मुझे महान संत महान ऋषि महंत स्वामी महाराज के बारे में लिखने का सौभाग्य मिला है । अध्यात्म, व्यक्तिगत विकास और सरल जीवन शैली में रुचि रखनेवाले सभी को यह उपयुक्त रहेगा ऐसी मुझे श्रद्धा है ।

जय स्वामिनारायण

अहमदाबाद - डॉ. किरीट एन. शेलत

दिनांक : 01-11-2022

आमुख

महान ऋषि महंत स्वामी महाराज - सेवा और भक्ति का दिव्य शिखर

पूर्ण योगी और महान तपस्वी भगवान स्वामिनारायण (2 अप्रैल, 1781 -1 जून, 1830)ने वर्ष 1801 में स्वामिनारायण संप्रदाय की स्थापना की, तत्कालीन हिंदू प्रथाओं में बड़ा परिवर्तन लाए और अनुयायियों को सनातन धर्म और माननीय सेवा गतिविधियों में संलग्न होने के लिए प्रेरित किया ।

1907 में श्री शास्त्रीजी महाराज द्वारा स्थापित श्री बोचासणवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था (बीएपीएस) के शुभ छत्र के तहत इस धर्म की विशाल वृद्धि और व्यापक विकास हुआ ।

पूज्य योगीजी महाराज और पूज्य प्रमुख स्वामी महाराज दोनों पू. शास्त्रीजी महाराज के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी है । शास्त्रीजी महाराज ने इस समग्र शुद्ध धार्मिक संप्रदाय का प्रसार किया जिसके परिणामस्वरूप दुनिया के लगभग 55 देशों में नैतिकता पर आधारित आध्यात्मिक रूप से सुसंस्कृत समाजों का निर्माण हुआ; 1200 से अधिक मंदिरों का निर्माण किया गया है और 1100 से अधिक समर्पित संत नैतिक और पवित्र जीवन के लिए सामाजिक संपर्क कर रहे हैं और लोगों को जोड़ रहे हैं ।

वर्तमान में, पूज्य महंत स्वामी महाराज अपने बहुमुखी संचार के माध्यम से हर घर में शुद्ध जीवन शैली को प्रेरित करते हैं और समर्थन प्रदान करते हैं ।

इस पुस्तक के लेखक डॉ. किरीट शेलत का बीएपीएस आंदोलन के साथ बहुत लंबा और घनिष्ठ संबंध है। डॉ. किरीट शेलत के माता-पिता स्वर्गीय न्यायमूर्ति नानुभाई शेलत और स्वर्गीय तारालक्ष्मीबेन शेलत, स्वामिनारायण जीवन सिद्धांतों के प्रखर अनुयायी थे । न्यायमूर्ति नानुभाई शेलत राजकोट में जिला और सत्र न्यायाधीश के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, सपरिवार नियमित रूप से गोंडल अक्षर मंदिर जाते थे । पूज्य योगीजी महाराज शेलत परिवार के समर्पण से अत्यधिक प्रसन्न थे ।

इससे पहले डॉ. किरीट शेलतने "युगपुरुष प्रमुख स्वामी महाराज - दूसरों को समर्पित जीवन" पुस्तक लिखी है और उन्हें प्रमुख स्वामी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त था । पुस्तक का छह भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है । गुजराती और अंग्रेजी

संस्करणों का पुनःमुद्रण हुआ है ।

बीएपीएस को दुनिया भर में एक आदर्श सेवा-उन्मुख आध्यात्मिक संगठन के रूप में उनके महान विचारों की जो परिचालन विशेषताओं द्वारा मान्यता प्राप्त है । वे है परचिंतन, परोपकार, प्रमोदभाव, प्रतिज्ञा और प्रशांति और यह विशेषताएं संप्रदाय के कार्य-दर्शन में ये बुने गए हैं ।

भगवान श्री सहजानंद स्वामी और अक्षर पुरुषोत्तम संस्था के आध्यात्मिक उत्तराधिकारीयों ने जनता में सेवा और भक्ति और पुरुषोत्तम की पूजा करके सुखी और संतुष्ट जीवन का मार्ग प्रशस्त किया है । स्वामिनारायण संप्रदाय के 'संत परंपरा' और अपने स्वयं के पवित्र जीवन उदाहरणों के माध्यम से दुनिया भर में सच्चे सनातन नैतिक जीवन को पुनर्जीवित किया है ।

श्री प्रमुख स्वामी महाराज के सबसे योग्य उत्तराधिकारी, श्री महंत स्वामी महाराज ने अपने प्रेम, समर्पण, विनय और विनम्रता के चुंबकीय आकर्षण से स्वामिनारायण परिवार और दुनिया भर में अक्षर पुरुषोत्तम आंदोलन को मजबूत किया है । श्री महंत स्वामी महाराज सामंजस्यपूर्ण सामाजिक संरचना और लोगों के बीच परस्पर सेवा और विश्वास के संबंधों पर बहुत जोर देते हैं । उनका जीवन सिद्धांत अहम् ''अक्षर पुरुषोत्तम दासोस्मि'' है। श्री महंत स्वामी महाराज सच्ची नैतिकता और आध्यात्मिकता के प्रसार में 'सेवक नेतृत्व' के एक असाधारण आदर्श हैं ।

मानवता की सेवा करने के अपने स्वाभाविक झुकाव के कारण श्री महंत स्वामी महाराज सोलह वर्ष की आयु में स्वामिनारायण संगठन से जुड़े और अपने पूर्ववर्ती गुरुओं श्री योगीजी महाराज, श्री शास्त्रीजी महाराज और श्री प्रमुख स्वामी महाराज को पूरे समर्पण, प्रामाणिकता, निस्वार्थता और अनुशासन के साथ सहायता और सेवा प्रदान की । आज वे उसी प्रेम और करुणा की पवित्र भावना के साथ वे संप्रदाय और समाज का मार्गदर्शन और नेतृत्व कर रहे हैं ।

भगवान स्वामी सहजानंद द्वारा स्वामिनारायण संप्रदाय की स्थापना के बाद से मार्गदर्शक गुरुओं की अभूतपूर्व श्रृंखला; स्वामीश्री गुणातीतानंदजी, स्वामीश्री भगतजी महाराज, स्वामीश्री शास्त्रीजी महाराज, पूज्य योगीजी महाराज और पूज्य प्रमुख स्वामी महाराज, बड़ी संख्या में दीक्षित 'संतवृन्द' और पूर्णकालीन 'हरिभक्त' में मूल अक्षर पुरुषोत्तम दर्शन को सुदृढ किया है और उसी गुरु-परंपरा में, श्री महंत स्वामी महाराज ने अपनी जादुई ऊर्जा से समाज में बुनियादी मानवीय मूल्यों को ओर आगे बढ़ाया । अपने बहुत लंबे और व्यापक धर्म-प्रसार, सेवाए और एक अनुकरणीय भक्त के गुणों के कारण, श्री महंत स्वामी महाराज सभी के

प्रिय और सम्मानित गुरु हैं । उपनिषद की परिभाषा के अनुसार, गुरु वह है जो अंधकार को दूर करता है; अंधकार से प्रकाश की ओर, असत्य से सत्य की ओर, मृत्यु से अमरता की ओर ले जाता है । महंत स्वामी महाराज भक्ति और सेवा के आध्यात्मिक शिखर के साथ एक ऐसे आदर्श गुरु हैं, जिन्होने भगवत गीता के भक्तियोग में; भगवान श्री कृष्ण द्वारा निर्दिष्ट भक्त के सभी गुण और लाक्षणिकताएं आत्मसात् की है :

बिन द्वेष सारे प्राणियों का मित्र करुणावान हो ।
सम दु:ख सुख में मद न ममता क्षमाशील महान हो ॥

XII-13

जे तुष्ट नित मन बुद्धि से मुझ में हुआ आसक्त है ।
दृढ़ निश्चयी है, संयमी प्यारा मुझे वह भक्त है ॥

XII-14

क्लेश जिसको किसीसे नहीं, किसीको भी उससे नहीं ।
राग-भय- क्रोध - खेद बिन, प्यारा मुझे है वही ॥

XII-15

वर्तमान ब्रह्मस्वरूप श्री महंत स्वामी महाराज, अस्सी के दशक के उत्तरार्ध की आयु में भी, स्वामिनारायण संस्था, बीएपीएस के असाधारण उत्कृष्ट आध्यात्मिक संगठन के अनगिनत अनुयायियों और सत्संगीओं को निरंतर समर्थन और प्रेरणा प्रदान करते हैं ।

इस पुस्तक की रचना भी इसी उत्साही प्रेरणा का एक सराहनीय परिणाम है । इस पुस्तक के लेखक डॉ.किरीट एन. शेलत ने महर्षि महंत स्वामी महाराज से दिव्य कृपा और आशीर्वाद अर्जित किया है ।

''जय स्वामिनारायण''

दिनांक - .....

- नारायण

ऋण स्वीकार

'महान ऋषि महंतस्वामी महाराज' पुस्तिका का सन 2018 में पहला प्रकाशित संस्करण गुजराती में है, जो डॉ. डी. आर. पटेल के साथ संयुक्त रूप से लिखा गया था । इस पुस्तक को उचित आकार देने और मेरे प्रयास को सफल बनाने में आदरणीय संतों और हरिभक्तों का उनकी अमूल्य मदद के लिए में आभारी हुं ।

लेखन और संकलन में आगे वढ़ने की मुझे अनुमति देने के लिए में पू. महंत स्वामी महाराज का ऋणी हुं, स्वामिनारायण अक्षरपीठ, शाहीबाग द्वारा पुस्तक के प्रकाशन स्वामिनारायण प्रकाश और ब्लिस और साधुतानुं शिखर संदर्भ, विवरण, कथन और तस्वीरों के रूप में अधिक उपयोगी थे । सभी श्रद्धेय संत आत्मस्वरूप स्वामी, कोठारी स्वामी, ज्ञानेश्वर स्वामी का अपने बहुमूल्य सलाह, प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए में ऋणी हुं । उन सभी से मेंने कई उदाहरण लिए हैं । मेंने विवेकजीवनदास स्वामी के वाइब्रेशन और पल्स ऑफ इंन्स्पिरेशन से शब्दशः दृष्टांत भी लिए है, में उनका आभारी हुं ।

में ईश्वरचरण स्वामी, विवेकसागर स्वामी, ब्रह्मविहारी स्वामी का आभारी हुं, अक्षरवत्सल स्वामी, आदर्शजीवन स्वामी, योगीवल्लभ स्वामी, ऋषिमंगल स्वामी और अन्य संतों ने मुझे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सभी प्रकार की सहायता प्रदान की है । में उन सभीका आभारी हुं ।

हस्तलीपी देखने के लीये और मूल्यवान सुझाव देने के लीये में पूज्य अक्षरवत्सल स्वामी का विशेष रूप से ऋणी हूं ।

श्री नारायण गुरुजी को उनके अमूल्य ज्ञानवर्धक 'आमुख' के लिए मेरा हार्दिक धन्यवाद ।

इस पुस्तक के प्रकाशन में इस रचना के समन्वय में रुचि और अथाक निरंतर प्रयास के लिए में हसमुख उपाध्याय, दीपक राणा, श्री मोहनदास कलिंगन और सुश्री निशा शाह का आभारी हुं ।

मेरी पत्नी इला और मेरे परिवार का सहयोग और सक्रिय समर्थन ने महान ऋषि महंत स्वामी महाराज के जीवन और कार्य पर प्रकाश डालने वाली इस पुस्तक को पूरा करने के मेरे इरादे और प्रयास को सफल बनाया।

और अंत में इस पुस्तक को बठावा देने के लीये एन.सी.सी.ऐस.डी. (NCCSD) संस्था का आभारी हूं ।

महान ऋषि पूज्य महंतस्वामी महाराज के चरणों में कोटि कोटि वंदन के साथ

जय स्वामिनारायण

तस्वीर अनुक्रमणिका

- सहजानंद स्वामी – भगवान स्वामिनारायण.....0
- भगवान स्वामिनारायण (उपरोक्त).....0
- भगवान स्वामिनारायण के साथ अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी (नीचे).....0
- श्री हरिकृष्ण महाराज, गुरु गोविंद देवजी, श्री राधाजी.....0
- भगवान स्वामिनारायण और संत परम्परा.....0
- प्रमुख स्वामी महाराज महंत स्वामी महाराज के साथ.....0
- भगतजी महाराज (ऊपर), शास्त्रीजी महाराज (नीचे).....0
- शास्त्रीजी महाराज और प्रमुख स्वामी महाराज.....0
- प्रमुख वर्णी दिन और प्रमुख स्वामी महाराज.....0
- प्रमुख स्वामी महाराज.....0
- भाई की दिव्य त्रिमूर्ति.....0
- योगीजी महाराज और प्रमुख स्वामी महाराज.....0
- प्रमुख स्वामी महाराज.....0
- प्रमुख स्वामी महाराज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे.अब्दुल कलाम के साथ.....0
- स्वामीश्रीने पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को आशीर्वाद दिया.....0
- प्रमुख स्वामी महाराज द्वारा महंत स्वामी महाराज का अभिवादन.....0
- खाना पकाने के विशेषज्ञ के रूप में प्रमुख स्वामी महाराज.....0
- प्रमुख स्वामी महाराज के साथ बातचीत करते महंत स्वामी महाराज (उपरोक्त).....0
- प्रमुख स्वामी महाराज स्कूली बच्चों के साथ, माउंट आबू (नीचे).....0
- प्रमुख स्वामी महाराज.....0
- ब्रह्मलीन प्रमुख स्वामी महाराज का अग्निसंस्कार करते हुए महंत स्वामी महाराज.....0

- दोस्तों के साथ युवा महंत स्वामी महाराज 'वीनु'.....0
- ब्रह्मलीन प्रमुख स्वामी महाराज का अंतिम संस्कार करते हुए महंत स्वामी महाराज (उपरोक्त).....0
- ब्रह्मलीन प्रमुख स्वामी महाराज के दर्शन और अंतिम संस्कार (नीचे).....0
- महंत स्वामी महाराज भागवत दीक्षित संतवृन्द के साथ.....0
- लंदन मंदिर में महंत स्वामी महाराज द्वारा पवित्र अभिषेक.....0
- महंत स्वामी महाराज टोरंटो मंदिर के वार्षिक उत्सव में, कनेडा 0
- स्वामिनारायण मंदिर सारंगपुर में महंत स्वामी महाराज 0
- बोचासण मंदिर में महंत स्वामी महाराज.....0
- महंत स्वामी महाराज 0
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ महंत स्वामी 0
- यू.एस.ए. के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा के साथ महंत स्वामी महाराज.....0
- शिकागो, लॉस एंजिलीस और अटलांटा में महंत स्वामी महाराज.....0
- योगीजी महाराज ने युवा महंत स्वामी और अन्य नव दीक्षित युवा साधु को आशीर्वाद दिया 0
- कंपाला, युगांडा में महंत स्वामी महाराज के साथ राष्ट्रपति योवेरी कागुटा मुसेवेनी 0
- स्वामिनारायण अक्षरधाम, गांधीनगर.....0
- स्वामिनारायण अक्षरधाम, नई दिल्ली 0
- प्रमुख स्वामी महाराज की 97वीं जन्म जयंती समारोह राजकोट में 0
- श्री स्वामिनारायन मंदिर, नवसारी 0
- महंत स्वामी महाराज प्रार्थना करते हुए 0
- सूरत, महलाव और नासिक में महंत स्वामी का विचरण 0
- वीडियो लिंक के माध्यम से जन्मदिन समारोह.....0
- स्वामीश्री का ठाकोरजी और गुरुओं का रथ खींचना.....0
- महंत स्वामी महाराज आरती करते हुए.....0

- म्यूजिकल फाउंटेन, अक्षरधाम नई दिल्ली.....0
  शास्त्रोक्त पूजा और भारत की 120 पवित्र नदियाँ (नीचे)
  से एकत्र किया गया पानी
- कनेडा के प्रधान मंत्री स्टीफ़न हैवर की अक्षरधाम,
  नई दिल्ली की मुलाक़ात.....0
- गजेंद्र पीठ, अक्षरधाम, नई दिल्ली 0
- हॉल ऑफ वैल्यूज, जाइंट स्क्रीन थिएटर, बोट राइड एट
  अक्षरधाम मंदिर 0
- साधु, स्वामी श्री के साथ ध्यान कर रहे हैं.....0
- भुंगा - BAPS द्वारा निर्मित कच्छ में एक पारंपरिक घर.....0
- कच्छ भूकंप पीड़ितों के लिए BAPS द्वारा निर्मित स्कूल और.....0
- लंदन में BAPS द्वारा सुनामी राहत अपील और
  प्रार्थना विभिन्न देश के दूतों के साथ.....0
- लेखक और उनके परिवार के सदस्य प्रमुख स्वामी महाराज के साथ
  और महंत स्वामी महाराज के साथ.....0
- लेखक और उनके परिवार के सदस्य 0
- युगपुरुष के मराठी संस्करण पुस्तक का विमोचन
  महंत स्वामी महाराज द्वारा 0
- ''महान ऋषि महंत स्वामी महाराज'' गुजराती संस्करण का विमोचन.....0
- महंत स्वामी महाराज ''युगपुरुष'' पुस्तक का विमोचन करते हुए
  अहमदाबाद में 0

विषय

❖ **परिचय**

- हिंदू धर्म - सनातन धर्म 0
- नीलकंठ वर्णी का गुजरात आगमन 0
- स्वामिनारायन संप्रदाय की स्थापना 0
- धार्मिक - समाज सुधारक 0

❖ **गुरु परम्परा**

- गुणातीतानंद स्वामी 0
- भगतजी महाराज 0
- शास्त्रीजी महाराज 0
- योगीजी महाराज 0
- प्रमुख स्वामी महाराज 0

❖ **'वीनु' - महंत स्वामी महाराज**

- शुरुआत 0
- शुरुआती दिन 0
- प्रमुख स्वामी महाराज के साथ 0
- योगीजी महाराज के साथ 0
- स्पंदन 0
- महान ऋषि महंत स्वामी महाराज 0

❖ **अध्यात्म का प्रसार - सनातन धर्म** 0

- नेसडेन मंदिर, लंडन 0
- अक्षरधाम - गांधीनगर 0
- यू.एस.ए.और कनाडा में नए मंदिर 0
- अक्षरधाम रॉबिंसविले, न्यू जर्सी - यू.एस.ए. 0
- स्वामिनारायण नगर - राजकोट 0
- दुबई मंदिर 0
- नवसारी में नया मंदिर 0

❖ **महंत स्वामी महाराज 'बोध'** 0
- स्पंदन विवेकजीवन स्वामीश्री 0
- घर : 'एक दिव्य महल' 0
- अक्षर पुरुषोत्तम दर्शन 0
- स्वामिनारायन मंत्र 0
- भविष्य की पीढ़ी 0
- आलस्य 0
- छात्रालय और स्कूल परिसर 0
- विश्वशांति महापूजा 0
- महंत स्वामी महाराज का जन्मदिन समारोह 0
- गुणातीतानंद स्वामी का वैदिक अधिष्ठापन समारोह 0
- स्वामिनारायण आरती 0
- शिक्षापात्री 0
- वचनामृत 0
- सत्संग दीक्षा मुखपाठ 0

❖ प्रेरणा के मोती विवेकजीवन स्वामीश्री 0

❖ त्रिवेणी संगम 0

❖ ट्रस्ट : बोचासनवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था 0
- संगठन 0
- साधु परंपरा 0
- स्वयंम सेवक 0
- आगे बढ़ने की गतिविधियाँ 0

❖ महान ऋषि महंत स्वामी महाराज 0

सन्दर्भ 0

शब्दावली 0

स्वामिनारायण

BAPS

सहजानन्द स्वामी भगवान स्वामीनारायण

भगवान स्वामीनारायण

अक्षरब्रह्म गुणातीतानन्द स्वामी के साथ भगवान स्वामीनारायण

परिचय

हिंदू धर्म - सनातन धर्म

भारत एक प्राचीन देश है और दुनिया की सबसे पुरानी जीवित सभ्यताओं में से एक है । देश की एक अरब की आबादी में 83 फ़ीसदी हिंदू है ।

हिंदू धर्म दुनिया का सबसे पुराना प्रचलित धर्म है । वह समय था जब सनातन धर्म, हिंदू धर्म का पारंपरिक नाम, दक्षिण- पूर्व और पश्चिम एशिया और उसके बाहर भी प्रचलित था । बाद में पश्चिम एशिया, सुदूर पूर्व आदि में बौद्ध धर्म का पालन होता रहा ।

हिंदू एक ईश्वर में विश्वास करते हैं, लेकिन कई देवी-देवताओं की पूजा करते है जो परमात्मा-सर्वोच्च ईश्वर की अभिव्यक्ति हैं । मंदिरों में देवताओं की पूजा की जाती है, देवताओं के ये अनेक धाम है ।

ऋषियों के रूप में जाने जाने वाले संत जन समुदाय और शासकों को सही और गलत के बारे में मार्गदर्शन करते थे । ये साधु आश्रमों में रहते थे जो बस्ती और नगरों से बहुत दूर थे और अधिकतर वनों में होते थे । उनसे जुड़े आवासीय विद्यालय थे जिन्हें गुरुकुल कहा जाता था । इन आश्रमों गुरु में विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करते थे । गुरु-शिष्य परंपरा प्राचीन भारत की एक अनूठी विशेषता है । गुरु अपने शिष्यों को नैतिक जीवन व्यतीत करके ईश्वर की कृपा प्राप्त करने का मार्ग दिखाते रहे । लेकिन, इससे भी अधिक, इन आश्रमों ने आदर्श जीवन के केंद्र के रूप में कार्य किया ।

कई गुरु और ऋषियों ने देश की धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में प्रगति में योगदान दिया है। इन वंदनीय व्यक्तित्वों में वशिष्ठ, विश्वामित्र, अगस्त्य, शुक्राचार्य, पतंजलि, चाणक्य आदि शामिल हैं ।

भारत में ऐसे कई गहन विचारक हुए हैं । शास्त्रों में उनके दर्शन मान्य है और उपयोग में है, आज भी, किसी न किसी रूप में, चाहे वह वशिष्ठ का योग हो, पतंजलि का योग हो या चाणक्य का अर्थशास्त्र । इस प्राचीन भूमि के इतिहास में निरंतरता है, जि से किसी भी समय अवधि के लिए अलग-थलग नहीं माना जा सकता । भारतीय समाज में अंधेरे और पुनरुत्थान के कई दौर आए हैं । और पुनरुत्थान में सहजानंद स्वामी जैसे संतों ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई ।

सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दियां भारत के इतिहास में अंधकारमय काल थी ।

1707 में मुगल शासक औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारीयों द्वारा 31 वर्षों तक अप्रभावी शासन किया गया, लेकिन मुगल साम्राज्य का पतन हो रहा था । फ्रांसीसी और अंग्रेजों का आगमन हुआ । इसके अलावा, देश कई तरह के आंतरिक झगड़ो से त्रस्त था । इसका सामाजिक जीवन अस्त-व्यस्त हो गया। ऐसा कोई शासक नहीं था जो देश को एकजूट कर सके और उच्च कद के कोई उल्लेखनीय धार्मिक नेता भी नहीं थे ।

गुजरात भी इस उथल-पुथल से नहीं बचा । इसके कुछ क्षेत्रों में मुगल सुबे थे, जबकि कुछ क्षेत्र महाराष्ट्र के एक शासक गायकवाड के नियंत्रण में थे । शेष राज्य में 300 से अधिक छोटे-छोटे राज्य थे, जो सदा आपस में लड़ते रहते थे ।

समाज रूढ़िवादी था । कई जाति समूह थे । उच्च और निम्न जातियों के बीच, व्यापारियों और शासकों और किसानों के बीच जीवन स्तर में अंतर था । बहुविवाह आम था । महिलाओं की स्थिति बदतर थी । विभिन्न प्रकार के नशीले पदार्थों जैसे आफिन, गांजा, चरस और मादक पेय का आमतौर पर उपयोग किया जाता था ।

शासक अपनी निर्दयता के लिए जाने जाते थे । दूसरी और, धार्मिक अनुष्ठान और मंदिर रूढ़िवादी ब्राह्मणों के नियंत्रण में थे । समाज में नैतिकता निम्नस्तर पर थी । इस प्रकार यह गुजरात के इतिहास का एक काला काल था । निर्वाह के लिए एकमात्र ग्रामीण अर्थव्यवस्था थी । बार-बार सूखा पड़ रहा था । लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पडता था ।

''वैष्णव धर्म'' (भगवान विष्णु-कृष्ण में मानने वाला धर्म) लोकप्रिय था किंतु रूढ़िवादी पुजारियों का प्रभुत्व था । निचली जातियों, किसानों, खेतिहर मजदूरों, चरवाहे और कारीगरों की मंदिरों तक सीमित या नहिंवत पहुंच थी ।

नीलकंठ वर्णी का गुजरात आगमन : गुरुने उन्हें सहजानंद स्वामी कहा

नीलकंठ वर्णी का जन्म 2 अप्रैल, 1781 को भारत के आधुनिक उत्तर प्रदेश में अयोध्या के पास छपैया नामक स्थान पर हुआ था । वह अपने माता-पिता की मृत्यु के बाद गुज रात आए थे । वह एक पांडे परिवार से थे । उन्होंने 11 साल की उम्र में अपना घर छोड़ दिया और वे लगभग सात वर्षों तक पैदल ही घूमते रहे । वह सौराष्ट्र में जूनागढ़ जिले के मंगरोल तालुका में लोज नामक स्थान पर 1799 में स्वामी रामानंद से मिले । रामानंद एक बड़े धार्मिक नेता थे । भगवान कृष्ण उनके आदर्श थे । मुक्तानंद स्वामी उनके करीबी सहयोगी थे । सन 1800 में नीलकंठ वर्णी को दीक्षा दी गई और दोनाम

श्री हरिकृष्णा महाराज (भगवान स्वामिनारायण)

सहजानंद और नारायण मुनि दिए गए ।

स्वामिनारायण संप्रदाय की स्थापना

16 नवंबर, 1801 के दिन उन्हें रामानंद स्वामी द्वारा आचार्य बनाए गए । एक महीने बाद सहजानंद को केवल संप्रदाय के प्रभारी के रूप में छोड़कर रामानंद स्वर्गवासी हुए ।

सहजानंद स्वामी ने समाज में आध्यात्मिक आधार को विकसित किया । और भगवान कृष्ण को श्रीहरि के रूप में संदर्भित किया । अपने अनुयायियों को 'स्वामिनारायण महामंत्र' दिया और एक उदार धर्म मार्ग बनाया। इस मार्ग 'स्वामिनारायण संप्रदाय' के नाम से जाना जाने लगा । उन्होंने मानवीय सेवाओं के माध्यम से नारायण की भक्ति की अवधारणा विकसित की ।

उन दिनों, उन्होंने 'स्वामिनारायण' आस्था को गुजरात के केंद्र में लाने के लिए कुछ बुनियादी धार्मिक और सामाजिक सुधारों की शुरुआत की । जैसे;

(i) धर्म सभी के लिए खासकर दलितों, किसानों, खेतहर मजदूरों, सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों के लिए घोषित किया । उन्होंने अपने साधुओं को विचारन(भ्रमण) पर गांवों और यहां तक कि खेतों में धार्मिक मार्गदर्शन देने के लिए आदेश दिये । मंदिरों को सभी के लिए, चाहे वे किसी भी जाति और सामाजिक प्रतिष्ठा के हों, खोल दिए ताकि वे भगवान कृष्ण की पूजा कर सकें । लोगों को मंदिर निर्माण के लिए प्रेरित किया । उन्होंने खुद गढड़ा, वड़ताल, भुज (कच्छ), धोलेरा, जूनागढ़ और अहमदाबाद में मंदिर बनवाए ।

(ii) उन्होंने साधुओं के लिए एक सख्त आचार संहिता पेश की, उनको ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ता था, और भोजन करने से पहले रोजाना पांच परिवारों से मिलना पड़ता था । साधुओं को गांव से गांव जाना चाहिए, महिलाओं से दूर रहना चाहिए, उन्हें अपने जीवन में निष्काम (ब्रह्मचर्य), निर्लोभ (गैर-लोभ), निस्वाद (गैर-स्वाद), निस्नेह (गैर-लगाव), निर्मान (गैर-अहंकार) का पालन करना चाहिए ऐसे नियम बनाएं ।

(iii) उन्होंने सभी धार्मिक अवसरों के लिए त्योहारों की शुरुआत की । 'समेंय्या' की शुरुआत की, जिसमें लोग इकट्ठे होते थे, इस तरह उन्हें अपने गांव के बाहर नई जगहों पर जाने और दुनिया को देखने का मौका मिलता था ।

(iv) उन्होंने लोगों और साधुओं के बीच धार्मिक प्रवचन और चर्चा शुरू की, लिखित संदेश बनाए और इस उद्देश्य के लिए धर्म साहित्य का इस्तेमाल किया ।

(v) वे लगातार यात्रा करते रहे, एक के बाद एक गाँव जाते रहे और हर व्यक्ति से

सहजता से मिले । उन्होंने भक्तों के घरों में जाने की परंपरा शुरू कि और उसे आगे विकसित किया ।

धार्मिक - सामाजिक सुधारक

सहजानंद स्वामीने अपने 49 वर्षों के छोटे से समय में, उनके कई विरोधियों ने, चाहे वे धार्मिक हों या अन्य, उन्हें परेशान करने, बदनाम करने या नष्ट करने का प्रयास किया । उन्होंने सभी को जीत लिया और ऐसे सभी लोग उनके अनुयायी बन गए । इसलिए वे भगवान के अवतार के रूप में जाने लगे और भगवान स्वामिनारायण कहलाए । लोगों ने उन्हे बहुत सम्मान दिया और भगवान माना । स्थानिक शासक मराठा और मुस्लिम सुबा और यहां तक कि अंग्रेज भी उनसे प्रभावित थे । उन्होंने एक धार्मिक - सामाजिक आचार संहिता उपलब्ध कराई, जिसे 'शिक्षापत्री' के नाम से जाना जाता है, यह शिक्षापत्री अनुयायियों को सदाचारी जीवन जीने के लिए मार्गदर्शन देती है ।

उनके धार्मिक प्रवचन 'वचनामृत' के नाम से जाना जाने लगा । लोगों को शराब, अंधविश्वास आदि जैसी बुरी आदतों को छोड़ने के लिए प्रेरित किया और उसमें वे सफल रहे ।

श्री सहजानंद स्वामी ने वर्ष 1830 में देहत्याग किया । 30 वर्षों के दौरान, उन्होंने लोगों, विशेष रूप से किसानों, कृषि मजदूरों और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों के धार्मिक और सामाजिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए । उनकी शिक्षा ने हजारों को आकर्षित किया, उनकी संख्या में वृद्धि होती गई और संप्रदाय का धीरे-धीरे विस्तार हुआ ।

हिंदू धर्म बहुत प्राचीन है । कोई नहीं जानता कि यह कब शुरू हुआ, शायद 5000 साल पहले या उससे भी आगे । ऐसे कई देवता हैं जिनकी लोग पूजा करते हैं, लेकिन तीन मुख्य देवता है : ब्रह्मा - निर्माता, विष्णु - रक्षक और शिव - संहारक ।

कृष्ण, विष्णु के अवतार, हिंदू देवताओं में सबसे प्रचलित हैं । पूरे देश में उनकी पूजा की जाती है और उनके मंदिर इस विशाल भूमि के कोने-कोने में हैं । भक्तों का मानना है कि जब भी समाज में दुष्टता अधिक हो जाती है, विष्णु इस धरती पर बुराई से लड़ने के लिए जन्म लेते हैं । यही है अवतारों की कहानी । राम और कृष्ण उन अवतारों में से हैं ।

सहजानंद स्वामी की कहानी गुजरात में 18वीं शताब्दी के अंतिम तिमाही में शुरू हुई, जब कृष्ण पूजा कुछ लोगों का विशेषाधिकार था और आम लोगों को मंदिरों में प्रवेश करने में कठिनाई होती थी । उन्होंने पूरे गुजरात में मंदिरों का निर्माण करवाया और उन्हें जनता के लिए खोल दिए । इस लिए वे भगवान के अवतार या भगवान स्वामिनारायण

के रूप में जाना जाने लगे । अपने जीवनकाल में, उनके भक्तों द्वारा वे भगवान के रूप में पूजे जाते थे ।

49 वर्ष की आयु में जब उनका निधन हुआ, तब तक उन्होंने महान धार्मिक सामाजिक सुधारक की ख्याति अर्जित कर ली थी ।

यह माना जाता है कि, उनकी आध्यात्मिक उपस्थिति से भगवान स्वामिनारायण गुरुओं और उत्तराधिकारीयो के माध्यम से ऊर्जा और आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करना जारी रखते हैं । उत्तराधिकारीयों में पहले गुरु उनके भक्त्त, गुणातीतानंद स्वामी (1785–1867), अक्षरब्रह्म की अभिव्यक्ति थे । उनके बाद भगतजी महाराज (1829–1897) आए । उनके बाद शास्त्रीजी महाराज (1865–1951) ने अक्षर और पुरुषोत्तम के दर्शन की स्थापना कर धार्मिक उद्देश्य को आगे बढ़ाया । भगवान स्वामिनारायण की शिक्षा के अनुरूप, शास्त्रीजी महाराज ने भगवान स्वामिनारायण की पूजा को पुरुषोत्तम के रूप में और गुणातीतानंद स्वामी को अक्षर ब्रह्म के रूप में प्रतिष्ठित किए । उन्होंने पांच शानदार मंदिरों का निर्माण किया और अपने निष्ठावंतभक्त के साथ भगवान की पूजा की स्थापना की । उन्होंने 1907में बोचासणवासी श्री अक्षर पुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था (BAPS),एक सामाजिक–आध्यात्मिक संगठन की स्थापना की ।

चौथे आध्यात्मिक गुरु योगीजी महाराज (1891–1971)थे, जिनके कार्यों ने भगवान स्वामिनारायण के संदेश को महासागरों के पार पूर्वी अफ्रिका और इंग्लैंड तक पहुंचाया । 1971 में प्रमुख स्वामी महाराज के सुरक्षित हाथों में धर्म की बागडोर रखने के बाद वे ब्रह्मलीन हुए । उनके बाद महंत स्वामी महाराज द्वारा उनका अनुसरण किया गया ।

भगवान स्वामीनारायण एवं संत परंपरा

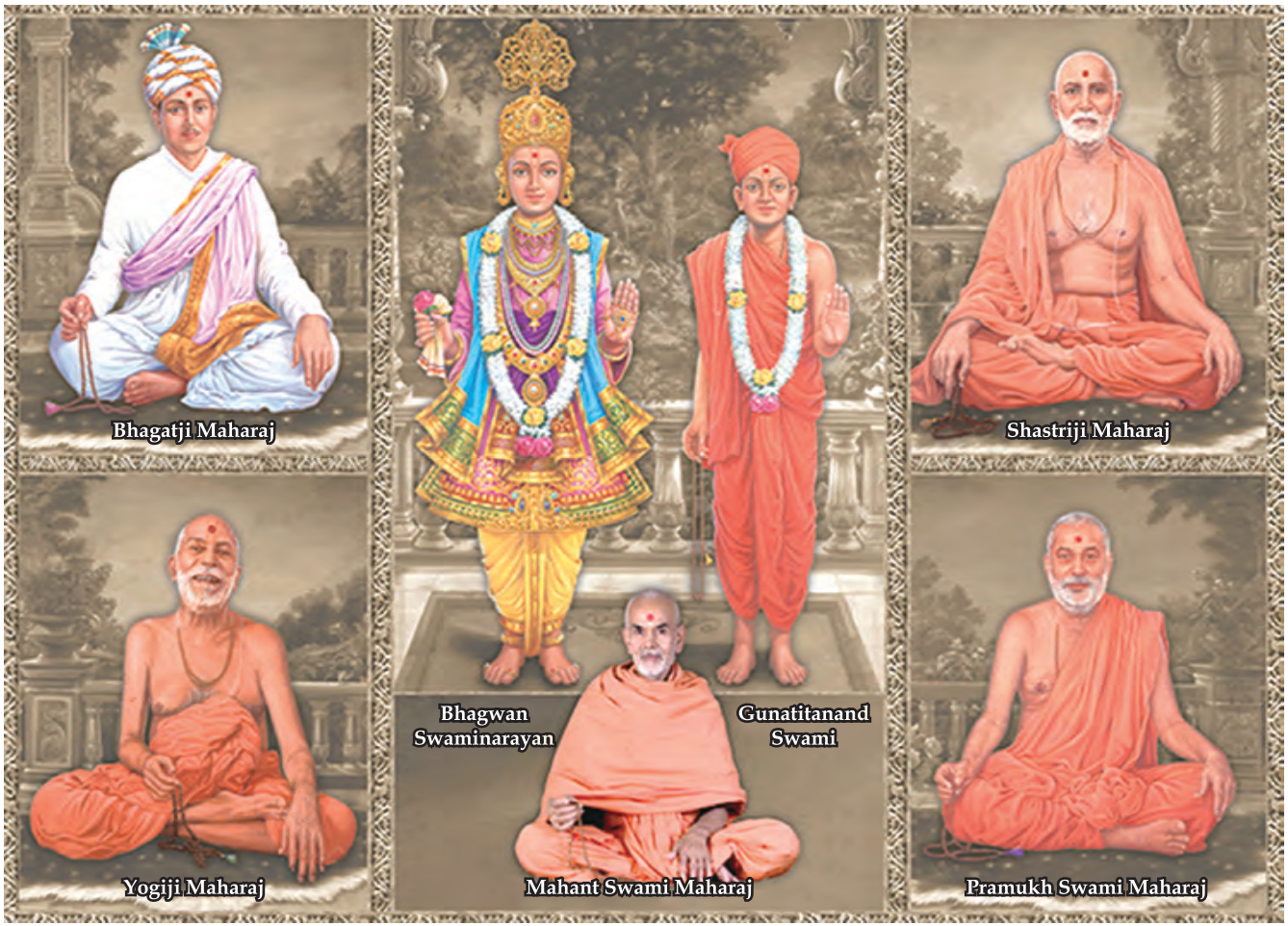

गुरु परंपरा

महंत स्वामी महाराज के साथ प्रमुख स्वामी महाराज

भगवान स्वामिनारायण सर्वव्यापी हैं और उनके 'स्पंदन' आज भी जारी है । इस स्पंदन के माध्यम से उनके 'संत' सहयोगियों के लिए उन्होंने अपनी विरासत छोड़ी है । यह 'स्पंदन' हर पल हमेशा की तरह जारी है । गुणातीतानंद स्वामी पहले उत्तराधिकारी थे, उसके बाद भगतजी महाराज फिर प्रागजी भगत, बाद में शास्त्रीजी महाराज उत्तराधिकारी हुए जिन्होंने BAPS की शुरुआत की - (बोचासणवासी अक्षरपरुषोत्तम संस्था), उसके बाद योगीजी महाराज, प्रमुख स्वामी महाराज और वर्तमान मार्गदर्शक प्रमुख महंत स्वामी महाराज हैं । यह गुरु परंपरा भगवान स्वामिनारायण के स्पंदन को जारी रखे हुए हैं ।

अक्षरब्रह्म श्री गुणातीतनंद स्वामी (ब्लीस (Bliss) - अक्टूबर - 2010)

गुणातीतानंद स्वामी

गुणातीतानंद स्वामी महाराज का जन्म 28 सितम्बर, 1784 को 'भद्रा' गांव में हुआ था । उनका पहला नाम मालाजी था । उनके पिता भोलानाथी थे और मां साकरबा । जब वे 25वर्ष के थे -वर्ष 1809 में (संवत) 1866 नडियाद में भगवान स्वामिनारायण-सहजानंद स्वामीने उन्हें दीक्षा दी और उनका नाम रखा 'गुणातीतानंद'।

भगवान स्वामिनारायण ने उनका परिचय यह कहकर दिया था कि वह हमारे साथ ''अक्षरधाम'' से आए हैं और ''अक्षर ब्रह्म'' हैं' ।

1811 (संवत 1868) में जब भगवान स्वामिनारायण सारंगपुर आए तब उन्होंने राठौड़ धशाल हाउस में 'होली उत्सव' (त्योहार) में भाग लिया था । तब वे संत कबीर के पद-सद्गुरु घेला वसंत'', समझाते थे। उन्होंने कहा में पुरुषोत्तम नारायण हूं और गुणातीतानंद सद्गुरु हैं ।

पांचाल में फिर से - उन्होंने शिष्यों से कहा-क्या आप जानते हैं कि यह संत कौन है' ? वे हमारा घर अक्षरधाम है ।''

स्वामी श्री गुणातीतानंद ने 'सत्संग सभा' (भक्तों की बैठक) का विस्तार किया और सनातन धर्म के ज्ञान का प्रसार किया । वे महंत के रूप में 40 से अधिक वर्ष जूनागढ़ में रहे । उन्होंने एक संत अखाड़ा की स्थापना की ।

उन्होंने भगवान स्वामिनारायण के बारे में विस्तार से ''स्वामी की बातें'' के रूप में उनका वर्णन किया है ।

स्वामी श्री गुणातीतानंद कहते हैं, ''एक बार महाराज ने मुझे मंडल-समूह स्थापित करने के लिए कहा था'' हम अधिकतम -10-100-200 साधु रख सकते हैं - लेकिन अगर हम भक्तों का समूह बनाए और उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान दें, तो प्रसार तेज हो सकता है । हमने उनकी बात मानी और भक्तों सत्संगीओ के समूह बनाए । हमारा धर्म का प्रसार कार्य अभूतपूर्व रूप से फैल गया ।

साधु ईश्वरचरणदास कहते हैं गुणातीतानंद स्वामी अद्वितीय स्थान रखते हैं वे भगवान स्वामिनारायण के पांच सौ परमहंसों में से है । गुणातीतानंद स्वामी का जीवन शुद्ध देवत्व का मूर्त स्वरूप हैं । एक आदर्श साधु और गुरु के रूप में वे पूजनीय है । वे इस धरती पर भगवान स्वामिनारायण की सर्वोच्चता प्रकट करने और फैलाने वाले पहले व्यक्ति थे । गुणातीतानंद स्वामी का जीवन इस बात की पुष्टि करता है कि भगवान स्वामिनारायण हमेशा प्रकट होते हैं, अक्षरब्रह्म के माध्यम से पृथ्वी पर साक्षात ईश्वर एक साधु के माध्यम से 'मुक्ति' और 'जीवन' का द्वारा खुला रखता है । ईश्वरचरणदास आगे कहते हैं, भगवान

स्वामिनारायणने 'वचनामृत' में खुलासा किया है कि जब भगवान 'जीवो को 'मुक्ति' देने के उद्देश्य से अवतार लेते हैं तो हमेशा अक्षरधाम के साथ होते हैं' । इस के अनुसार, भगवान स्वामिनारायण गुणातीतानंद स्वामी को अपने अक्षरधाम के रूप में लाएं।

स्वामी गुणातीतानंद तारीख 11 अक्टूबर, 1887 को गोंडल में अपने स्वर्गीय निवास –अक्षरगमन के लिए रवाना हुए । उन्हीं की स्मृति में 'अक्षर देरी' की रचना की गई है ।

योगीजी महाराज ''अक्षर देरी'' को कल्पवृक्ष कहते थे । जो कोई भी दर्शन– महापूजा और प्रदक्षिणा करेगा – उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी करेंगे ।

हाल ही में 20 जनवरी, 2018 को महंत स्वामीकी उपस्थिति में BAPS द्वारा ''अक्षर देरी'' के 150 साल का उत्सव मनाया गया ।

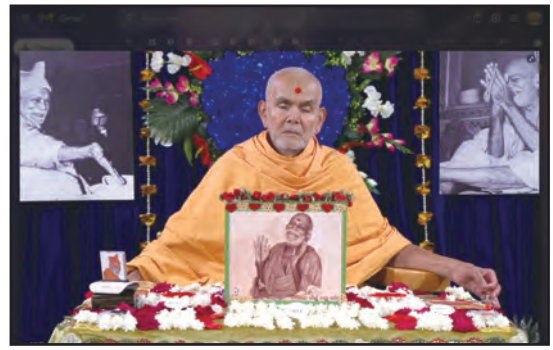

भगतजी महाराज

Bhagatji Maharaj

भगतजी महाराज का जन्म संवत 1885 - दिनांक 20-03-1829 को महुवा-भावनगर में हुआ था । उनका नाम प्रागजी था । उनके पिता - गोविंदभाई एक दर्जी थे । माता मलूबा दयावान और धार्मिक थी । मातापिता ने प्रागजी को उसी के अनुसार पाला था ।

श्री भगतजी महारज सेवाभावी व्यक्ति थे । उन्हें लोगों की मदद और उनकी सेवा करना पसंद था । वे लगभग पूरे दिन और रात में भी कम निंद के साथ मंदिर की देखभाल करते थे और सत्संगीओमें काफी चहिते थे। वे हमेशा सलाह और समर्थन के लिए उनके पास जाते थे ।

भगवान स्वामिनारायण के संदेश के विस्तार में प्रागजी भगत का उल्लेखनीय स्थान है । गुणातीतानंद स्वामी ने प्रागजी भगत को गुजरात के भीतर और बाहर संप्रदाय के विस्तार का समग्र कार्यभार सौंपा था । इस कार्य में शास्त्रीजी महाराज ने उनके साथ बहुत निकटता से काम किया ।

श्री भगतजी महाराज का दिनांक 7-11-1897 के दिन धामगमन हुआ । उनके जन्म स्थान महुवा में पू. प्रमुख स्वामी महाराजने एक भव्य मंदिर बनवाया है और उनके अग्निसंस्कार स्थान पर उनका समाधि स्थान बनाया गया है ।

शास्त्रीजी महाराज

शास्त्रीजी महाराज का जन्म साल 31/01/1864 में खेड़ा जिला के महेणाव में हुआ था । उनके पिता धोरीभाई और माता हेताबहेन (पाटीदार कुटुंब) धार्मिक प्रकृति के थे । और उन्होंने शास्त्रीजी महाराज को सांस्कृतिक मूल्य समझाएं । बचपन में वे डूंगरभाई के नाम से जाने जाते थे । बचपन से उनको सेवा करनी पसंद थी और गांव में सब की सहायता करते थे । गांव के लोग उनको पसंद करते थे । वे लोकप्रिय थे और 'डूंगर भगत' कहलाते थे । उसने महेणव के प्राथमिक विद्यालय में शिक्षा ली । वे वाक्पटु और प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे ।

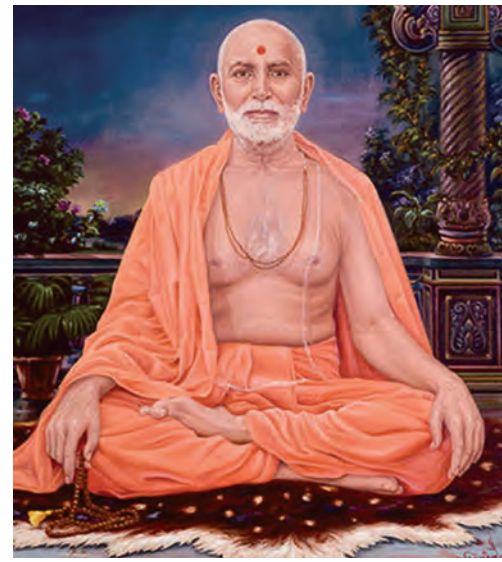

Shashtriji Maharaj

दीक्षा और संसार का त्याग

बचपन से ही डूंगरजी मंदिर में रोजाना कुछ घंटे बिताते थे । भक्ति गीत गाते और मंत्रों का जाप करते । उन्होंने पूरा भागवत याद कर लिया था । महावल के पास एक अध्यात्मिक कथाकार थे जो 'कथा' कहते थे और एक बार भागवत कथा के दौरान वे स्वर्गीय निवास के लिए प्रस्थान कर गए । 'डूंगरजी' जो बहुत छोटे थे उन्होंने संपूर्ण भागवत कथा सुनाई

शास्त्रीजी महाराज और प्रमुख स्वामी महाराज

और इस कार्य को पूरा किया । वे संगीत वाद्य यंत्र 'माण' बजाते थे और लोगों को मंत्रमुग्ध कर देते थे । वे माणभट्ट के नाम से जाना जाते थे ।

महान शिल्पकार

डूंगरजी में बचपन से ही उच्च कलादृष्टि थी । 1932 में एक बड़ी इमारत हवेली निर्माणाधीन थी । उन्होंने निर्माण प्रक्रिया का अवलोकन किया और 'हवेली' के डिजाइन को ध्यान से देखा । वे निर्माण के प्रभारी श्री जेठाभाई सुथार के पास गए, और सुझाव दिया कि स्तंभों को स्थानांतरित करने की आवश्यकता है, और बाहर खुले स्थान पर 'गोल-आकार' के प्रवेश द्वारा बनाए, इससे भवन भव्य बनेगा । जेठाभाई सुथार हैरान हो गए और इस सुझाव को तुरंत स्वीकार कर लिया गया ।

इस बच्चे ने आने वाले वर्षों में अक्षर पुरुषोत्तम के पांच भव्य मंदिर बोचासण, सारंगपुर, गोंडल, अटलादरा और गढड़ा में डिजाइन किए । ये सभी शिखरबंध मंदिर पारंपरिक; शिल्प, उत्तम वास्तुकला के उदाहरण थे।

अक्षर पुरुषोत्तम अवधारणा विकास और वड़ताल प्रस्थान

गुणातीतानंद स्वामीजी ने गांव में ''ध्यान समूह'' शुरू किए और भगतजी महाराज ने इसे लोकप्रिय बनाया। वे नियमित रूप से प्रार्थना, कथावाचन और भागवत कथा आदि के दौरान मिलते थे । शास्त्रीजी महाराजजीने इसका ओर विस्तार किया । उनके पास भक्तों की भीड़ उमड़ने लगी । कुछ ईर्ष्यालु साधुओं को भक्तों के बीच उनकी बढ़ती लोकप्रियता पसंद नहीं आई । फिर भी उनकी भक्ति गतिविधियों- अक्षरपुरुषोत्तम संस्कृति का विस्तार हुआ -केवल गांवों में नहीं -लेकिन प्रमुख शहरी केंद्रों ने भी इस तरह के समूह की स्थापना शुरू हो गई । लेकिन इन ईर्ष्यालु साधुओं ने अपमानजनक अवरोध पैदा करना शुरू कर दिया, जबकि आध्यात्मिक ज्ञान में शामिल ईमानदार साधुओं ने इन परेशानकारी गतिविधियों को असहनीय पाया ।

बल्कि हरिभक्त भी शास्त्रीजी महाराज के विरुद्ध इस तरह के दुर्भावना से चिंतित और परेशान थे । विरोधी गुटों ने शास्त्रीजी महाराज के खिलाफ प्रचार करना शुरू कर दिया । कुछ ने उनसे वड़ताल छोड़ने का अनुरोध किया । लेकिन महाराज अनिच्छुक थे । वडोदरा में एक दिन श्री घनश्यामभाई वैद्य ने भक्तों की सभा बुलाई। इस पर एक घंटे तक विचार-विमर्श किया और अंत में यह तय किया गया कि शास्त्रीजी महाराज वड़ताल में बने रहेंगे । वे कोठारी गोवर्धनभाई से मिले और बदलाव की मांग की । उन्होंने सहमति व्यक्त की और कहा कि ''रुदल मंदिर की आवश्यकता है'' उसे पूरा करने के लिए और इसलिए शास्त्रीजी महाराज से अनुरोध किया जा सकता है कि वे बोचासण जाए और

संबंधित कार्य पूरा करें । लेकिन शास्त्रीजी महाराज अभी भी नहीं माने – उस समय राज कोट के श्री कृष्णजी अदा ने 'शिखापात्री'का उधार ले के कहा । व्यक्ति को उस स्थान को छोड़ देना चाहिए जो परेशानी से ग्रस्त है और जीवन के लिए खतरा है और जहां मन की शांति हो सकती है वहां रहना चाहिए'' ।

अंत में इन सभी सविनय समजावट के कारण शास्त्रीजी महाराज अन्य छह साधुओं के साथ – स्वामी नारायणदास, निरंजनदास और अन्य 1905 में संवत वर्ष 1962 कार्तिक वद 1 के दिन बोचासण के लिए वड़ताल से चले गए ।

बोचासणवासी अक्षर पुरुषोत्तम संस्था (BAPS)

वड़ताल – मंदिर की 'गादी' पर ऐसे प्रशासक थे जिन्हें शास्त्रीजी महाराज की 'अक्षरपुरुषोत्तम' की अवधारणा और इसकी पवित्र स्थिति, इसकी लोकप्रियता और वे जो इस आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार कर रहे थे, पसंद नहीं थे । वड़ताल से बाहर जाने के बाद – शास्त्रीजी महाराज ने बोचासण को अध्यात्म के केंद्र के रूप में विकसित किया और वर्ष 1907 में उन्होंने इसके विस्तार के लिए एक नया संगठन बनाया जिसे उन्होंने 'बोचासणवासी अक्षर पुरुषोत्तम संस्था –बीएपीएस' नाम दिया । उनका ध्यान आध्यात्मिक ज्ञान और अक्षरपुरुषोत्तम की अवधारणा को बढ़ावा देना था । उनके काफी अनुयायी थे और भक्तों ने उन्हें और अधिक मंदिर स्थापित करने के लिए भी कहा था ताकि बड़ी संख्या में लोगों को लाभ मिल सके । उन्होंने एक ओर सभी के सहयोग से इसकी शुरुआत करने को कहा – और सबसे महत्वपूर्ण सभी साधुओं–हरिभक्तों ने इस प्रयास में योगदान दिया ।

- पहला मंदिर बोचासण में वर्ष 1907 में एक भव्य 'मूर्ति प्रतिष्ठान समारोह' के साथ स्थापित किया गया था ।
- दूसरा मंदिर 1916 में सारंगपुर–अहमदाबाद जिले में स्थापित किया गया था जो साधुओं और युवाओं के लिए शिक्षा–प्रशिक्षण का केंद्र बन गया ।
- तीसरा मंदिर 1934 में गोंडल में स्थापित किया गया था ।
- चौथा मंदिर वडोदरा के बाहरी इलाके में अटलादरा में वर्ष 1945 में स्थापित किया गया था ।
- पांचवा मंदिर 1951 में घेला नदी के तट पर गढडा में स्थापित किया गया था ।

गढडा मंदिर बन रहा था तब उसकी तबियत ठीक नहीं थी । महाराजश्री मूर्ति प्रतिष्ठान समारोह में स्वयं भाग लेना चाहते थे लेकिन उनके स्वास्थ्यने अनुमति नहीं दी और अटलादरा से वह उनकी पसंदगी की जगह सारंगपुर चले गए तथा दैनिक आरती में

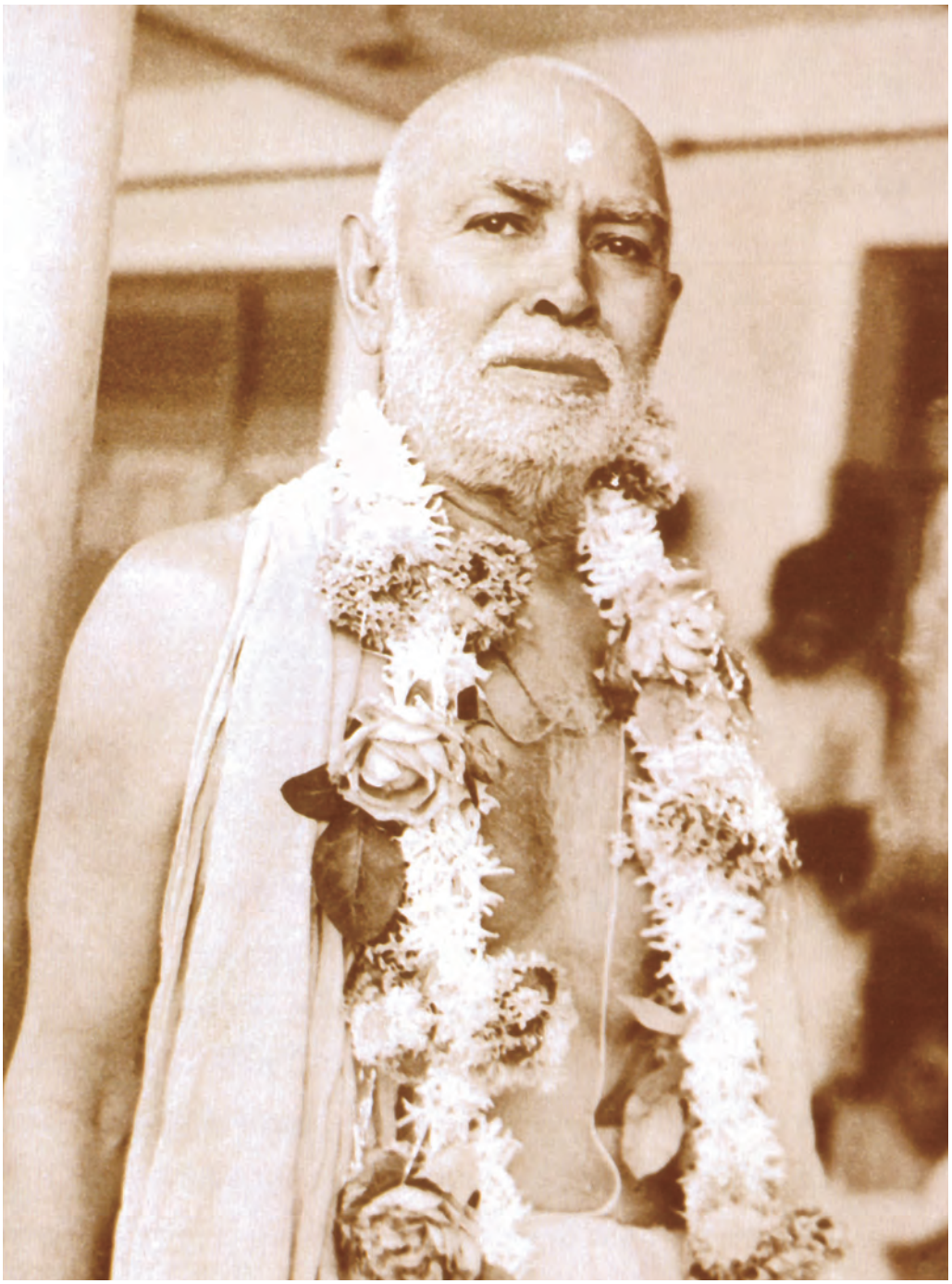

शास्त्रीजी महाराज

भाग लेना शुरू कर दिया और हरिभक्तों और साधुओं से नियमित रूप से सारंगपुर में मुलाकात की ।हर कोई उसके ठीक होने की प्रार्थना कर रहा था, लेकिन प्रकृति की शक्ति प्रबल हो गई और वह स्वर्गीय निवास – अक्षरधाम के लिए विदा हुए । योगीजी महाराज मुंबई में थे और तुरंत सारंगपुर पहुंचे । श्री गुलजारीलाल नंदा दिल्ली से आए थे । अंतिम विधि पवित्र संस्कारों के साथ की गई ।

शास्त्रीजी की इच्छा थी कि उनके खराब स्वास्थ्य या प्रस्थान से गढ़डा मंदिर के उद्घाटन में देरी न हो । यह कार्य उन्होंने पहले ही योगीजी महाराज को सौंप दिया था । योगीजी महाराज ने अपनी इच्छा के अनुसार यह किया और महाराजश्री को याद करके बैशाख सूद–10; 1951 के दिन 'मूर्ति प्रतिष्ठा' की गई ।

यज्ञ स्वरुप शास्त्रीजी महाराज सिद्ध पुरुष थे । उन्होंने सनातन धर्म के प्रसार और 'शिक्षापात्री' में भगवान स्वामिनारायण द्वारा निर्धारित सिद्धांतों को अपनाने के लिए प्रतिकूल परिस्थितियां और ईर्ष्यालु साधुओं और उनके खिलाफ प्रचार करने वाले लोगों के विरोध के बावजूद भी जन संचार प्रणाली विकसित की ।

वेद दृढ़ और 'निर्भय' थे । तथा खुद को 'बैल'– अक्षर पुरुषोत्तम का बैल कहते थे । और संप्रदाय के सिद्धांतों के लिए कुछ भी बलिदान करने को तैयार थे । जनसंचार के माध्यम से अपने प्रयास के एक हिस्से के रूप में उन्होंने आध्यात्मिक अनुशासन और विचारों पर ध्यान केंद्रित किया । शास्त्रीजी महाराज ने पूरे गुजरात और बाहर मंदिरों की एक श्रृंखला स्थापित की ।

उन्होंने गुजरात, भारत और विदेशों में समूह बैठकों के माध्यम से सामुदायिक केंद्रों, मंदिरों की स्थापना और आध्यात्मिकता के प्रसार के लिए बीएपीएस बनाया था ।

BAPS ने व्यवस्थित तरीके से बुनियादी ढांचे का निर्माण किया और आत्मनिर्भर आधार पर एक आध्यात्मिक प्रसार प्रबंधन प्रणाली बनाई – जिसमें साधु और हरिभक्त मंदिर निर्माण, इसके रखरखाव, जाति और पंथ निरपेक्ष एक दूसरे की मदद और सेवा करने के लिए स्वैच्छिक योगदान के लिए एक साथ आए । और वह सनातन धर्म की एक नई लहर के रूप में फैला ।

उन्होंने बीएपीएस के भीतर नेतृत्व तैयार किया – साधु और हरिभक्त दोनों एवम युवाओं को शामिल किया और प्रशिक्षण केंद्र बनाए और योगीजी महाराज, प्रमुख स्वामी महाराज और महंत स्वामी महाराज को दुनिया भर में उनके द्वारा बनाए गए मार्ग को आगे बढ़ाने के लिए तैयार किए ।

योगीजी महाराज

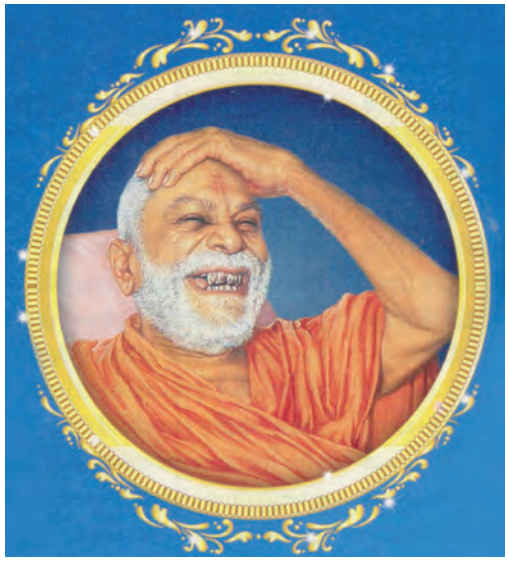

योगीजी महाराज

बालक झिणाभाई का जन्म 23 मई, 1882 को अमरेली जिला के धारी में हुआ था । पिता देवचंदभाई और माता पूरीबा स्वामिनारायण संप्रदाय के अनुयायी थे ।

स्वामिनारायण के साधु जूनागढ़ से अमरेली जाया करते थे । धारी में, एक मंदिर था जिसकी देखभाल हरिभक्त मोहनभाई करते थे । मोहनभाई का स्वास्थ्य अच्छा नहीं था । इस क्षेत्र के प्रभारी साधु कृष्णचरणदास स्वामी ने वैकल्पिक एक हरिभक्त व्यक्ति की तलाश शुरू की जो इस काम अच्छी तरह कर सके । उन्होंने झिणाभाई को उपयुक्त पाया – जो नियमित रूप से मंदिर जाते थे और 'सेवा' में शामिल रहेते थे और एक समर्पित सरल व्यक्ति थे । उन्होंने, उनसे अनुरोध किया कि वे मंदिर के सभी कामों को अपने हाथों में ले, झिणाभाईने स्वेच्छा से जिम्मेदारी संभाली ।

झिणाभाई में समाज को त्यागकर साधु बनने की इच्छा पैदा हुई । साधु कृष्णचरणदास ने सबसे पहले उनसे माता-पिता की सहमति प्राप्त करने के लिए कहा – जो उन्हें बड़ी मुश्किल से मिली ।

उन्हें साधु कृष्णचरणदास द्वारा 'दीक्षा' दी गई और पार्षद के रूप में उनका नाम झिणा भगत रखा गया।

वर्ष 1911 में जूनागढ़ मंदिर में आचार्य सारि पति प्रसाद द्वारा उन्हें साधु के रूप में दीक्षा दी गई और साधु ज्ञानजीवनदास नाम दिया । बाद में वह योगीजी महाराज कहलाने लगे ।

जल्द ही वे जूनागढ़ में साधुओं, सेवकों और हरिभक्तों के बीच बहुत प्रिय हो गए । इसी बीच 1907 में शास्त्रीजी महाराज ने BAPS की स्थापना की थी । योगीजी महाराज BAPS में शामिल हो गए और गोंडल चले गए वहां नया मंदिर था । उन्होंने गोंडल में स्वामी गुणातीतानंद की स्मृति में 'अक्षर देरी' की स्थापना की । और गोंडल को एक प्रसिद्ध 'यात्राधाम' बनाया ।

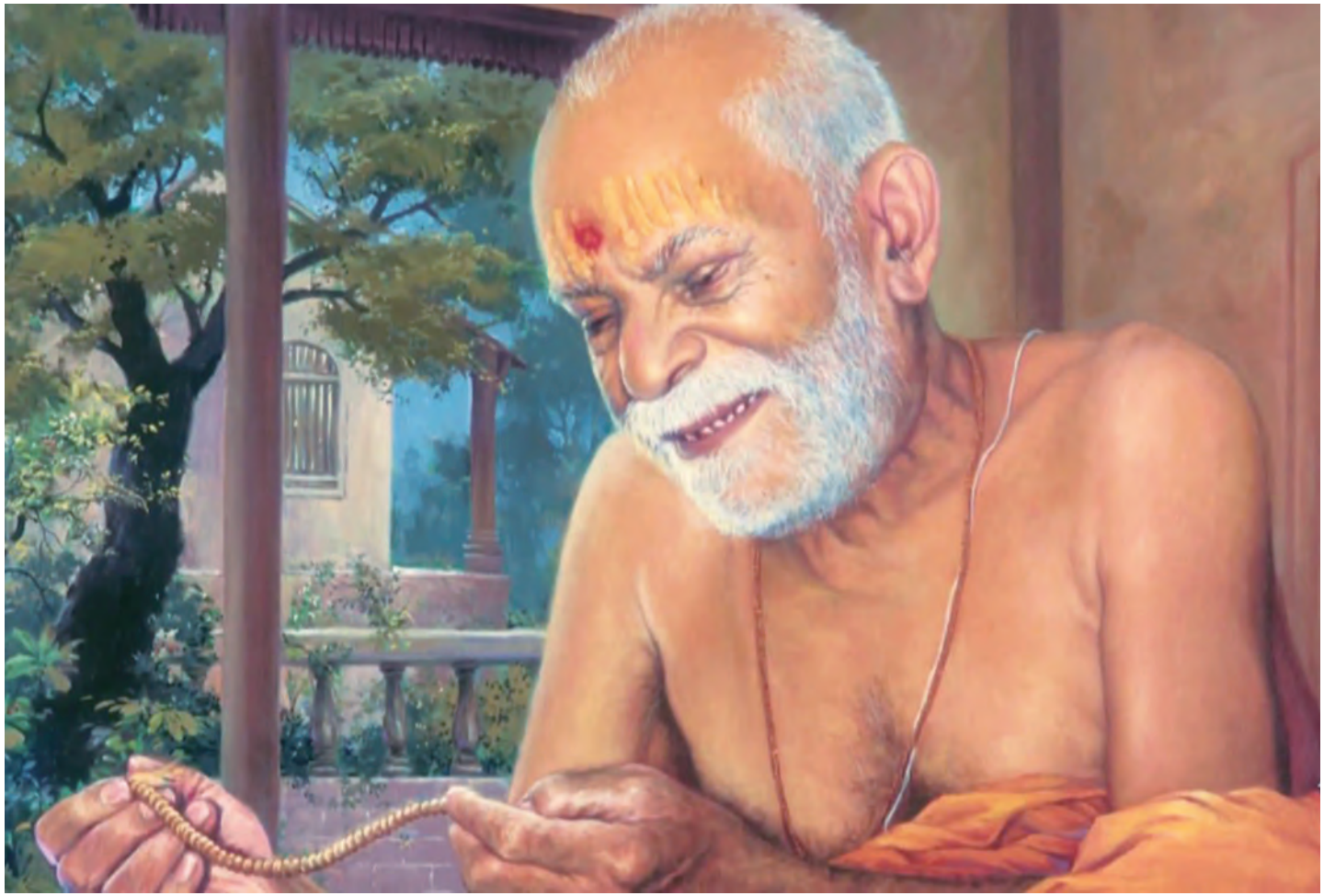

योगीजी महाराज

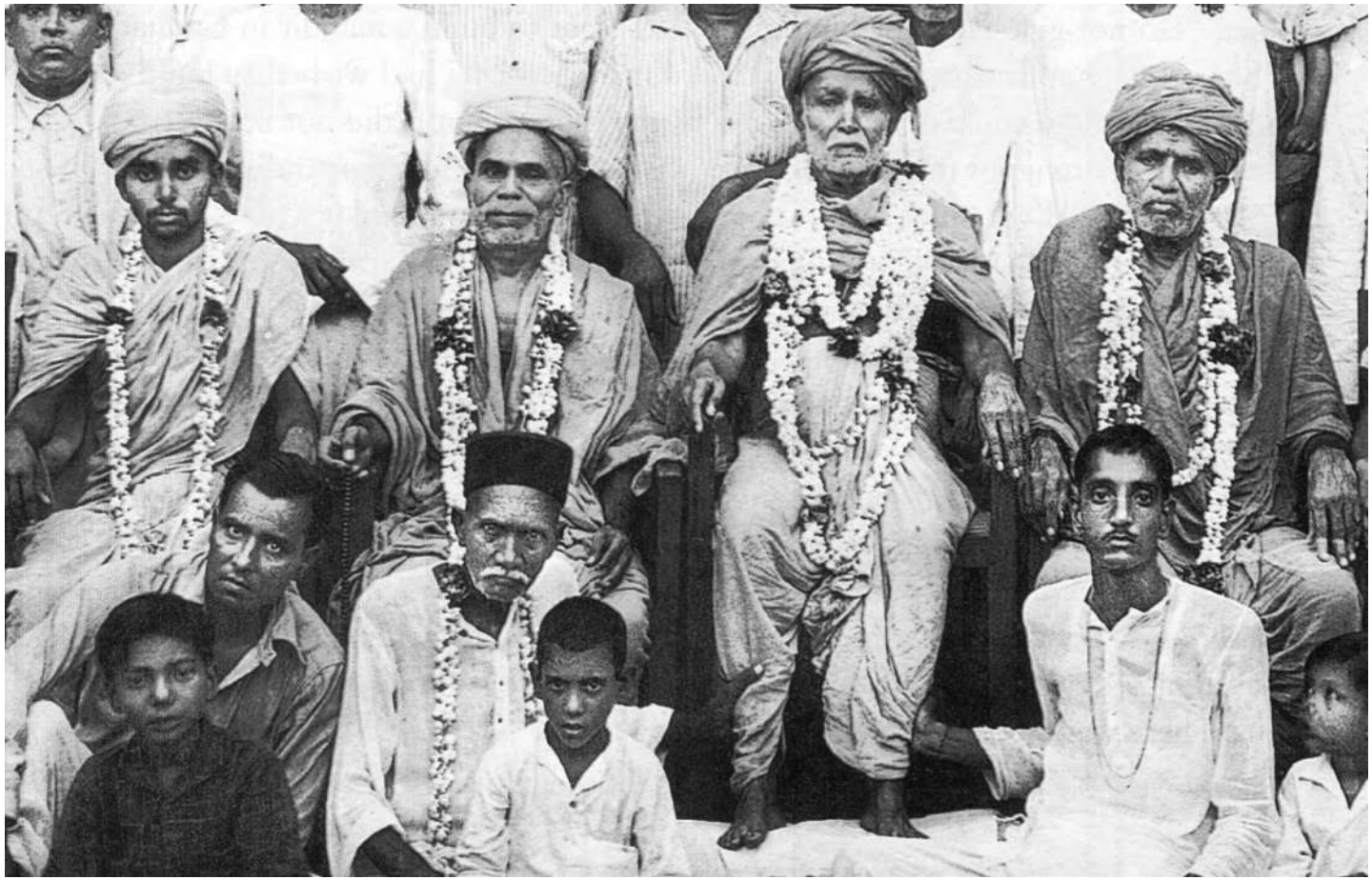

नारायणस्वरुप (प्रमुख स्वामी महाराज) ● शास्त्रीजी महाराज ● योगीजी महाराज ● निर्गुणदास स्वामी

ब्रह्मस्वरूप गुरुओं की दिव्य त्रिमूर्ति ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज (केंद्र), ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज (बाएं), प्रगट ब्रह्मस्वरूप महंत स्वामी महाराज (दाहिने) फोटो : कोलोरामा स्टूडियो, नैरोबी, १९७०

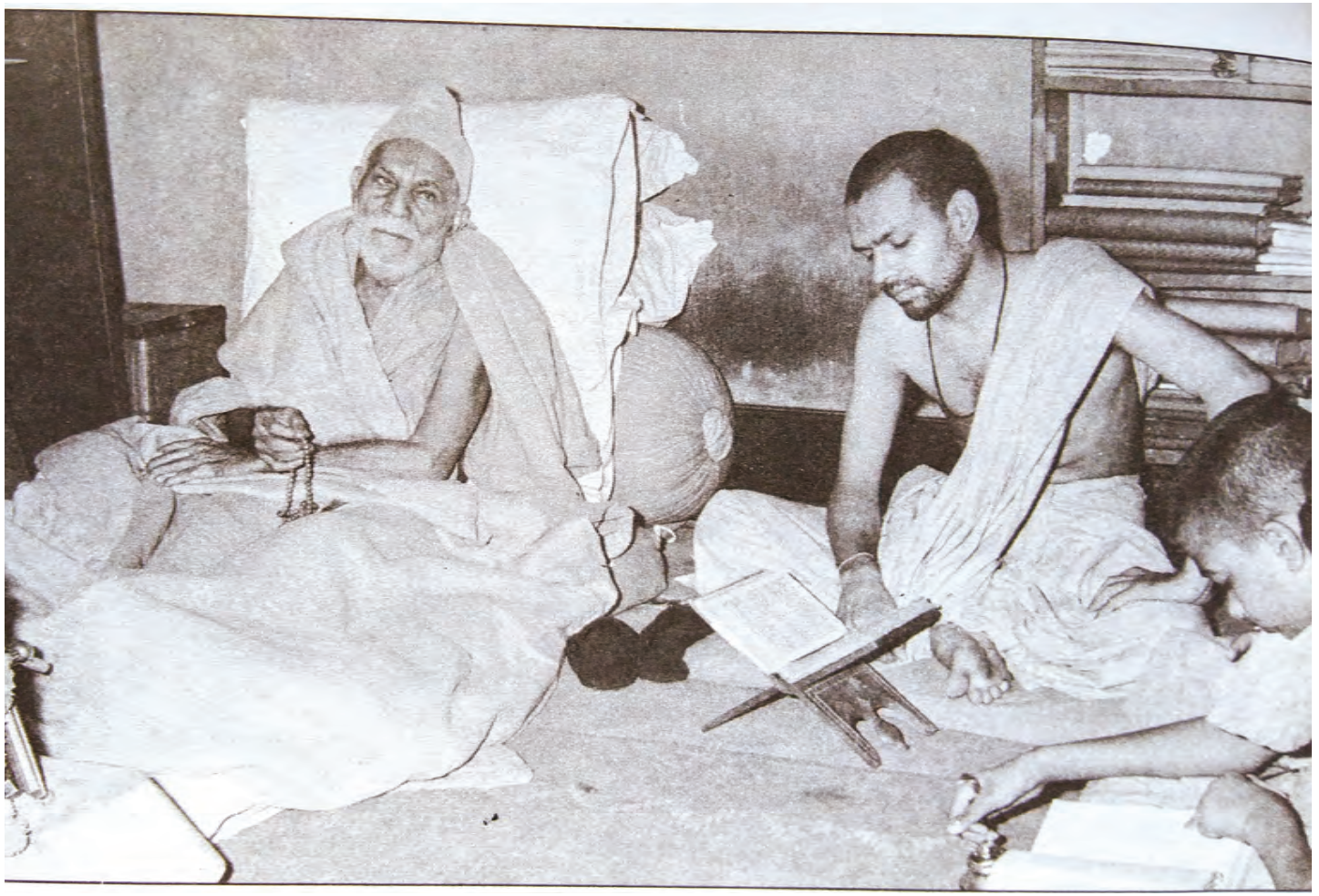

Yogiji Maharaj and Mahant Swami Maharaj

योगीजी महाराजने तीन दिव्य व्रत (संकल्प) विकसित किए । सबसे पहले दुनियाभर में सत्संग । सत्संग के द्वारा उन्होंने 'भगवान' और 'भक्त' के बीच दैवी सम्बन्ध का समर्थन किया । दूसरा हानिकारक कार्य गतिविधियों को कम या समाप्त करना और तीसरा इसके द्वारा अक्षर पुरुषोत्तम संबंध का आध्यात्मिक ज्ञान की वृध्धि ।

योगीजी महाराजने विभिन्न कार्यक्रम और गतिविधियां के माध्यमों से अपनी दिव्य दृष्टि का आध्यात्मिक अनुसंधान में अनुवाद किया ।

- **त्यौहार - धार्मिक उत्सवों का आयोजन :** उत्सवो से, भक्तों के लिए एक दूसरे से और साधुओं से मिलना संभव हुआ । त्यौहार कार्यक्रमों में धार्मिक प्रवचन भी हुए । वरिष्ठ साधुओं ने भक्तों को संबोधित किया और भगवान स्वामिनारायण सिद्धांतों के शिक्षापात्री और भागवत कथा उदाहरण से सुनाई । इन सभी में स्वैच्छिक सेवाएं, एक दूसरे की और यहां तक कि बाहरी लोगों की मदद करना, इत्यादि का प्रसार शामिल हुआ । साल में दो या तीन बार ये आयोजित किए जाते थे ।
- **'रवि सभा' :** ये प्रत्येक रविवार को प्रत्येक केंद्र पर आयोजित किए गए थे इसमें भजन - कीर्तन और कथा - भक्तों और संतों, साधुओं का मिलन और अक्षर पुरुषोत्तम का प्रसार शामिल थे ।
- **सत्संग पत्रिका समाचार पुस्तिका :** संस्थामें संचार - लिखा होना जरूरी माना गया । इस से भक्त अध्ययन और ज्ञान ग्रहण कर सकते हैं - यहां तक कि जो सभा में उपस्थित नहीं हो सकते वे आध्यात्मिक ज्ञान और BAPS की गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं । योगीजी महाराज पोस्ट-कार्ड लिखते थे और उसे मिलने वाले हर पत्र का स्वीकार करके जानकारी प्राप्त करते थे ।
- **युवाओ :** युवा प्रवृत्तिओ का आयोजन महत्वपूर्ण पहल थी जिसमें युवाओं को सक्रियरूपसे शामिल करने का ध्येय थ । योगीजी महाराज की प्राथमिकता भावि पीढ़ी थी । उन्होंने सांस्कृतिक मूल्यों को आत्मसात करने, पवित्र शास्त्रों, मंत्रों को समझने और संस्कृत भाषा पढ़ने, सीखने और सनातन धर्म के सिद्धांत और दैनिक जीवन के एक तरीके के रूप में शिक्षापात्री पढ़ने पर काम किया । उन्होंने प्रशिक्षण कार्यशालाओं की और चर्चा-वार्तालाप प्रतियोगिता की शुरुआत की । और शैक्षिक संगोष्ठियों को बढ़ावा दिया, छात्रों के लिए प्रशिक्षण संस्थान, शैक्षणिक संस्थान और छात्रावास बनवाए । वे हमेशा कहा करते थे युवा मेरा दिल है ।
- योगीजी महाराज चाहते थे कि साधु भी शिक्षित हों । मुंबई में -विनु भगत (महंत स्वामी), रमणभाई (पूज्य डॉक्टर स्वामी), अरुणभाई दवे (ईश्वरचरण स्वामी) आगे

पढ़ रहे थे । अरुणभाई ने एक बार उन्हें पूछा – अगर हमें साधु बनना है तो– शिक्षा खत्म करने के लिए हमें दो साल अतिरिक्त बिताने की आवश्यकता क्यों है ? योगीजी महाराज ने उत्तर दिया– में तुम सभी को स्नातक और शिक्षित देखना चाहता हूं । में सबका शैक्षणिक प्रमाणपत्र देखना चाहता हूं ।

BAPS भारत के बाहर भी फैला । शास्त्रीजी महाराज सनातन धर्म को दुनिया भर में फैलाना चाहते थे। उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि 'अक्षर' पुरुषोत्तम का सिद्धांत हर जगह फैल जाएगा । 1955 में अफ्रीका से इसकी शुरुआत हुई । योगीजी महाराज ने कई अफ्रीकी शहरों का दौरा किया । सबसे पहला मंदिर 'मोम्बासा' – केन्या में वर्ष 1955 में स्थापित किया गया और एक बड़ा ''मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव'' का आयोजन किया गया । योगीजी महाराज ने छ: महीने अफ्रीका में विभिन्न देशों का दौरा किया था ।

उनकी दूसरी यात्रा 1960 में हुई थी और कंपाला, जिंजा और टैट्रो में मंदिरों की स्थापना की गई थी।

इसके बाद उन्होंने इंग्लैंड का दौरा किया और इस्लिंगटन में एक पुराने गिरजाघर में मंदिर की स्थापना की । उन्होंने इंग्लैंड और यूरोप में आध्यात्मिक संदेश के प्रसार का विस्तार किया ।

इस दौरान इसकी तबीयत ठीक नहीं थी और उन्हें दिल के दौरे का सामना करना पड़ा । उन्होंने सभी संतो प्रमुख स्वामी, महंत स्वामी, ईश्वरचरण स्वामी व अन्य को बुलाया । 23 जनवरी, 1971 को उन्हें तीसरा दिल का दौरा पड़ा और ब्रह्मलीन हो गये ।

योगीजी महाराज अक्सर कहते थे कि प्रमुख स्वामी महाराज उनके कामों को आगे बढ़ाएंगे –प्रमुख स्वामी ही मेरा सब कुछ–सर्वांश है ।

प्रमुख स्वामी महाराज

चांसड़, गुजरात राज्य के बड़ौदा शहर के बाहरी इलाके में स्थित एक गांव है । साधुओं और स्वामिनारायण संप्रदाय के लोग वहां नियमित रूप से जाते थे । भगवान स्वामिनारायण के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी गुणातीतानंद स्वामी, भगतजी महाराज, शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज इसमें शामिल रहते थे । इन ग्रामीण यात्राओं के परिणामस्वरूप कई भक्त बन गए ।

इस गांव में एक साधारण किसान श्री मोतीभाई पटेल रहते थे । वे भगवान स्वामिनारायण के पक्के अनुयायी थे । वह और उनकी पत्नी दीवाणीबेन सरल स्वभाव के थे । शांतिलाल उनका चौथा पुत्र था । उनका जन्म 7 दिसंबर, 1921 चांसड़ में हुआ था । पालने में ही शास्त्रीजी महाराज ने उन्हें आशीर्वाद कहा कि वह बालक हमारा है उसे भविष्य में हमारे लिए प्रदान करना ।

मंगलवार 7 नवंबर, 1931 को मोतीभाई को शास्त्रीजी महाराज से एक पत्र मिला । शांतिलाल को अठारह वर्ष पूरे होने वाले थे । संदेश में कहा गया है शांतिलाल का साधु बनने के लिए बोचासण (स्वामिनारायण संप्रदाय का केंद्र) आने का समय आ गया है । उसके माता-पिता उसे आशीर्वाद दें ।

दीक्षा :

शांतिलालने घनश्याम स्वामी के मार्गदर्शन में एक साधु के रूप में अपना प्रशिक्षण लिया । वे एक गांव से दूसरे गांव ज्यादातर पैदल ही जाते थे । जैसे एक साधु बनने के लिए वे कितना दृढ़ थे वह जानने के लिए परिक्षा दे रहे हैं । शंकर भगत और निर्गुण स्वामी उनकी देखभाल करते थे । वे अंततः बोचासण में बस गए ।

स्वामिनारायण परंपरा में भगत संक्रमण बीच का चरण है । भगत को सफेद धोती पहननी होती है और लकड़ी की थाली से खाना पड़ता है । उसे व्रत और ब्रूमचर्य का भी पालन करना होता है । प्रशिक्षण कठिन था। संक्रमण काल में दिन-ब-दिन कठोर प्रशिक्षण शामिल था । शास्त्रीजी महाराज के संतुष्ट होने तक शांति भगत ने कड़ी मेहनत की और शास्त्रों को सीखा । उन्हें गोंडल ले जाया गया, जहां उन्हें एक और महान आध्यात्मिक नेता श्री योगीजी महाराज से मिलना था । शास्त्रीजी महाराजने उन्हें पोष सुद, विक्रम संवत 1996, बुधवार 10 जनवरी,1940. को साधु के रूप में दीक्षा दी । उन्होंने अक्षर देरी में महापूजा ली । योगीजी महाराज ने उन्हें आशीर्वाद दिया और कहा वे ''महान'' साधु बनेंगे । शास्त्रीजी महाराज ने कहा, ''आइए हम उसका नाम नारायणस्वरूप रखें । मैं चाहता हूं कि यह पढ़े और विद्वान बने । मैं उन्हें एक महान और शक्तिशाली विद्वान बनाना चाहता

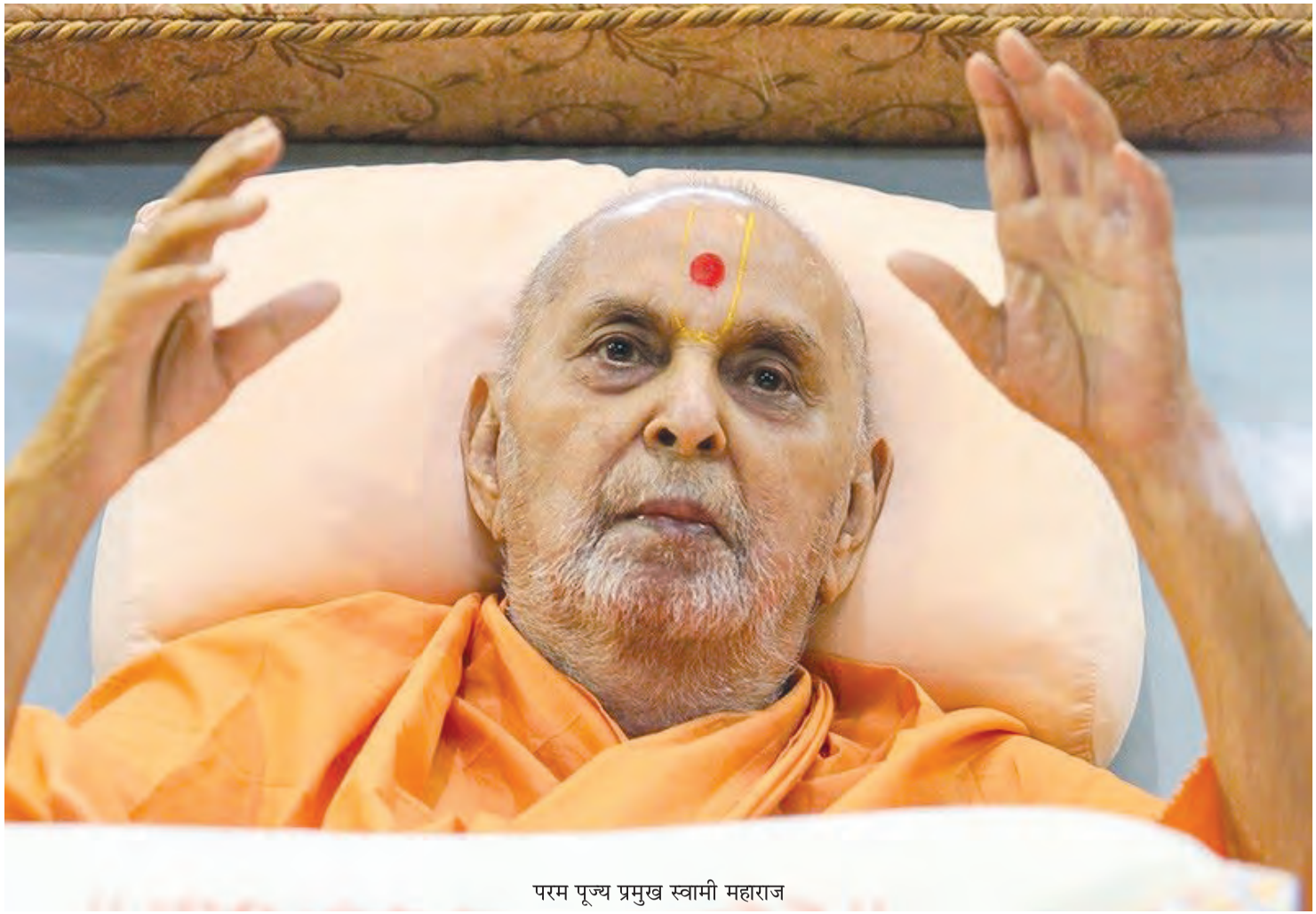

परम पूज्य प्रमुख स्वामी महाराज

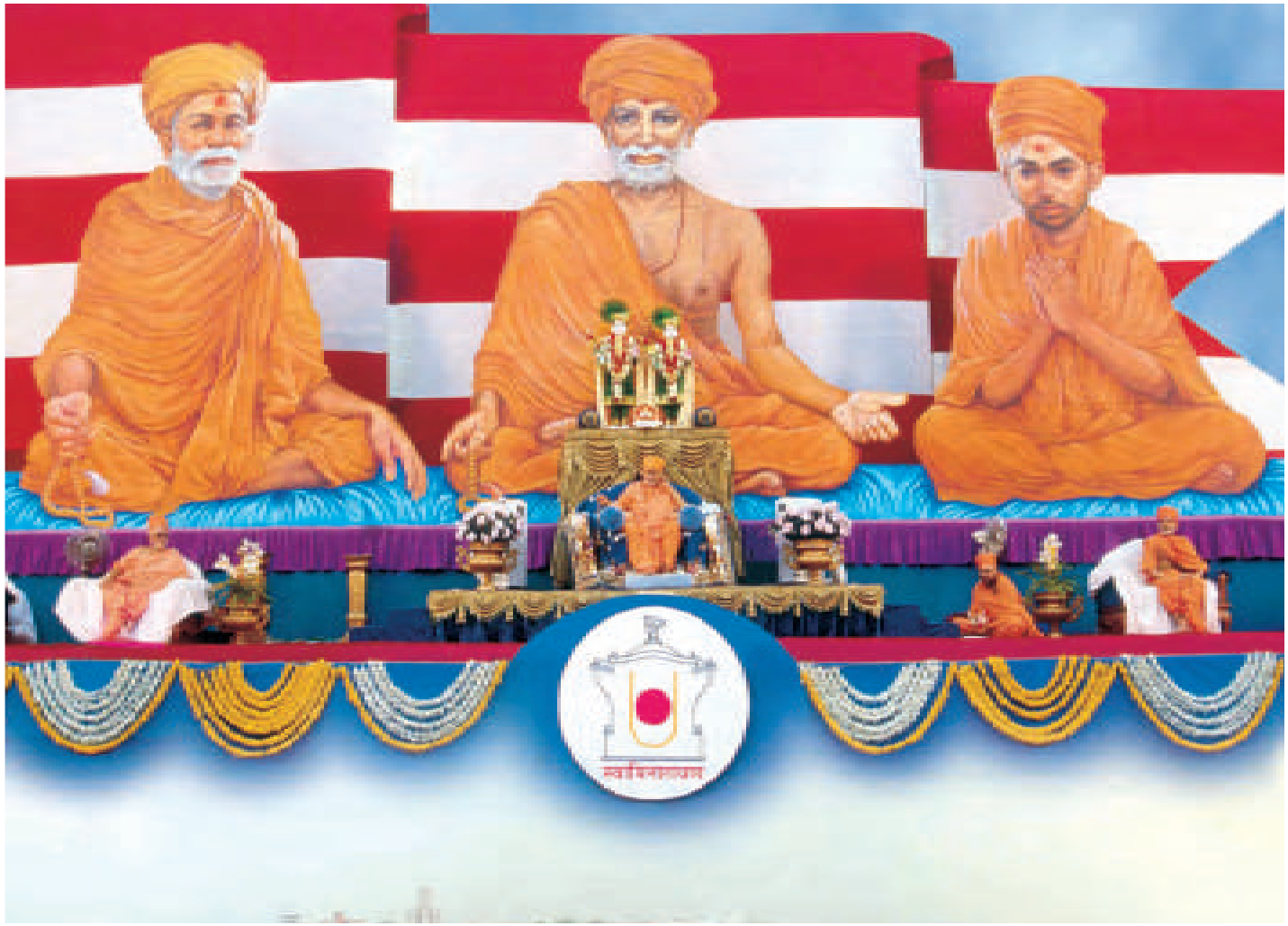

अहमदाबाद में प्रमुख वर्णी दिवस समारोह

हूं । उस समय उनकी उम्र 19 साल थी ।

वह शास्त्रीजी महाराज के प्रिय थे । जिन्होंने उन्हें एक महान आध्यात्मिक नेता के रूप में देखा । उन्होंने उन्हें बोचासणवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था के प्रमुख स्वामी (अध्यक्ष) के रूप में कार्यभार संभालने के लिए कहा और कहा ''में चाहता हूं कि आप हर मामले में उत्कृष्टता प्राप्त करें । इस तरह पूरे सत्संग को लाभ होगा । आपको मुझे और पूरे सत्संग को खुश करना है । इससे मेरे मन को शांति मिलेगी'' ।

रविवार, मई 24- 1951 को उन्हें प्रमुख स्वामी के रूप में उच्चारित किया गया । तब वे 40 वर्ष के थे । अधिष्ठापन समारोह साधारण और सरल तरीके से आंबली वाली पोल, शाहपुर, अहमदाबाद के छोटे से भूतल के कमरे में हुआ ।

जनवरी 1971 में योगीजी महाराज के जाने के बाद प्रमुख स्वामी उनके उत्तराधिकारी बने । प्रमुख स्वामी महाराज ने खुद को एक आदर्श आध्यात्मिक गुरु के रूप में ढाला । 55 वर्षों में, उनके सक्षम नेतृत्व और मार्गदर्शन में BAPS का प्रचंड विकास और सीमाओं का विस्तार हुआ । कुछ सौभक्तों और मुट्ठी भर साधुओं वाला एक छोटा सा संस्थान अब एक गतिशील विश्वव्यापी संगठन बन गया है, जिसमें 700 से अधिक मंदिर, 9000 सत्संग केंद्र, 900 साधु और लाखों अनुयायी पांच महाद्वीपों में फैले हुए हैं ।

55 वर्षों की अवधि में, स्वामीश्री ने पूरे भारत में और दुनिया में 54 से अधिक देशों में हिंदू धर्म और स्वामिनारायण संप्रदाय का प्रसार किया । यह एक प्रचंड कायापलट है । वे गैर-हिंदू स्थानीय आबादी के बीच हिंदू धार्मिक नेता के रूप में पहचाने जाने लगे । उनके प्रेरक प्रयासों से भारत की प्राचीन उपलब्धियां, योगदान और अध्यात्म के क्षेत्र में और इसके सहिष्णु दर्शन को दुनिया भर में मान्यता मिली है । ऐसा बहुत लंबे समय के बाद, कई शताब्दियों के बाद हुआ है ।

प्रमुख स्वामी महाराज का प्रमुख योगदान उनके अनुयायियों के बीच स्वैच्छिक सेवा की भावना पैदा करने में है । यह कारसेवा जैसे धार्मिक उद्देश्यों तक सीमित नहीं है । अपने भक्तों को उन्होंने स्वयंसेवकों के रूप में ढाला, जिन्होंने न केवल नकद और वस्तु के रूप में योगदान दिया, बल्कि इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्होंने अपना खाली समय समाज सेवा के लिए उपलब्ध करवाया । उन्हें प्राकृतिक या मानव निर्मित आपदाओं से प्रभावित लोगों की मदद करने में भाग लेने के लिए प्रेरित किया । और उन्हें बच्चों, महिलाओं, आदिवासी परिवारों और समाज के कमजोर वर्गों के लिए काम करने के लिए उत्साहित किया ।

प्रमुख स्वामी महाराज लगातार पूरी दुनिया में शांति का संदेश,'ओम शांति-शांति-

Pramukh Swami Maharaj with Sadgurus

शांति' की सच्ची भावना फैलाने में लगे रहे । 24 सितंबर, 2002 को अक्षरधाम गांधीनगर पर हुए आतंकवादी हमले, जिसमें एक साधु सहित 33 लोग मारे गए थे और 77 घायल हुए थे । ऐसी सबसे उत्तेजक और कठिन परिस्थितियों में भी, वे शांत रहें और सभी को शांत रहने और सभी के लिए प्रार्थना करने के लिए कहा ।

वे पश्चिमी सभ्यता से उत्पन्न खतरे और देश और विदेशों में बच्चों पर इसके संभवित दुष्प्रभाव से अवगत थे । जीवन के बुनियादी मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए सभी केंद्रों पर बड़ों के लिए सत्संग और बाल मंच, युवा मंच और महिला गतिविधियों को चलाया जाता है । बच्चों का मंच, सबसे महत्वपूर्ण गतिविधि माता-पिता के लिए सम्मान पैदा करती है और जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों को बढ़ावा देती है ।

जब मैं मई 2015 में अपने बेटों व्रजेश और मितुल और हमारे पोते ओम और अर्जुन के साथ, परम पूज्य प्रमुख स्वामी महाराज 'बापा' को श्रद्धांजलि देने के लिए सारंगपुर गया, तो हमने सबसे पहले पूज्य कोठारी स्वामी -ज्ञानेश्वर स्वामी का आशीर्वाद लिया तब हम उनके साथ हमको साथ देने के लिए हमारे साथ युवा साधु ऋषिमंगल रहे । उन्होंने एल.डी. इंजीनियरिंग कॉलेज के अंतिम वर्ष में ''युगपुरुष'' का पहला संस्करण पढ़ा था और उन्हें बीएपीएस के तहत साधु बनने की प्रेरणा मिली थी ।

उनसे मुझसे एक प्रश्न पूछा आप उनमें क्या देखते हो ?

मैं फंस गया । मैंने उनमें क्या देखा है ?

बहुत बड़े लोग सबने उनमे क्या देखा ? राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम, प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह और नरेंद्र मोदी, उद्योगपति अंबानी और कामथ इत्यादि सभी उच्चस्तरीय लोग भारत में और विदेश में उनसे एक बार नहीं बार-बार मिलना क्यों चाहते थे ?

कच्छ गांव के गरीब किसान या भूकंप में छात्र, जब आघात में होता है तो क्यों उनको फोन करता है? क्यों एक बेटी उन्हें अपनी पारिवारिक समस्या के बारे में लिखती है और समाधान ढूंढती है ? मेरे भतीजे दीपक दवे, जो संयुक्त राज्य अमेरिका में है, अक्षरधाम यूएसए के लिए अपनी मामूली आय का 10 प्रतिशत हिस्सा BAPS को दान के रूप में साझा करते हैं और वह 16 अगस्त को यूएसए से सारंगपुर आए - उन्होंने और उनके जैसे हजारों अन्य लोगों ने ऐसा क्यों किया ?

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, ''आप में से कई ने एक गुरु खो दिया है, लेकिन मैंने पिता खो दिया है'' ।

कोई उन्हें 'भगवान' कोई 'बापा' कोई 'स्वामीश्री' क्यों कहते हैं ? कुछ लोग उन्हें

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ प्रमुख स्वामी महाराज और राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

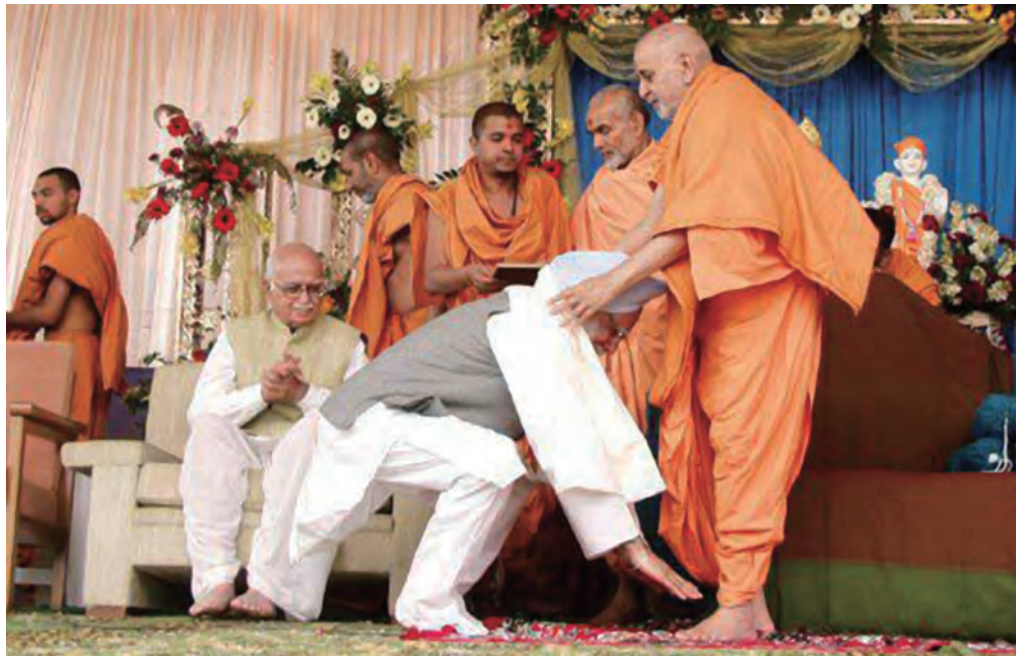

स्वामीश्री का आशीर्वाद प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह

'करिश्माई साधु' के रूप में देखते हैं और अन्य उन्हें हिंदू धर्म के एक प्रतिष्ठित प्रमुख के रूप में देखते हैं । कुछ लोगों को लगता है कि वह भगवान कृष्ण के अवतार हैं जो इस कलयुग में आए थे । कुछ लोगों को लगता है कि वह अंतर्यामी है (वे आपकी आंतरिक इच्छा को समझते हैं) ।

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के ये सभी व्यक्ति उनमें क्या ढूंढते हैं ?

इसमें सामान्य क्या है ? में कुछ मिनटों के लिए रुका :

उनके प्रत्येक अनुयायी ने अपने जीवन में मूल्य जोड़ने के लिए कुछ न कुछ पाया जब वह या तो व्यक्तिगत रूप से मिले हो या अन्यथा साधुओं, हरिभक्तों और मंदिर के माध्यम से संपर्क में भी उनकी बात सुन रहे हो या आ रहे हो । आध्यात्मिक हो, शारीरिक हो या मन की शांति हो, सुरक्षा की भावना हो, व्यवसायिक या पारिवारिक समस्या का समाधान हो, कार्य पूरा ना होने की स्थिति या जिज्ञासा को संतुष्ट करने के लिए, इत्यादि लागू हो सकते हैं ।

नारायण गुरुजी उन्हें 'दिव्य वक्तित्व' कहते हैं और वे उन्हें 'पूजनीय साधु' के रूप में देखते हैं, जो रचनात्मक ऊर्जा का उत्सर्जन करते हैं जिन्होंने अपनी आध्यात्मिक ऊर्जा को 'स्पंदन' और आध्यात्मिकता के लिए रूपांतरित किया है इसका धार्मिक संदर्भने आधुनिक भौतिकवादी समाज के सदस्यों पर व्यापक परिवर्तनकारी प्रभाव डाला है।

जो लोग व्यक्तिगत रूप से उनका आशीर्वाद लेने आए या उन्हें रोजाना याद करते हैं एक प्रातः स्मरणीय के रूप में महसूस करते हैं उन्हें लगता है कि वह उसे अभिभूत कर देता है, क्योंकि उन्हें परिवार में रहने के लिए, एक अच्छा सुखी पारिवारिक जीवन जीने के लिए, व्यापार में प्रगति करने के लिए, व्यवसाय, नौकरी, पढ़ाई, स्वास्थ्य आदि के लिए प्रेरित करता है । इसके अलावा सभी चिंताओं को और बाधाएं, शत्रु इत्यादि उसके पास छोड़ दें । वे इसका ख्याल रखेंगे

क्योंकि वे हमेशा उनके साथ है । वे जहां भी हो, उनके द्वारा अपने भौतिक उपस्थिति से हजारों मील दूर भी उनके कोमल स्पंदन को महसूस किया जाता है । उसका कोमल स्पर्श, पीठ को थपथपाना और उनके सरल शब्द व्यक्ति को आंतरिक रुप से बहुत मजबूत कर देता है । अनुयायियों और अन्यों के वे एक करुणावान सुलभ इंसान थे । अनुयायियों को किसी भी समय व्यक्तिगत रूप से, फोन पर या पत्रों द्वारा वह जवाब देते थे । उनके और अनुयायियों के बीच कोई बाधा नहीं थी ।

वे केवल एक प्रतिष्ठित संत नहीं थे जिन्होंने धर्म का प्रसार किया बल्कि उन्होंने धर्म के पूरे संदर्भ और आधुनिक दुनिया में धार्मिक संस्थान और नेताओं की भूमिका को

प्रमुख स्वामी महाराज महंत स्वामी महाराज का अभिवादन करते हुए

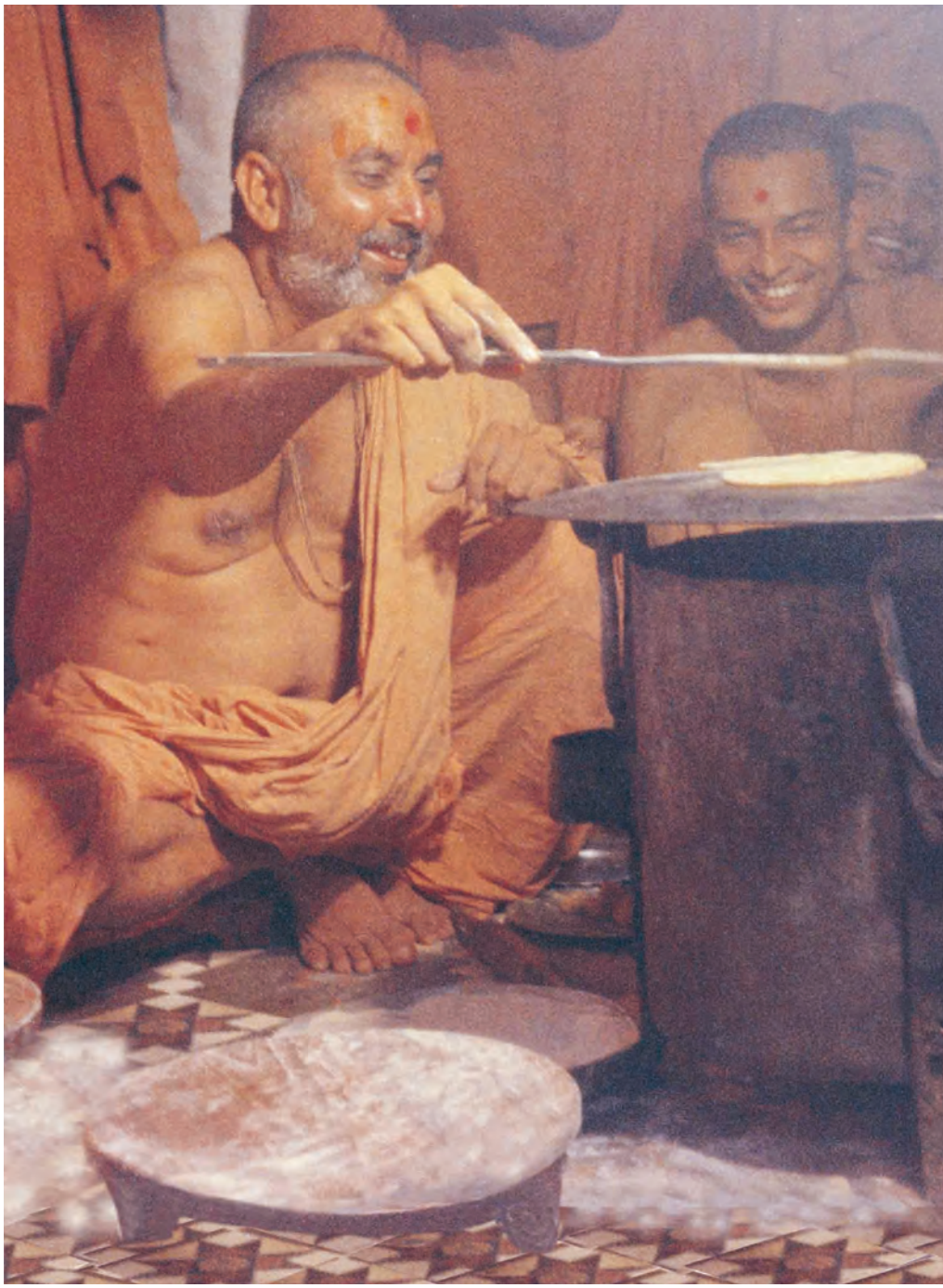

प्रमुख स्वामी महाराज खाना पकानेवाले विशेषज्ञ के रूप में

प्रमुख स्वामी महाराज महंत स्वामी महाराज के साथ बातचीत करते हुए

स्कूली बच्चों के साथ प्रमुख स्वामी महाराज, माउंट आबू

बदल दिया । यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसने विश्वास किया कि एक व्यक्ति को विकास के लिए, उसे आध्यात्मिक रूप से विकसित होना चाहिए; आध्यात्मिक होना जाति, पंथ की चिंता किए बिना मानव जाति की सेवा करके धर्म की सेवा करनी चाहिए या; राष्ट्र के निर्माण के लिए युवाओं को सक्षम करना चाहिए, जो बच्चे हमारे भविष्य है, समाज को बनाए रखने के लिए, हमें उनकी रक्षा करनी चाहिए और धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देना चाहिए। यह एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसने अध्यात्मवाद को बढ़ावा दिया है । एक आदमी जो सिर्फ नेतृत्व करने से भी बहोत आगे निकल गया है । नई सहस्त्राब्दी का मनुष्य -युग-पुरुष ।

बाद के वर्षों में जब वे अस्वस्थ (2011-12) थे तो सारंगपुर चले गए । उन्होंने आने वाली घटनाओं का पूर्वाभास किया था । उन्होंने 2011-2013 में महंत स्वामी महाराज को उनके काम की देखभाल के लिए नामित किया । उन्होंने डॉक्टर स्वामी और आत्मस्वरूप स्वामी जैसे वरिष्ठ साधुओं को भारत और विदेशों में विचरन करने की सलाह दी । अपने नाजुक स्वास्थ्य के बावजूद उन्होंने अगस्त-2014 में 'मूर्ति प्रतिष्ठा' की। लेकिन वे रॉबिन्सविले में यूएसए में अक्षरधाम के लिए भी बहुत उत्सुक थे । हालांकि उनके स्वास्थ्य ने अनुमति नहीं दी, उन्होंने सारंगपुर में साधुओं और हरिभक्तों को दैनिक 'दर्शन'चालु रखा । साधु नारायणचरण जो 1977 से उनके साथ थे कहते हैं ''बापा ने शारीरिक दर्द या परेशानी के बारे में बाय-पास सर्जरी से पहले या बाद में कभी शिकायत नहीं की'' ।

12-13 अगस्त, 2016 को क्या हुआ था ? साधु नारायणचरण जारी रखते हैं,उन्होंने अपना दैनिक दर्शन दिया - लेकिन उनका बीपी कम हो रहा था । डॉक्टर- संत - साधु योगी विवेक और साधु अद्भूतानंद तुरंत उपस्थित हुए । तब भी जब बीपी का गिरना जारी था बापा मुस्कुरा रहे थे । शाम को 5 बजे उन्होंने ''जय स्वामिनारायण कह । हम जिसकी वे प्रतिदिन पूजा करते थे वह ठाकोरजी की मूर्ति लाए - हमने उनसे कहा, स्वामी,ठाकोरजी आए हैं । उसकी नजर ठाकुरजी की और रही । यह अविश्वसनीय दृश्य था'' ।

उनका चेहरा दिव्य प्रकाश, आनंद और संतुष्टि से जगमगा रहा था । और वे बिदा हुए ।

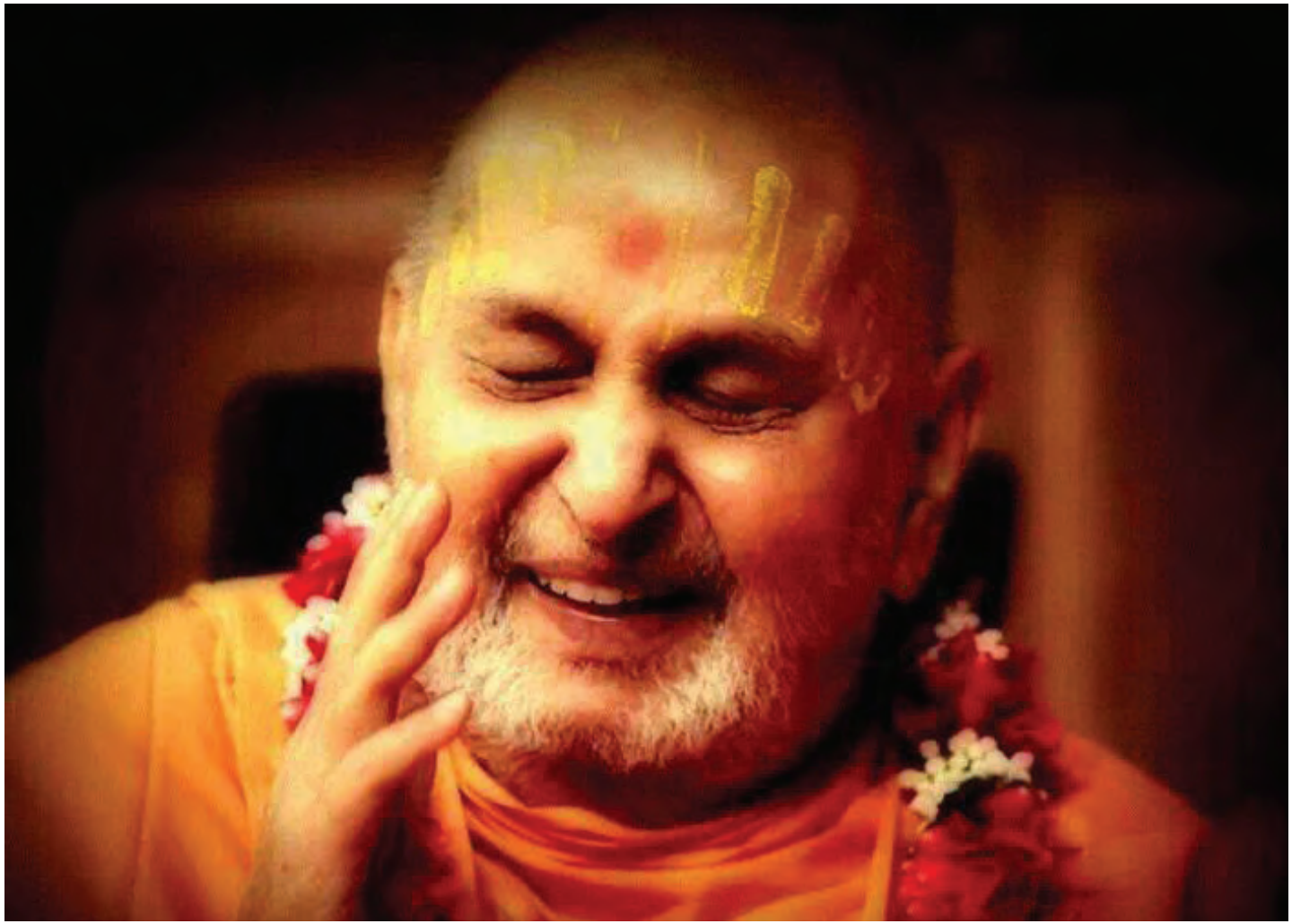

परम पूज्य प्रमुख स्वामी महाराज

ब्रह्मलीन पूज्य प्रमुख स्वामी महाराज का अग्निस्पर्श करते महंत स्वामी महाराज

'विनु'
महंत स्वामी महाराज

दोस्तों के साथ युवा महंत स्वामी महाराज 'वीनू'

विनु (बाद में जो महंत स्वामी बना) का जन्म डाहिबेन और मणिभाई नारायणभाई पटेल के घर 13 सितंबर, 1933 (भाद्रपद कृष्णपक्ष 9,संवत 1989)जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत में हुआ था । छ्ह महीने बाद शास्त्रीजी महाराज जबलपुर आए थे । उन्होंने नवजात शिशु को आशीर्वाद दिया और उसका नाम केशव रखा । शास्त्रीजी महाराज ने मणिभाई से कहा, ''आपका बालक बड़ा होकर सत्संग की बड़े पैमाने पर सेवा करेगा'' । उनके परिवार वाले उन्हें प्यार से विनु कहके बुलाते थे ।

मणिभाई आणंद-गुजरात के रहने वाले थे । व्यापार के सिलसिले में वे जबलपुर रहते थे । विनुभाई ने प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा जबलपुर की अंग्रेजी माध्यम स्कूल से प्राप्त की ।

विनु असाधारण रूप से प्रतिभाशाली था और उसने जबलपुर क्राइस्टचर्च - बॉयज सीनियर सेकेंडरी स्कूल मे अपनी 12वीं कक्षा पूरी की । उस समय तक परिवार ने गुज रात में शिफ्ट होने का फैसला किया । विनु अपने माता-पिता के साथ आणंद आया । उन्हें खेती पसंद थी और कॉलेज ऑफ़ एग्रिकल्चर-आणंद में प्रवेश लिया । युवा विनु में आध्यात्मिकता के लिए आंतरिक तड़प थी । तेज बुद्धि वाले वे 1951-52 में योगीजी महाराज के संपर्क में आए और योगीजी महाराज के करिश्मे और निस्वार्थ प्रेम की ओर आकर्षित हुए । और गर्मी की छुट्टियों में योगीजी महाराज के साथ यात्रा करने लगे । योगीजी महाराज के स्नह ने युवा विनुभाई को अपनी ओर खींच लिया ।

1956 में विनु भाई को कृषि में स्नातक की उपाधि प्राप्त हुई । अपने आध्यात्मिक झुकाव के कारण उन्होंने त्याग का मार्ग अपनाने का फैसला किया । उन्होंने उन्नत शिक्षा या पेशेवर केरियर का पीछा नहीं किया । 2 फरवरी, 1957 को, योगीजी महाराज ने खुशी-खुशी उन्हें 'पार्षद दीक्षा' दी और उनका नाम बदलकर विनु भगत कर दिया । एक बार योगीजी महाराज ने साधु बनने इच्छुक कुछ युवकों को सम्बोधित करते हुए कहा विनुभाई के साथ 51 युवक दीक्षा लेंगे । उसका पुण्य सभी को जाएगा । वह दीक्षा लेने वाले पहले व्यक्ति थे । बाद में योगीजी महाराज ने विनु भगत से कहा कि वे दैनिक पत्र-व्यवहार और अन्य सेवाओं के लिए अपने विचरण में साथ दें । चार साल तक वे योगीजी महाराज के साथ रहे और आध्यात्मिक प्रशिक्षण प्राप्त किया ।

शुरुआती दिन :

11 मई, 1961 को गढड़ा स्थित बीएपीएस स्वामिनारायण मंदिर के कलश महोत्सव के अवसर पर योगीजी महाराज ने 51 शिक्षित युवकों को भगवती दीक्षा दी । इनमें सबसे पहले दीक्षा पाने वाले विनु भगत थे और उनका नाम स्वामी केशवजीवनदास रखा गया । जब वे एक बच्चा थे, शास्त्रीजी महाराज द्वारा दिया गया 'केशव' नाम फिर से प्रकट हुआ अब योगीजी महाराज द्वारा केशवजीवनदस का नाम दिया गया ।

तत् पश्चात् योगीजी महाराज ने 51 दीक्षित साधुओं को मुंबई में संस्कृत का अध्ययन करने का निर्देश दिया। दादर मंदिर में स्वामी केशव जीवनदास को उनके प्रमुख (महंत) के रूप में नियुक्त किया गया । समय के साथ, वह सम्मानपूर्वक महंत स्वामी के रूप में जाना जाने लगे । योगीजी महाराज महंत स्वामी की उच्च योग्यता के बारे में नए दीक्षित साधुओं को अक्सर लिखते थे, ''सभी को महंत स्वामी के निर्देश में रहना चाहिए । यदि

कोई परेशानी या चिंता महसूस करता है तो उसके बारे में महंत स्वामी को बताएं । वे आपकी समस्याओं का समाधान करेंगे'' ।

महंत स्वामी के शुरुआती दिन :

महंत स्वामी न केवल नवनियुक्त साधुओं को बहुत प्रिय थे बल्कि, जो मंदिर में जाते थे वे छोटे लड़के भी उनका बहुत सम्मान करते थे । वह युवाओं में सेवा, आज्ञाकारिता और भक्ति के आध्यात्मिक मूल्यों को आत्मसात करने और सभी साधुओं और बड़ों का सम्मान करने के लिये प्रेरित करते थे । वे गुजरात में या बाहर जहां भी गए और रुके यह अभूतपूर्व बंधन कई गुना बढ़ गया और फैल गया । 1970-1971 ऐतिहासिक साल था जब योगीजी महाराज ने अफ्रीकी और इंग्लैंड का दौरा किया और संप्रदाय का देश की सीमा के बाहर फेलाव और प्रसार किया, प्रमुख स्वामी महाराज और महंत स्वामी महाराज उनके साथ थे । योगीजी महाराज ने लंदन में मंदिर की स्थापना सहित कई नए पूजा स्थलों की शुरुआत की । अगला साल 1971 चौंकाने वाला था । योगीजी महाराज ने 71 वर्ष की आयु में स्वर्गलोक के लिए प्रस्थान किया । महंत स्वामी महाराज योगीजी महाराज की कमी महसूस कर रहे थे ।

प्रमुख स्वामी महाराज ने 1971 में गुरु परंपरा का अनुसरण करते हुए नेतृत्व किया BAPS संस्था का स्वामिनारायण संप्रदाय का विस्तार हुआ । 1979 एक और ऐतिहासिक वर्ष था । प्रमुख स्वामी महाराजने गांधीनगर में अक्षरधाम की स्थापना की पहल की । पूरा काम महंत स्वामी महाराज को सौंपा गया था । और उन्होंने इसे अद्‌भुत बनाने के लिए दिन-रात काम किया ।

प्रमुख स्वामी महाराज हमेशा महंत स्वामी का बहुत सम्मान करते थे । महत्वपूर्ण कार्यों में जहां वे नहीं जा सकते थे, महंत स्वामी को उनका प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रतिनियुक्त करते थे ।

प्रमुख स्वामी महाराज के नेतृत्व में बीएपीएस ने पूरे विश्व में आध्यात्मिकता का प्रसार किया । लगातार यात्रा और दिन-रात के काम ने प्रमुख स्वामी महाराज को शरीर से कमजोर बना दिया । मार्च 2013 में उन्होंने महंत स्वामी महाराज को BAPS गतिविधियों की देखरेख और सभी का मार्गदर्शन करने के लिए नामित किया । प्रमुख स्वामी महाराज सारंगपुर स्थानांतरित हुए । प्रमुख स्वामी महाराज के स्पष्ट निर्देशों के बावजूद महंत स्वामी महाराज ने सभी संतो से अनुरोध किया कि वे इसका प्रचार न करें । उन्हे सौंपे गए सभी कार्यों को उन्होंने पूरा किया । वो भी विनम्र संत के रूप में लगातार सेवक रहकर । उन्होंने कहा, ''मैं महाराज का 'नौकर' हूं और ऐसा ही रहना चाहूंगा । प्रमुख स्वामी महाराज हम सभी को ''मोक्ष'' की ओर ले जाते हैं और हम सब उनके चरणों में है'' ।

24 मई 2013 के दिन महंत स्वामी महाराज की उपस्थिति में लेखक द्वारा लिखी गई 'युगपुरुष - प्रमुख स्वामी महाराज' मराठी संस्करण का सारंगपुर में विमोचन किया गया ।

प्रमुख स्वामी महाराज के साथ

अपने संप्रदाय में दीक्षा के शुरुआती दिनों को याद करते हुए महंत स्वामी महाराज कहते हैं, ''हम सभी युवक कृष्ण अष्टमी उत्सव में भाग लेने के बाद अटलादरा (वडोदरा जिला) से लौट रहे थे । प्रमुख स्वामी भी हमारे साथ यात्रा कर रहे थे, हम सब एक ही डिब्बे में एक साथ थे । ट्रेन चलने के बाद उन्होंने मुझसे बात की। उन्होंने मेरी पृष्ठभूमि और शिक्षा के बारे में पूछताछ की । फिर उन्होंने अचानक पूछा कंठी (तुलसीसे बना पवित्र धागा) पहन रहे हो ? मैंने कहा नहीं । उन्होंने मुझे इसे पहनने की सलाह दी और मुझसे कहा, कृपया योगीबापा से अनुरोध करें । इसी बीच एक साधु कंठी के साथ आ गए और प्रमुख स्वामी ने स्वयं मेरे गले में डाल दी । मैं रोमांचित था'' ।

हमारी बातचीत जारी रही । उन्होंने सुझाव दिया, ''क्या तुम 'साधु' बनना चाहोगे । यह कोई आदेश नहीं था'' सिर्फ एक सुझाव था- जीवन के दुखों पर चर्चा की; मुक्ति में भगवान स्वामिनारायण और गुरु की भूमिका समझाई । साधु होने या न होने का निर्णय केवल स्वयं ही लेना था । इस संवाद से मुझे 'साधु' बनने की एक दिशा मिली और वो इच्छा बढ़ने लगी ।

मैं योगीजी महाराज के साथ था । उस दिन को याद करते हुए महंत स्वामीजी कहते हैं - ''मुझे अहमदाबाद घुमने का अवसर मिला'' । हमने अपने आंबली पोण मंदिर का दौरा किया । यहीं पर शास्त्रीजी महाराजने प्रमुख स्वामी महाराज को नारायण स्वरूप रूप में घोषित किया था । श्री बाबुभाई सोमनाथी कोठारी थे । वे संसाधनों के उपयोग में बहुत सावधानी बरतते थे । प्रमुख स्वामी महाराज ने उनकी सराहना की । स्वामीजी खाना खुद बनाते थे और परोसते । लेकिन किसी तरह उसे पता चल गया था- मैं चावल नहीं खाता चपाटी खाता हूं । उन्होंने चपाटी का अपना हिस्सा मुझे देना शुरू कर दिया और उसमें घी लगाकर जबकि वह स्वयं केवल दाल-चावल खाते थे । उन लंबे दिनों तक हमारी जानकारी के बिना प्रमुख स्वामी महाराज हमारा देखभाल करते थे ।

योगीजी महाराज के साथ

महंत स्वामी कहते हैं - ''आणंद कृषि महाविद्यालय में मैं एक छात्र के रूप में योगीजी महाराज के संपर्क में 1953-1956 में आया था । छुट्टी के दौरान मैं उनके साथ रहा करता था और उनके 'विचरण' यात्राओं में उनके साथ शामिल होता था । स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद में गोंडल गया और 'पार्षद' के रूप में शामिल हो गया ।

पूज्य योगीजी महाराज ने युवा महंत स्वामी और अन्य नए दीक्षित युवा साधुओं को आशीर्वाद दिया

साधुओं और पार्षदों को तैयार करने की योगीजी महाराज की अपनी शैली थी । वह कठिन प्रशिक्षण था – जिसने मुझ मैं पूरा दिन और कई बार बिना खाना खाए भी – काम करने की मेरी क्षमता विकसित की'' ।

महंत स्वामी महाराज – उस समय विनु भगत के नाम से जाना जाते थे, 11 मई, 1961 को साधु के रूप में शामिल हुए, योगीजी महाराज का जन्मदिन था और उनके सत्तर साल पूरे हुए थे । 51 युवा पार्षदों को दीक्षा दी जा रही थी । योगीजी महाराज ने उन्हें गुरु मंत्र दिया– विनु भगत को आशीर्वाद और चंदन तिलक और अंत में भगवा पवित्र वस्त्र उन्हें दिए गए और उन्हें 'केशवजीवनदास स्वामी' का नाम – सभी उपस्थित लोगों ने 'जयजय' से अभिवादन किया । युवा विनु भगत अब साधु केशवजीवनदास बन गया ।

योगीजी महाराज ने केशवजीवनदास की क्षमता को देखा । यह माना जाता था कि नए साधुओं को अच्छी तरह से प्राचीन लिपियों और धार्मिक अनुष्ठानों में प्रशिक्षित होने की आवश्यकता है । उन्हें पंडित विद्वान व्यक्ति होने की जरूरत है जो हरिभक्तों और युवा पीढ़ी को मार्गदर्शन दे सकते हैं और आध्यात्मिक मूल्यों का संचार कर सकते हैं ।

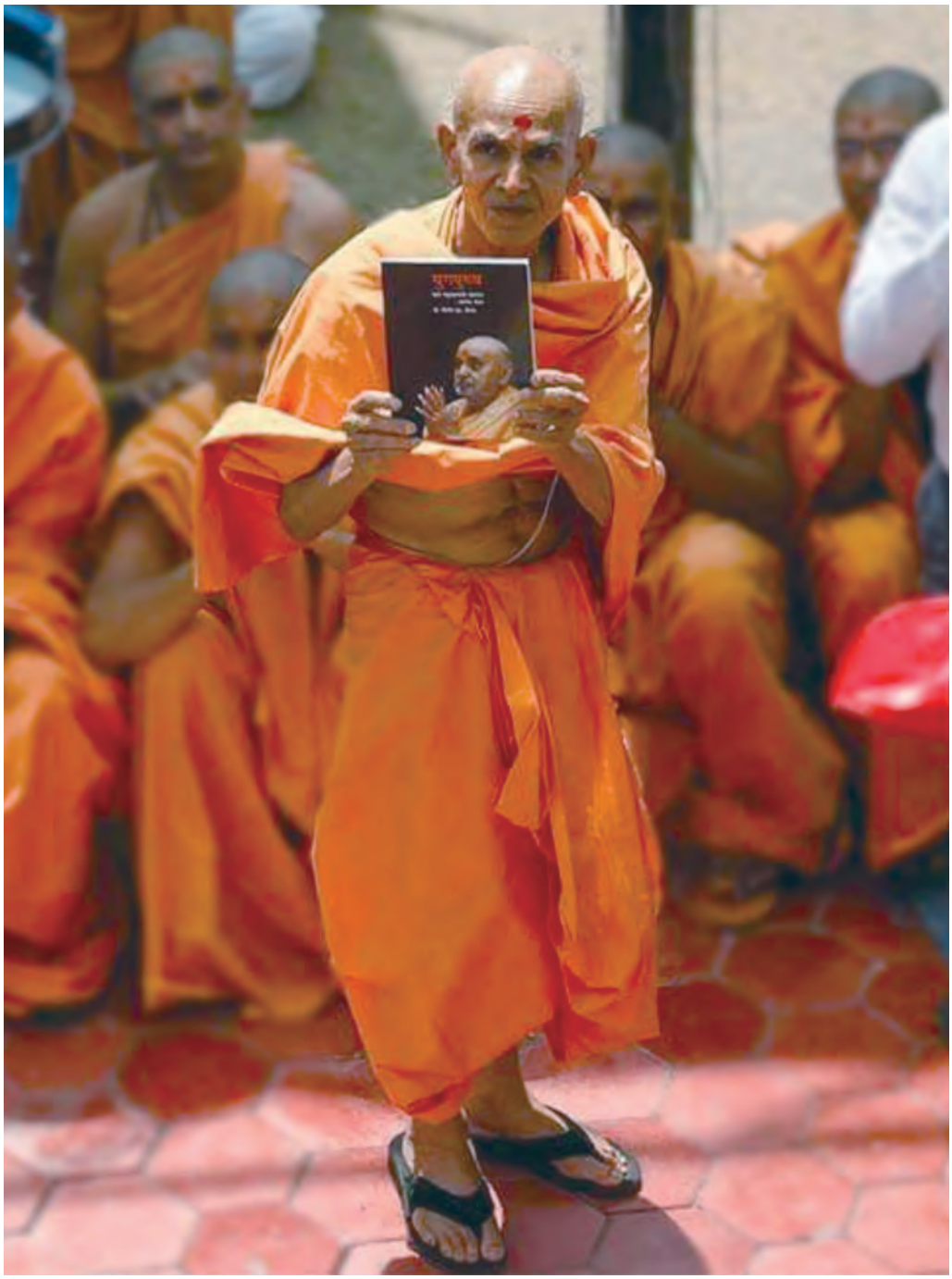

महंत स्वामी महाराज ने युग पुरुष के मराठी संस्करण का विमोचन किया
२४ मई २०१३, शनिवार

इसके लिए उन्होंने मुंबई को चुना । उन्होंने इस उद्देश्य के लिए केशवजीवनदास को बुलाया और नेता के रूप में मनोनीत किये । ''महंत स्वामी'' सभी के बीच एक सम्मानित और प्रिय संत बन गए।

1962 में योगीजी महाराज ने दादर में हरिमंदिर की स्थापना की और महंत भक्तप्रियदास स्वामी को महंत स्वामी और इसके कोठारी के रूप में विभिन्न माध्यमों से दान, वेतन स्वैच्छिक सहायता इत्यादि इत्यादि से योगदान आया ।

1962 में योगीजी महाराज ने दादर में हरिमंदिर की स्थापना की और महंत स्वामी को महंत और भक्तप्रियदास स्वामी को कोठारी नियुक्त किया ।

योगीजी महाराज अक्सर कहते थे, ''प्रमुख स्वामी और महंत स्वामी हमारे महत्वपूर्ण नेता है - उनका अनुसरण करें । प्रमुख स्वामी समग्र प्रभारी है -हमने नींव रखी है - वे इसे ओर बनाएंगे । वह हमारे आचार्य है । उनके निर्देशों का पालन करें और महंत स्वामी के मार्गदर्शन का भी पालन करें -सब अच्छा होगा और भगवान प्रसन्न होंगे । इन दोनों के साथ निरंतर जुड़ाव आपको अक्षरपुरुषोत्तम का सच्चा आध्यात्मिक मार्ग दिखाएंगे''।

स्पंदन

प्रमुख स्वामी महाराज 13 अगस्त, 2016 को स्वर्गलोक में चले गए और चौंकाने वाली लहर पैदा हुई । अंत्येष्टि ''16 अगस्त, 2016'' को थी । मैं अपने भाई सुरेशभाई के साथ उनकी 'अंतिम विधि' के समय वहां था । मैं चिता के पीछे खड़ा था । परम पूज्य महंत स्वामी महाराज ने कुछ मिनट पहले 'अग्निस्पर्श' दिया । अग्नि (आग) भड़क गई और धुआं उठ रहा था । सन्नाटा छा गया । हमने स्पंदन 'दिव्य स्पंदन' महसूस किया । जिन्होंने अपना जीवन दूसरों को समर्पित कर दिया और धर्म के संदर्भ को बदल दिया ऐसे परम पूज्य प्रमुख स्वामी महाराज के दिव्य स्पंदन को सभी ने महसूस किया; संत महंत सहित 3,00,000 भक्त साक्षी थे और अरबों से अधिक हरिभक्त और अन्य भारत और दुनिया भर में टेलीविजन पर देख रहे थे।

शीतल रवि किरण - सूरज की ठंडी किरणें हम पर उतर रही थी । प्रमुख स्वामी महाराज के दिव्य स्पंदन - रचनात्मक ऊर्जा पीछे खड़े महंत स्वामी के माध्यम से व्यापक हो गई है । महंत स्वामी के माध्यम से जारी है ।

यह भगवान - भगवान स्वामिनारायण द्वारा निर्धारित गुरु परंपरा है ।

महान ऋषि महंत स्वामी महाराज

प्रमुख स्वामी महाराज ने महंत स्वामी महाराज को अपना कार्य सौंपा था । बाद में

ब्रह्म प्रमुख स्वामी महाराज का अंतिम संस्कार करते महंत स्वामी महाराज

प्रमुख स्वामी महाराज के दर्शन और अंतिम संस्कार

भागवत दीक्षित संतवृन्द के साथ महंत स्वामी महाराज

सारंगपुर में हुई बैठक में संतों ने महंत स्वामी महाराज से नेतृत्व करने का अनुरोध किया ।

डॉक्टर स्वामी ने बैठक में उपस्थित सभी से कहा – ''अब क्या होगा जब युगपुरुष – दिव्य व्यक्तित्व चला गया है'' ? लेकिन वह महंत स्वामी महाराज के माध्यम से हमारे साथ ही है । जैसे उन्होंने किया था वैसे ही हम सभी को महंत स्वामी महाराज द्वारा निर्देशित किया जाना जारी रहेगा ।

ईश्वरचरणदास स्वामी ने आगे विस्तार से बताया ''हमारा ज्ञान – शाश्वत है सत्य हमारा ज्ञान है'' । गुणातीतानंद स्वामी कहा करते थे- मैं शाश्वत हूं । मैं प्रस्थान नहीं कर रहा हूं । यह शरीर (देह) है जो जाता या गिरता है – लेकिन मैं इस दुनिया में रहने वाला हूं और समय-समय पर 'गुरु परम्परा' के हिस्से के रूप में प्रगट होता हूं ।

स्वामी श्री ईश्वरचरणदास ने आगे कहा ''प्रमुख स्वामी महाराज ने बार-बार विस्तार से बताया था कि उसके उत्तराधिकारी महंत स्वामी है – उनका अनुसरण करें – उनके मार्गदर्शन का पालन करें'' ।

अब हमारे साथ 1000 से अधिक अच्छी तरह शिक्षित साधु संत है । इसकी शुरुआत महंत स्वामी से हुई थी –उस समय यह माना जाता था कि शिक्षित युवा साधु बनना पसंद नहीं करते । लेकिन महंत स्वामी ने इस विश्वास का खंडन किया । उन्होंने योगीजी महाराज का अनुसरण किया और उन्हें 'दीक्षा' देने और साधु बनाने के लिए राजी किया । योगीजी महाराजने उन्हें वर्षों तक अपने साथ रखा और उन्हें प्रशिक्षित किया – सभी अलग-अलग पहलुओं में प्रशिक्षित किया । महंत स्वामी हमेशा एक विनम्र संत पुरुष रहे । महंत स्वामी महाराजने अगणित गुणों को आत्मसात किया है योगीजी महाराज ने उन्हें नए साधुओं की शिक्षा का प्रशिक्षण सौंपा था और उन्हें मुंबई में 'महंत' के रूप मैं नियुक्त किया था ।

अपने आसपास इतने सारे साधु, हरिभक्त और अन्य लोगों के बावजूद महंत स्वामी हमेशा आत्मनिर्भर रहे हैं वे अपने कपड़े धोते और सारे बर्तन साफ करते थे, ठाकोरजी के लिए 'हार' की माला तैयार करते थे – यह जीवन शैली अपने आप में युवा साधुओ के लिए एक शिक्षा है – सुबह 4 बजे उठना, सुबह जल्दी उठकर योग करना । वे कम शब्द बोलते हें लेकिन उनकी जीवनशैली –भक्ति- करिश्मा- दिव्यता, अलौकिक प्रकाश का स्पंदन हर जगह फैलाती है । वे एक महान ऋषि है ।

महंत स्वामी अब हमारे नेता है – गुरु परंपरा की शुरुआत गुणातीतानंद स्वामी से हुई थी –हम उनका अनुसरण कैसे करेंगे । उनमें हम गुणातीतानंद स्वामी, भगतजी महाराज, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज सभी गुरुओं को देखते हैं । उनके निरंतर संपर्क में रहकर – हमें सच्चा सुख और शांति का मार्ग मिलेगा।

याद रहे कि प्रमुख स्वामी महाराज कहीं नहीं गए हैं - उनकी 'स्पंदन' महंत स्वामी में है - वे इनके माध्यम से हमारे साथ हैं ।

प्रमुख स्वामी की तबीयत ठीक नहीं थी । वह सारंगपुर चले गए । 2012 - 13 में डॉक्टर स्वामी, कोठारीस्वामी, त्यागवल्लभ स्वामी, ईश्वरचरणदास स्वामी, विवेक सागर स्वामी और अन्य सभी सद्गुरुओं की उपस्थिति में -उन्होंने BAPS के आध्यात्मिक गुरु के रूप में और उनके उत्तराधिकारी के रूप उनके कार्यो को सोंपने का फैसला किया ।

वह औपचारिक रूप से यह कार्य सौंपते हैं । उन्होंने इस संबंध में BAPS समुदाय को एक पत्र भी लिखा जिसमें पूरी जानकारी दी गई । उन्होंने सभी संबोधित करते हुए त्यागी को सूचित किया, ग्रही, भक्त वो बोचासनवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था यज्ञ पुरुष शास्त्रीजी महाराज द्वारा निर्मित (BAPS) का नेतृत्व मेरे जाने के बाद महंत स्वामी महाराज 'प्रमुख' के रूप मैं महंत स्वामी साधु केशवजीवनदास को नियुक्ति कर रहा हूं। वह गुरु होगे ।

इस घोषणा और औपचारिक रूप से समग्र कार्य को सौंपने के बावजूद, महंत स्वामी ने लो प्रोफाइल बनाए रखा । उन्होंने संतों से आग्रह किया कृपया इसे खुले तौर पर घोषित न करें । मैं उनका एक नौकर हूं और नौकर रहना चाहूंगा । प्रमुख स्वामी महाराज मोक्ष का द्वार और हम सभी के गुरु हैं । कृपया मेरा अनुरोध स्वीकार करें ।

उसी क्षण एक ओर प्रमुख स्वामी का देहान्त हो गया उनका स्पंदन की शुरुआत महंत स्वामी महाराज ने की थी । जो शारीरिक रूप से उपस्थित थे और जो हजारों लोग टीवी पर थे, उन्होंने प्रमुख स्वामी को आश्वस्त महसूस किया वह बिल्कुल नहीं गुजरे है । वह महंत स्वामी में हमारे साथ सारे जहां में हैं । महंत स्वामी महाराज प्रमुख स्वामी महाराज द्वारा बनाए गए दिव्य मार्ग का नेतृत्व कर रहे हैं और वह हमारा नेतृत्व करने के लिए हमारे साथ है हमारा मार्गदर्शन करें और सभी को आध्यात्मिक मार्ग पर ले जाएं ।

''हम सभी वास्तव में प्रमुख स्वामी महाराज के आभारी हैं कि उन्होंने हमें ऐसा गुनियल गुणनतीत गुरु प्रदान किया - महान ऋषि महंत स्वामी महाराज'' ।

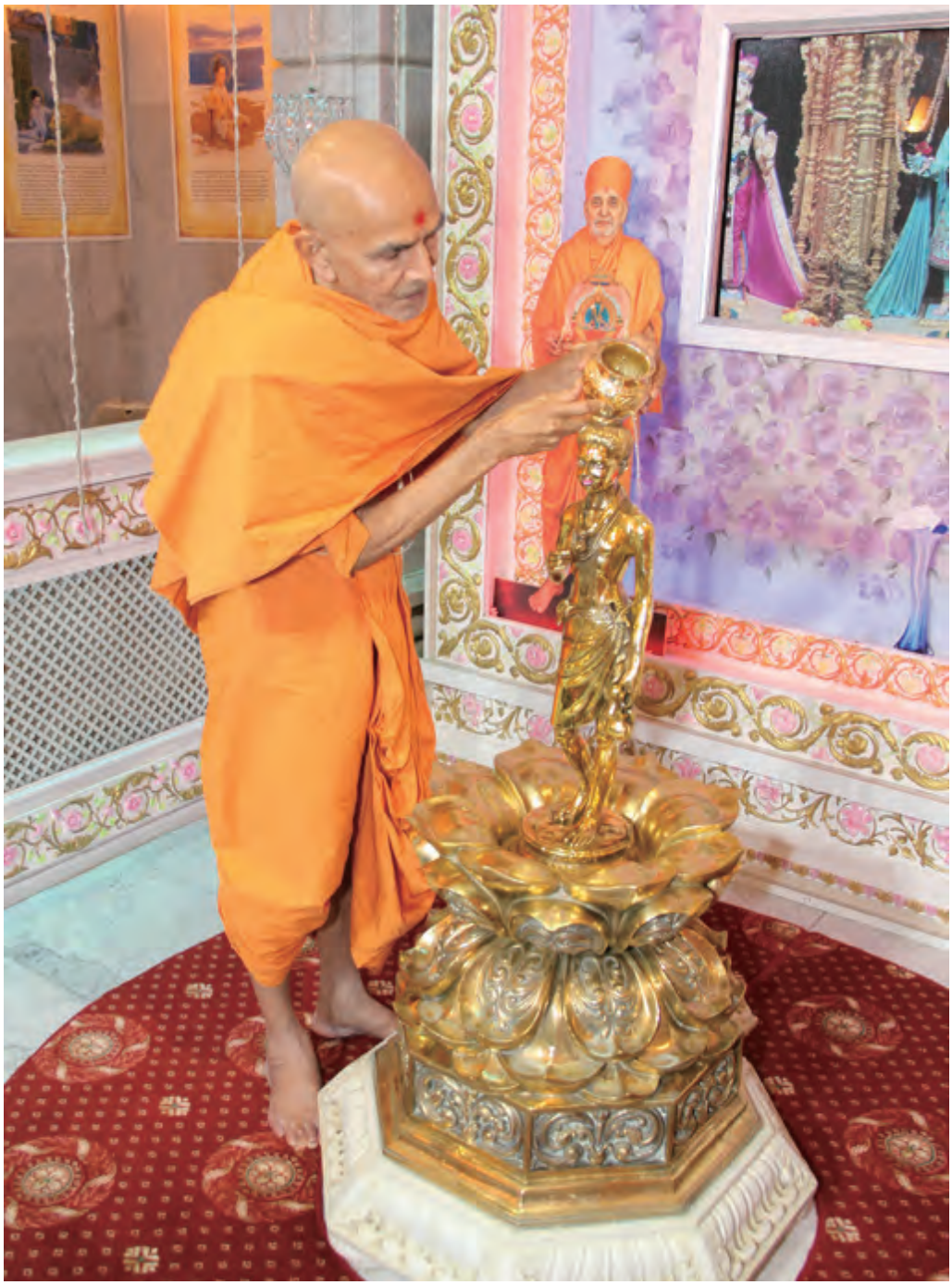

लंदन मंदिर में महंत स्वामी महाराज द्वारा पवित्र अभिषेक

वार्षिक उत्सव के दौरान मुख्य न्यायाधीश टंडन के साथ
महंत स्वामी महाराज टोरंटो मंदिर, कनाडा

स्वामीनारायण मंदिर सारंगपुर में महंत स्वामी महाराज

बोचासन मंदिर में महंत स्वामी महाराज

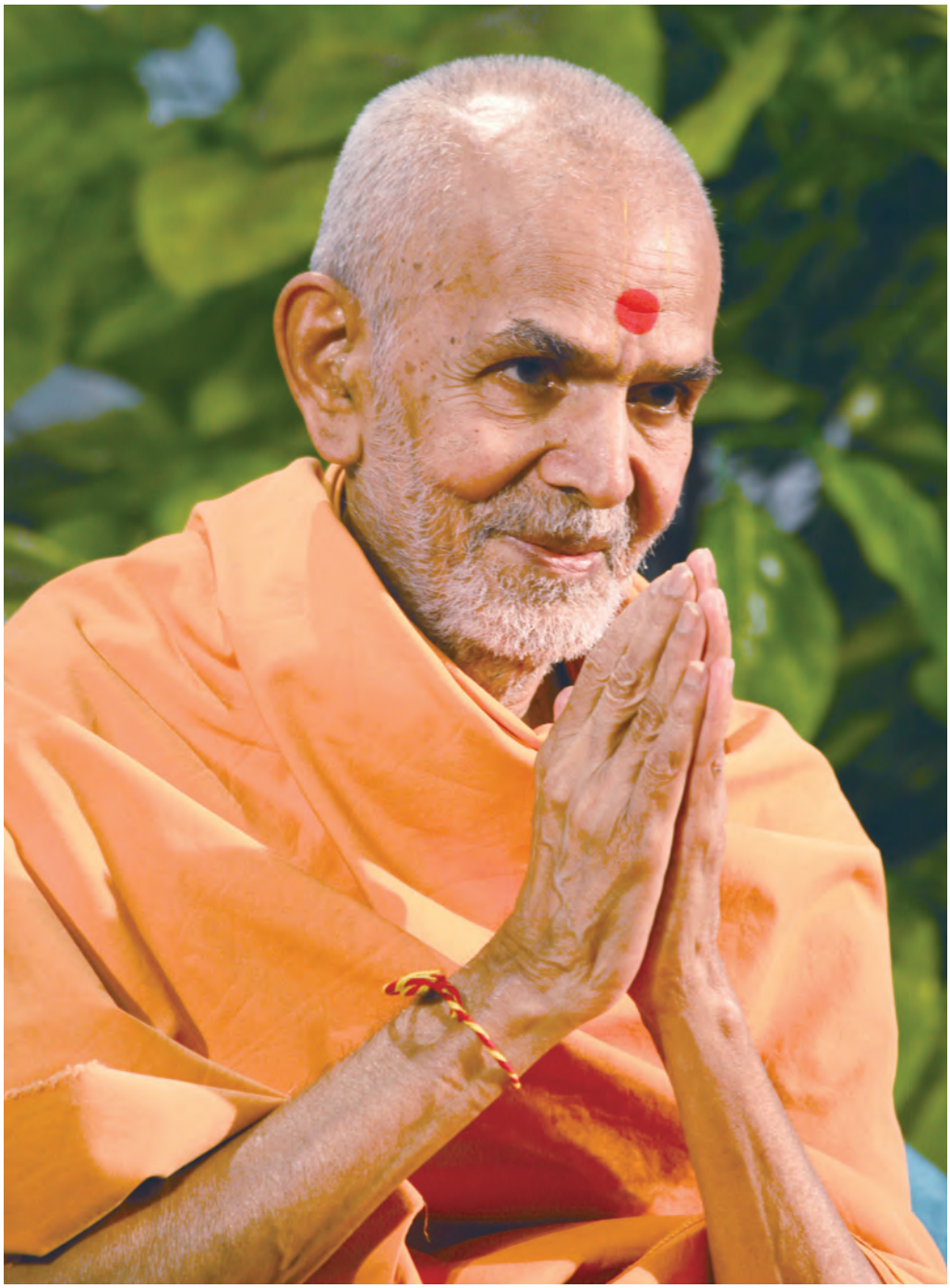

महान ऋषि महंत स्वामी महाराज

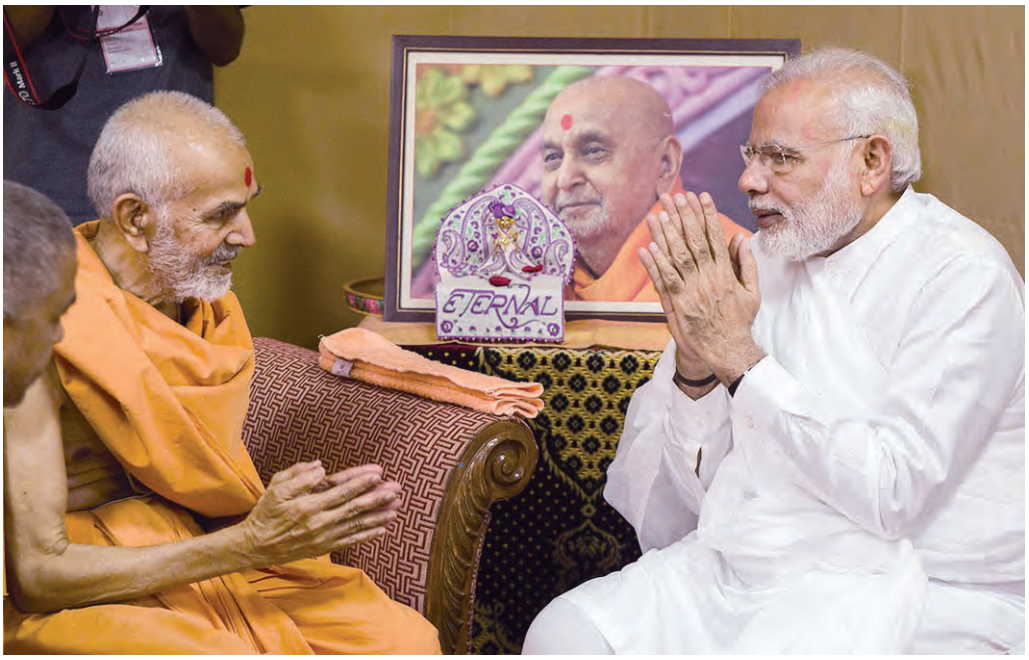

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ महंत स्वामी महाराज

पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा के साथ महंत स्वामी महाराज

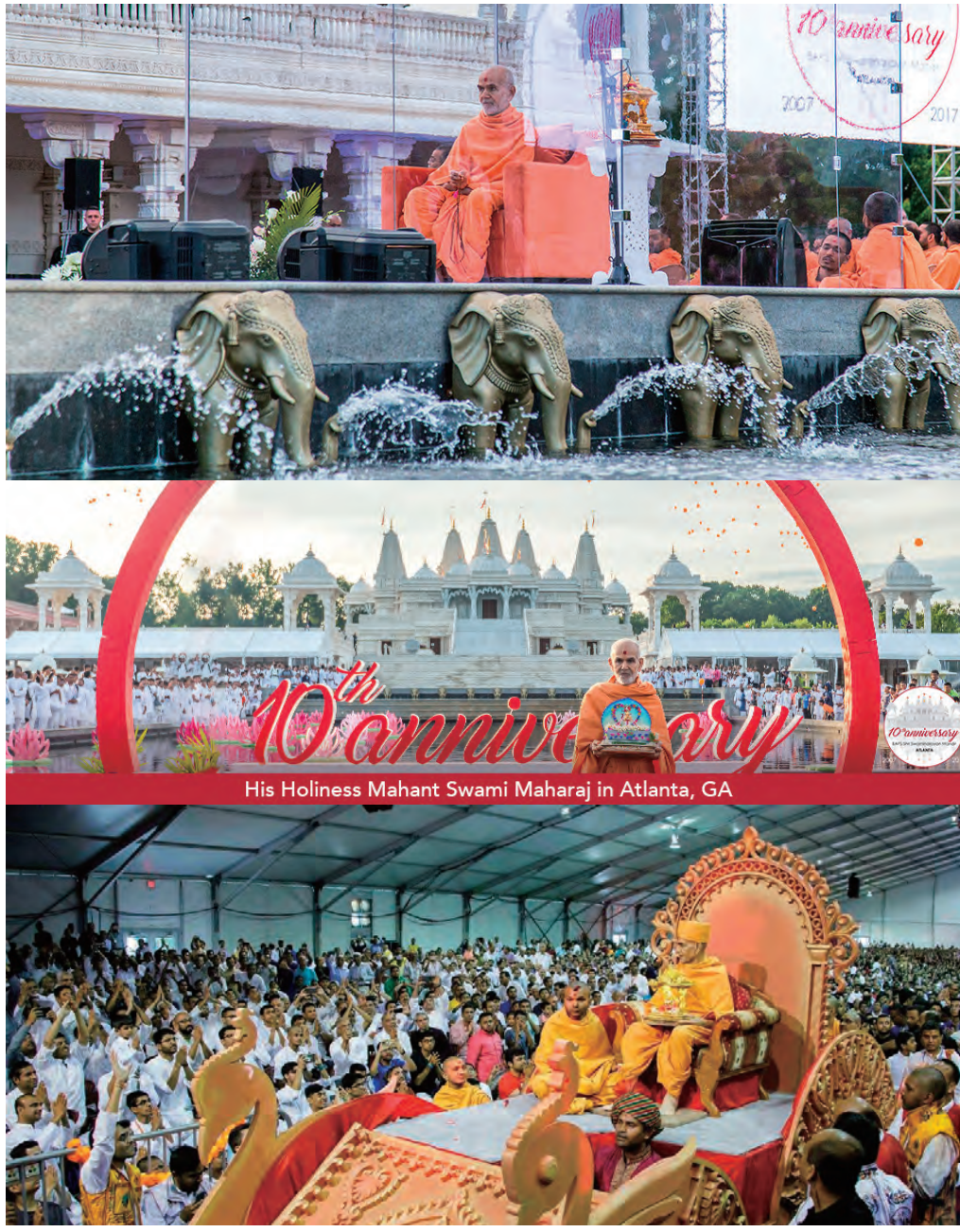

शिकागो में अपने पहले गुरुपूर्णिमा समारोह के दौरान महंत स्वामी महाराज, लॉस एंजिलस और अटलांटा, यूएसए

अध्यात्म का प्रसार
सनातन धर्म

पू. योगीजी महाराज द्वारा शुरू किया गया सनातन धर्म का प्रसार गुजरात और विदेशों में प्रमुख स्वामी महाराजने बड़े पैमाने पर विस्तारित किया और महंत स्वामी महाराज ने इस अभियान को नई ऊंचाइयां बक्षी इस प्रसार का उद्देश हिंदू धार्मिक परंपरा एकांतिक धर्म- सम्यक् जीवन, भक्ति, सहिष्णुता, शांतिपूर्ण पारिवारिक संबंध ऐसे गुणों को समाज में जीवित रखना है । धर्म-प्रसार न केवल गुजरात में बल्कि, विदेशों में बसे अनिवासी भारतीयों को साथ में रखकर शुरू किया था और उसके बाद पूरे भारत में और विश्वभर में इस हेतु से साधुओं का विचरण जारी है । भारतीय लोग अफ्रीका, यूरोप, अमेरिका, केनेडा, ऑस्ट्रेलिया, फिजी द्वीप समूह सहित दुनिया भर में बसे है ।

एक व्यवस्थित पहल के रूप में अफ्रीका, ब्रिटेन और भारत के बाहर अन्य देश के भीतर जहां भी गुजराती बसे थे, योगीजी महाराज ने वहां दौरा किया । स्थानीय सत्संग समूहों की रचना की गइ और उसके बाद मंदिरों की स्थापना हुई । इसने हिंदुओं को और गैर-हिंदुओं को भी जो हिंदू संस्कृति और मूल्यों को पसंद करते हैं उन्हे आकर्षित किया । ऐसे मंदिर पर्यटकों की रुचि के स्थान भी बन गए । वे न केवल पूजा स्थल बन गए - बल्कि आध्यात्मिक मूल्यों और स्वामिनारायण संप्रदाय आधारित सनातन धर्म के संदेश के केंद्र बन गए है । प्रमुख स्वामी महाराज ने इसका बहुत फैलाव किया । लगभग 55 से अधिक देशों में मंदिरों की स्थापना की गई - जिनमें से कई 'शिखरबंध मंदिर' थे, सब मंदिर आधुनिक तकनीक और संबंधित देश की जलवायु और जीवन शैली की जरूरतों को देखकर पारंपरिक वास्तुकला से निर्मित हुए हैं ।

जिसने हाल ही में 50 वर्ष पूरे किए हैं वह लंदन के नेसडेन मंदिर की कहानी यहां है । इसमें दर्शाया गया है कि कैसे पूरी गतिविधियों को स्वैच्छिक प्रयासों और साधुओं - हरिभक्तों, हिंदुओं और यहां तक कि स्थानीय गैर-हिंदुओं की भागीदारी से संकलित किया गया । अन्य सभी मंदिरों में भी समान भागीदारी और स्वैच्छिक प्रयास थे । अक्षरधाम गांधीनगर और दिल्ली सहित पूरे विश्व में इस सिद्धांत का पालन किया गया है ।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि ये सभी केन्द्र विभिन्न माध्यमों से दान, वेतन आय से योगदान, स्वैच्छिक सहायता इत्यादि से वे आत्मनिर्भर है ।

नेसडेन मंदिर :
इंग्लैंड में सत्संग का संक्षिप्त इतिहास

मानव आस्था, समर्पण और दिव्य आशीर्वाद की यह एक अविश्वसनीय कहानी है । एक छोटे से बीज से विशाल वटवृक्ष के रूप में शानदार विकास की कहानी है । 1970 मैं योगीजी महाराज द्वारा स्थापित एक छोटे से सत्संग से लंदन के उपनगर नेसडेन में पूजा के लिए एक प्रमुख हिंदू केंद्र तैयार हुआ है । प्रमुख स्वामी महाराज की प्रेरणा से यह पौधा एक विशाल वृक्ष के रूप में विकसित हुआ ।

लंदन में स्वामिनारायण हिंदू संप्रदाय के मूल 1950 के दशक की शुरुआत में पाये जाते है । द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के शुरुआती वर्ष थे, जब लंदन विनाशकारी हमले के बाद से उभर रहा था । छोटा भारतीय समुदाय बिखरा हुआ था । उनमें से कुछ भगवान स्वामिनारायण के अनुयायी थे । वे स्वामिनारायण हिंदू मिशन के अग्रदूत बने ।

1950 में शास्त्रीजी महाराज के आशीर्वाद से महेंद्रभाई पटेल (बैरिस्टर) पुरुषोत्तमभाई पटेल और अन्य हरिभक्तों ने लंदन में सत्संग के लिए मिलना शुरू किया । जैसा कि महेंद्रभाई लिखते हैं, "मैं 1950 में आगे की पढ़ाई के लिए लंदन आया था । पुरुषोत्तमभाई पटेल शास्त्रीजी महाराज के भक्त थे, और केंट काउंटी में रहते थे । उनका पता मुझे योगीजी महाराजने दिया था" । समय के साथ भारतीय समुदाय बढ़ता गया। लंदन में, डी. डी. मेघानी, उनके भाई और दोस्त 1953 से उनके कार्यालय में सत्संग सभा कर रहे थे । बाद में भारत और पूर्वी अफ्रीका से आने वाले नवीनभाई स्वामिनारायण, प्रफुल्लभाई पटेल, चित्तरंजनभाई और अन्य शामिल हुए । उन्होंने 1958 में प्रह्लादभाई के घर पर साप्ताहिक सभा शुरू की ।

शनिवार शाम को बेंकर स्टेशन के पास सीमोर प्लेस में प्रह्लादभाई के आवास पर हुई सभाओंने कई भक्तों को आकर्षित किया । आध्यात्मिक धून और कीर्तन तथा एक भक्त द्वारा आध्यात्मिक प्रवचन के बाद सभा का समापन किया जाता था । उनके घर पर कई वर्षों तक वार्षिक अन्नकूट उत्सव भी मनाया जाता था ।

इस्लिंगटन में पहले मंदिर का उद्घाटन रविवार, जून 14, 1970 को योगीजी महाराज ने किया था । प्रभुदास लालजी यज्ञ के बाद नए मंदिर में कंपाला (युगांडा) में स्थापित मूर्तियों को लाए थे । समारोह में हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया ।

मंदिर का शिलान्यास समारोह 20 जुलाई, 1980 को प्रमुख स्वामी महाराज द्वारा किया गया और 1982 में मंदिर को खुला घोषित किया गया था ।

यही वह समय था जब प्रमुख स्वामी महाराज ने पहली बार एक पारंपरिक शिखरबंध मंदिर बनाने का विचार प्रस्तावित किया था, वहां लंदन में पांच बार आरती होती थी । नेसडेन में नए मंदिर के लिए एक अलग जगह पसंद की गई ।

स्वैच्छिक प्रयास

गिनीज बुकने ''नेसडेन मंदिर को 20वीं शताब्दी के आश्चर्यों में से एक'' के रूप में प्रशंसा की । 'रीडर्स डाइजेस्ट' ने मंदिर को 20वीं सदी के अजूबों में से चुना, क्योंकि यह 'स्वैच्छिक प्रयास का चमत्कार' एकमात्र था। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इसे स्वयंसेवकों द्वारा प्रेम और बंधुत्वभाव के साथ बनाया गया और रिकॉर्ड समय में इसे तैयार करने के लिए उन्होंने सचमुच पसीना बहाया ।

मंदिर परियोजना में भाग लेने के लिए स्वयंसेवकों ने अच्छी नौकरी छोड़ दी । कुछ ने साप्ताहिक छुट्टियां काट दीं । कुछने अपनी सारी बचत दे दी और अधिक देना चाहते थे । बच्चों ने अपनी बचत खाली करके कोष में अपना योगदान दिया । एक नवविवाहित जोड़े ने अपनी हनीमून विदेश यात्रा रद्द कर दी । उन्हें होटल से रिफंड मिला उसका मंदिर कोष में भुगतान किया, कई बच्चों ने अपने बड़ों के साथ नकाशी संगमरमर की पॉलिश की ।

एक भक्तने जो वादा किया था वह पैसा उसकी पत्नीने उसके आभूषण बेच कर दिए थे । यह प्रतिबद्ध दाताने दुकान से मजदूरी के रूप में मिले 600 पाउन्ड दान में दिए ।

मंदिर परियोजना के लिए धन उपलब्ध कराने के लिए सोने की जगह एल्युमिनियम ने ले ली यहां हर साल 35 मिलियन डॉलर मूल्य के एल्युमिनियम के बेकार डिब्बे दूर फेंके जाते हैं । वह बायोडिग्रेडेबल नहीं हैं । यह एक पर्यावरणीय समस्या थी । Alcan recyucling company ब्रिटेन की सबसे बड़ी recycling फर्म में से एक है । वे इस्तेमाल किए गए डिब्बे के पैसे देने को तैयार थे । यह धन जुटाने का एक अच्छा अवसर था इसलिये ''कैन कलेक्शन ड्राइव'' लान्च किया गया । भक्तों ने जल्द ही पुराने मंदिर के प्रांगण में डिब्बे के ढेर कर दिए । इतने बड़े पैमाने पर यह अपनी तरह का देश में पहला अभियान था । इसमें युवा व वृद्धोने उत्साहपूर्वक भाग लिया । कुणाल पटेल (11), प्रणय पटेल (11), तरुण पटेल (11) और ध्रुव कलां (11) ने ब्रिटिश टेलीकॉम पर्यावरण पुरस्कार प्राप्त किए । उनके स्कूल स्वामिनारायण हिंदू मिशन संडे स्कूल को एक हफ्ते में 1,50,000 डिब्बे इकट्ठा करने के लिए एक प्रमाण पत्र और 100 पाउंड का पुरस्कार मिला ।

- बर्मिंघम के सुखभाई (74) ने हर दिन तीन घंटे डिब्बे एकत्र किए । वे हर हफ्ते दो बैग भरके डिब्बे मंदिर में जमा करते थे वहां पहुंचने के लिए उन्हें दो बसें बदलकर जाना पड़ता था ।

- टीन इकट्ठे करने वालों में एक अपने पास चुंबक रखता था ताकि गलती से भी लोहे का टीन न आ जाए । लोग उसे सफाई कामदार समझ के भिक्षा भी दे देते थे । चिमनभाई अकेले ने 1,25,000 डिब्बे एकत्रित किए थे ।
- संग्राहकों के लिए यह कार्य हमेशा सरल नहीं था । एक बार एक फुटबॉल फेन ने स्वयंसेवक के सिर पर बीयर खाली कर दी । स्वयंसेवक ने 'धन्यवाद' कहा ।
- इन वर्षों के दौरान कुल सात मिलियन डिब्बे और 21 टन एल्युमिनियम फॉयल एकत्र किए गए । यूके में कोइ चैरिटी संगठन द्वारा यह सबसे बड़ा संग्रह था ।
- 'CARE' धन एकत्रित करने वाली परियोजना प्रमुख स्वामी महाराज के विचारों की भेंट है । यह 1994 में शुरू किया गया था । रंगीन ब्रोशर में नशामुक्ति अभियान, पर्यावरण-मित्रता, पारिवारिक मूल्यों और मूल्य-आधारित शिक्षा के लिए मंदिर के संदेशों और बारहमासी योगदान को व्यक्त किया । इन ब्रोशर बेहतर जीवन पद्धति के लिए दाताओं को भेंट किए गए । खराब मौसम और अस्वीकृति के बावजूद हरिभक्त घर-घर गए । उन्होंने पूरे स्थानीय ब्रिटिश समुदाय को ब्रोशर फिलॉसोफी के बारे में बताया । परिणाम स्वरुप बहुत बड़ा धन दान के स्वरूप में मिला ।
- कुशल और अकुशल स्वयंसेवकों ने मंदिर के निर्माण के लिए बहुत मेहनत की । मंदिर का निर्माण पूरा होने तक आराम उनके लिए एक दुर्लभ वस्तु बन गया । दिन-रात काम करने के बाद, वे कुछ घंटों की नींद लेते । फिर, वे स्नान करते, पूजा करते और अधिक काम के लिए मंदिर वापस जाते । इस तरह मंदिर तीन साल की अवधि में परत दर परत अस्तित्व में आया ।

भक्तों के समर्पण की अनूठी मिसाल

- छुट्टियों और सप्ताह के अंत में यूके के विभिन्न हिस्सों से स्वयंसेवकों के बड़े-बड़े समूह नेसडेन आने लगे थे । वे इतने अधिक थे कि उनके केंद्रों को निश्चित दिनों पर निश्चित समय देना पड़ता था । दुनिया के अन्य हिस्सों से भी स्वयंसेवक आए थे । भारतीयों के अलावा और भी लोग थे । भारतीय के साथ कई राष्ट्रीयताओं वाले और स्थानीय अंग्रेज भी शामिल हुए ।
- चंद्रकांतभाई पटेल (18) और चंद्रेश पटेल (18) फरवरी, 1993 में स्वयंसेवक के रूप में शामिल हुए। उन्होंने हर तरह का काम किया । 1994 से वे मंदिर स्थल पर ही रहे, ताकि वे अधिक सेवा प्रदान कर सकें । उन्होंने 25000 छेद ड्रिल किए । इसके लिए कोई ठेकेदार ने प्रति छेद एक पाउन्ड चार्ज किया होता । चंद्रकांतभाई कहते हैं, ''जब भी मैंने मंदिर देखा, मुझे स्वामीश्री की इच्छा की महत्ता का अहसास

हुआ और मेरा इससे लगाव बढ़ गया । मुझे लगता है कि पृथ्वी पर सबसे खूबसूरत जगह यह है, और यह सब स्वामीश्री के कारण है'' ।

- कंप्यूटर टेक्नोक्रेट जयेश पटेल (22) संगेमरमर की नकाशीदार टुकड़ों को पॉलिश करते थे । एक बार उनके घुटने पर एक ईंट गिरी । एक्स-रे से पता चला कि कुछ भी नहीं टूटा था । लेकिन एक आंतरिक चोट थी । उस दिन के बाद से स्वामीश्री जब भी उन्हें मिलते थे तो उनके पैर के बारे में पूछते थे ।
- अनूपसिंह वखतसिंह झाला (75) ने मई, 1993 से कार्य स्थल पर आना शुरू किया । वे टाइल्स को पॉलिश और साफ करते थे । ''मेरी बेटी ने 1991 में मुझे फोन किया और बताया कि लंदन में एक नया मंदिर बनने जा रहा है । मैं अफ्रीका में था और मेरी भारत जाने की योजना थी । लेकिन मैंने यहां आकर मदद करने का फैसला किया'' ।
- मंदिर दुनिया के लिए भारत के आध्यात्मिक योगदान की प्रदर्शन भी प्रस्तुत करता है ।

हिंदुत्व को समझना

मंदिर में एक स्थायी वैज्ञानिक प्रदर्शनी ''हिंदू धर्म की समज'' सनातन धर्म की महिमा और महानता को दर्शाती है । प्रदर्शनी मंदिर के भूतल पर 2000 वर्ग फुट से अधिक क्षेत्रफल में स्थित है । हमारा प्राचीन ज्ञान दृश्य प्रभावों, चित्रों, झांकी और पारंपरिक शिल्प कार्यों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है । प्रदर्शनी हिंदू धर्म की उत्पत्ति, इसकी मान्यताओं, महिमा और शिक्षा और इसके योगदान से संबंधित है । नचिकेता, श्रवण, रतिदेव, सीता आदि भारतीय संस्कृति के विख्यात आदर्शो को रंगीन 3-डी लघु डायरमा में प्रस्तुत किया गया है । इसमे हिंदू लोकाचार और संस्कृति के मूल मूल्यों को दर्शाया गया है जैसे :

- हिंदू धर्म की शुरुआत और यह कैसे फैला ।
- जीवन के एक तरीके के रूप में धर्म की प्रमुख मान्यताएं ।
- सभी भाषाओं की जननी संस्कृत की महिमा ।
- शिक्षा, गणित, खगोल विज्ञान, सर्जरी आदि में भारत का योगदान ।
- भगवान स्वामिनारायण का जीवन और दर्शन और आध्यात्मिक गुरु-परंपरा ।
- बीएपीएस की विश्वव्यापी सामाजिक- आध्यात्मिक गतिविधियां ।

गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस 2000 मिलेनियम संस्करण ने इसकी सराहना की गई है । पृष्ठ 36 पर, ज्ञान खंड के आर्किटेक्टस और मास्टर बिल्डर्स श्रेणी के तहत, मंदिर के संक्षिप्त विवरण के साथ लंदन के मंदिर की एक रंगीन तस्वीर शामिल की गई है । लेख

हिंदू धर्म को समझना – नीसडन मंदिर में गैलरी, लंदन

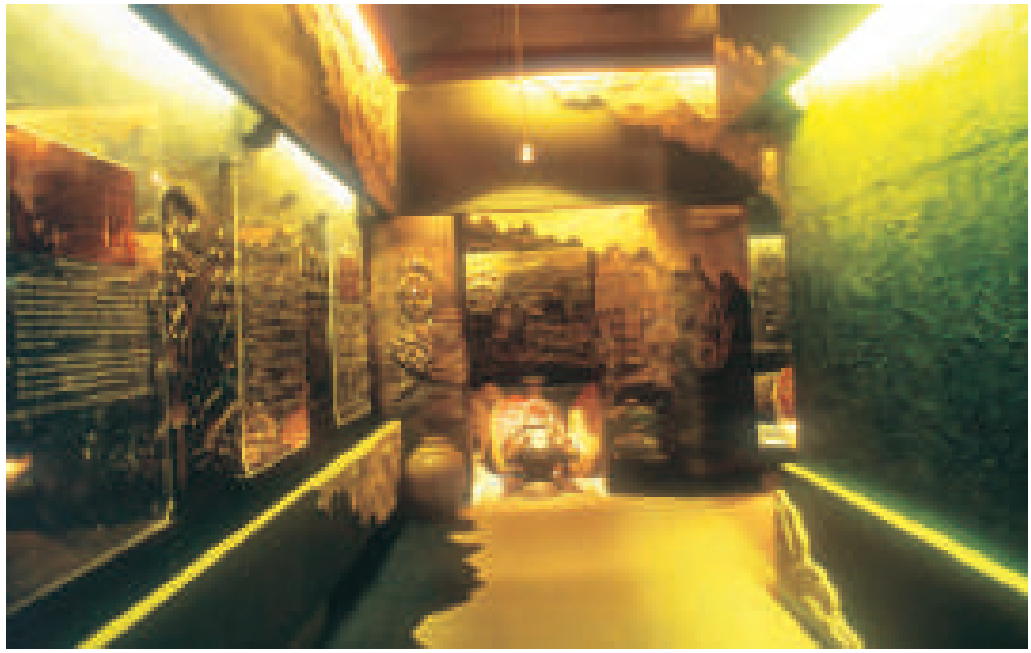

नेसडेन, लंदन में श्री स्वामीनारायण मंदिर

से पता चलता है कि भारत के बाहर ब्रिटेन के नेसडेन में श्री स्वामिनारायण मंदिर सबसे बड़ा हिंदू मंदिर है । यह एक 79 वर्षीय भारतीय साधु परम पावन प्रमुख स्वामी महाराज द्वारा बनाया गया है, और 2828 टन बल्गेरियाई चुना पत्थर और 2000 टन इटालियन संगमरमर से बना है । इसे 1526 मूर्तिकारो द्वारा तराशने के लिए भारत भेजा गया था । इस मंदिर को बनाने में 12 मिलियन पाउंड की लागत आई है ।

लंदन मंदिर एक दृष्टांत कहानी है । ऐसी ही कहानियां अक्षरधाम - गांधीनगर से शुरू होकर कोसंबा - तीथल-बुलसर, झाडेश्वर भरूच इत्यादि की है । प्रत्येक में साधुओं के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में एक साथ काम करने वाले समर्पित शिष्यों की कहानियां है । विदेशी भूमि में भी ऐसा ही है चाहे वह नैरोबी-केन्या, डरबन-दक्षिण अफ्रीका, ऑकलैंड-न्यूजीलैंड या न्यू जर्सी या संयुक्त राज्य अमेरिका में लॉस एंजिलस हो । अमेरिका में दो और अनोखे केंद्र शिकागो और ह्युस्टन, मंदिर बनाए गए हैं । ये मुख्य है, लेकिन इन प्रत्येक देश में और भारत के भीतर बड़ी संख्या में छोटे पूजा केंद्र भी है ।

अक्षरधाम - गांधीनगर

इस परियोजना की शुरुआत प्रमुख स्वामी महाराज ने की । गुजरात की राजधानी गांधीनगर में 1,00,000 वर्ग मीटर में फैला हुआ यह एक मेगा कॉपलेक्स है । और इसके दैनिक कार्य की देखरेख महंत स्वामी महाराज ने आत्मस्वरूप स्वामी के साथ की थी ।

गुजरात आने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए अक्षरधाम - गांधीनगर आकर्षण का एक प्रमुख केंद्र है। इसके निर्माण को पूरा करने में 5 साल से अधिक का समय लगा । हर साल दो मिलियन से अधिक लोग इसे देखने आते हैं ।

यह अनूठा सांस्कृतिक परिसर भगवान स्वामिनारायण को समर्पित है जिन्होंने शांति और सद्भाव को प्रेरित किया । स्मारक के निर्माण में हमारे देश के अन्य हिस्सों और विदेशों से आए हजारों भक्तों की सहायता और भागीदारी थी । इसमें युवा और वृद्ध दोनों की कार सेवा सबसे उल्लेखनीय विशेषता है । मेरा बेटा (लेखक का बेटा) इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे व्रजेश आत्मस्वरूप स्वामी के मार्गदर्शन में इसमें शामिल हुआ था। अन्य युवा जिन्होंने उनमें सामुदायिक सेवा के आध्यात्मिक मूल्यों को आत्मसात किया वे भी इन प्रयासों में शामिल हुए थे ।

प्राथमिक निर्माण सामग्री के रूप में राजस्थानी गुलाबी पत्थर का चयन किया गया और चतुर्भुज "शिखर" को अष्टकोणीय बनाया गया । मंदिर उत्तर मुखी है । जल निकायों के साथ विशाल खुला स्थान परिसर की सुंदरता को बढ़ाता है । इसका इवनिंग लाइट एंड साउंड शो निचिकेता और यमदेव के बीच संवाद सबसे लोकप्रिय है ।

Swaminarayan Akshardham, Gandhinagar

संयुक्त राज्य अमेरिका और केनेडा में नए मंदिर

2007 में दो नए पारंपरिक बीएपीएस स्वामिनारायण मंदिर एक टोरंटो में और दूसरा उत्तरी अमेरिका में अटलांटा में स्थापित किया गया है । टोरंटो मंदिर का उद्घाटन 22 जुलाई को हुआ था । कई अखबारों ने सुर्खियों में इसके वास्तुशिल्प की भव्यता और निर्माण की भावना की प्रशंसा की ।

'मंदिर और वास्तुकला का चमत्कार' केनेडाइ मीडिया गार्डियन ने प्रशंसा की; 'टोरंटो के लिए एक गहना' (टोरंटो सन), कनेडाई हिंदू मंदिर टोरंटो टेपेस्ट्री में खुद को बुनता है (ग्लोब एंड मेल); 1000 साल खड़े रहने के लिए बनाया गयाः टोरंटो का विशाल हिंदू मंदिर वास्तव में पुराने और नए का मिश्रण है, (द रिकॉर्ड); और 'शांति जो पत्थर में स्थापित है' (द स्टार) । ''कनेडा के प्रधानमंत्री जी स्टीफन हार्प्स ने इसे कनेडा का मील का पत्थर के रूप में वर्णित किया । वास्तुकला पर केनेडा के प्रतिष्ठित स्तंभकार, क्रिस्टोफर ह्युम ने टिप्पणी की, नया मंदिर, पिछले महीने पूरा हुआ, वह जटिलता में सबसे विस्तृत यूरोपीय कैथेड्रल को भी टक्कर देता है । ये इस देश में देखी जाने वाली सबसे असाधारण इमारतों में से एक है ।

अटलांटा मंदिर

24 अगस्त, 2007 को प्रमुख स्वामी महाराज ने अटलांटा में, संयुक्त राज्य अमेरिका में तीसरा BAPS स्वामिनारायण शिखरबंद मंदिर और उत्तरी अमेरिका में सबसे बड़ा मूर्ति प्रतिष्ठान किया । उस अवसर पर उन्होंने कहा, यह मंदिर केवल स्वामिनारायण संप्रदाय के लिए नहीं है, ''यह सभी के लिए है । जितने अधिक व्यक्ति मंदिर जाते है और सत्संग में भाग लेते है, सभी को उतनी ही अधिक आंतरिक शांति का अनुभव होता है । गीता, उपनिषद, भागवत, अन्य शास्त्रों, देवताओं और मंदिरों का सम्मान करें । अपने विश्वास में दृढ़ रहे और कभी भी दूसरों के विश्वास की आलोचना न करें'' ।

प्रमुख स्वामी महाराज ने सभी 140 शिल्पकारों को आशीर्वाद दिया । आप सभी ने सत्संग के कार्य में अपना योगदान दिया है और साथ ही साथ आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया है । आप सभी ने अच्छी सेवा की है । हम भगवान स्वामिनारायण से प्रार्थना करते हैं कि आप और आपके परिवार शांति प्राप्त करें और इसी तरह संस्था की सेवा करते रहें । आप सभी ने पूरे दिल से सेवा की है, भगवान आपकी रक्षा करेंगे ।

अक्षरधाम - रॉबिंसविले - न्यू जर्सी - यूएसए

प्रमुख स्वामी महाराज का यह एक और बड़ा योगदान है और महंत स्वामी महाराज की

Swaminarayan Akshardham, New Delhi

प्रत्यक्ष देखरेख में सावधानीपूर्वक नियोजित और निस्पन्न कि गई एक मेगा परियोजना है । अब निर्माण अंतिम चरण में प्रवेश कर गया है । अलंकृत नकाशीदार 'अमलक' पत्थर 'महा-शिखर' के शीर्ष पर आरोहण के लिए तैयार है और अक्षरधाम शिखरबंध महामंदिर के शीर्ष पर स्थित रहेगा । महंत स्वामी महाराज ने 25 अक्टूबर, 2020 को नेनपुर से अक्षरधाम, रॉबिंसविले के लिए सुशोभित अम्लक पत्थर का वैदिक पूजन अनुष्ठान किया । पूरी 'महापूजा' की विधि दुनिया भर के सभी भक्तों के लिए baps.org पर लाइव प्रसारित की गई । रॉबिंसविले के अक्षरधाम में अनुष्ठान 25 अक्टूबर की सुबह तड़के प्रसारण किया गया था । नेनपुर में जीवंत गतिशील प्रसारण अक्षरधाम द्वारा किया गया था । महंत स्वामी महाराज ने आशीर्वाद दिया ''संप, भाईचारा और एकता के साथ परियोज ना की जा रही है'' ।

स्वामीश्री की पूजा के समांतर, रोबिंसविले में साधु यज्ञवल्लभदास और अन्य साधुओं द्वारा महापूजा समारोह भी किया गया था । हजारों भक्तों, बच्चों और युवाओं ने अपने घर में महंत स्वामी महाराज के साथ मिलकर पूजा-अर्चना की । उनके आशीर्वाद से पूजा समारोह चरम पर पहुंच गया । प्रोजेक्ट संप भाईचारा और एकता के साथ किया गया है । यहां दुनिया भर से लोग आएंगे और प्रेरणा लेंगे । आप सभी ने तन, मन और धन से यज्ञ किया है । यह वास्तव में यह आश्चर्यजनक है कि कोविड महामारी के कारण आर्थिक तंगी के बावजूद भक्त दान कर रहे हैं । श्रीजी महाराज अपने 'मुक्त' के साथ पृथ्वी पर आए और उनके माध्यम से 'सेवा' की सिद्धि हो रही है । आप 'मुक्त' की तरह है, आपने 'मोक्ष' प्राप्त किया है, और वस्तुतः जो कोई भी आपके दर्शन करेगा वह भी 'मोक्ष' प्राप्त करेगा ।

स्वामिनारायण नगर - राजकोट

महंत स्वामी ने प्रमुख स्वामी महाराज के 97 जन्मदिन का उत्सव 4 दिसंबर, 2018 राज कोट में बड़े पैमाने पर प्रेरित किया था । इसमें -

- 500 एकड़ - 200 हेक्टर की विशाल भूमि पर पांच कलात्मक मंदिर और विशाल स्वागत द्वार के साथ प्रदर्शनी और कार्यक्रम हुआ था । इसके साथ 6 प्रदर्शनी क्षेत्र और एक लाइट एंड साउंड शो जिसमें 35000 लोग बैठ सकते हैं उसकी व्यवस्था की गई । इसमें 22000 से अधिक स्वयंसेवकों ने लाखों दर्शको की सेवा की । 8800 से अधिक छात्रों ने भी मुलाकात ली । सामुदायिक भागीदारी के साथ एक महायज्ञ का आयोजन किया गया ।
- इस अवसर पर 35 युवकों को महंत स्वामी ने भागवती दीक्षा दी । ये नये दीक्षित साधुओ में से अधिकांश भारत और विदेश के उच्च शिक्षित युवा थे ।

राजकोट में प्रमुख स्वामी महाराज की ९७वीं जयंती समारोह

नवसारी में नया मंदिर

नवसारी मंदिर सबसे पुराने 'शिखरबंध' मंदिर में से एक है । जनवरी 2020 में नए नवसारी मंदिर का उद्घाटन किया गया । यह मंदिर 11 एकड़ में है । इसकी मुख्य विशेषताएं हैं-

- इसे राजस्थान के मार्बल से बनाया गया है
- 3 मुख्य और 2 माध्यमिक शिखर
- 2 मुख्य 'घुम्मट'
- 17 माध्यमिक गुंबद
- 19 स्वर्ण कलश
- ऊंचाई - 82 फीट, लंबाई - 205 फीट, चौड़ाई - 188 फीट । पोडियम का आकार - 40 x 40 फिट ।
- 222 जटिल नकाशीदार स्तंभ और 150 कमान
- 153 देवी देवताओं और प्रेरक भक्तों की मूर्तियां
- 70000 घन फीट पत्थरों का इस्तेमाल किया गया ।

महंत स्वामी ने 20,000 से अधिक भक्तों की उपस्थिति में 30 जनवरी, 2020 को मूर्ति प्रतिष्ठा विधि की।

प्रमुख स्वामी जयंती समारोह - मुंबई

प्रमुख स्वामी महाराज का 18 वा जन्मदिन समारोह 4 दिसंबर, 2019 को मुंबई में महंत स्वामी महाराज की उपस्थिति में आयोजित किया गया था । इसमें वाशी - मुंबई के डी. वाय. पाटिल स्टेडियम में भारत के और बाहर के 7200 से अधिक भक्तों ने भाग लिया । श्री अमित शाह - केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा - प्रमुख स्वामी महाराज और संतों ने धर्म और आध्यात्मिकता में समाज की श्रध्धा को फिर से जीवंत किया है ।

महंत स्वामी महाराज ने कहा, प्रमुख स्वामी महाराज निष्पाप मन वाले दिव्य संत थे । उनका पूरा जीवन लोगों के लिए प्रेम और करुणा सभर था । वे सरल थे, और उन्होंने सभी को छुआ । उन्होंने अनगिनत लोगों को धार्मिकता और ईश्वर की भक्ति के मार्ग पर निर्देशित किया और कई महान कार्य पूरे किए ।

दुबई मंदिर

महंत स्वामी महाराज ने अबु धाबी में मंदिर की स्थापना के लिए प्रेरणा दी । ब्रूमविहारी स्वामी इसकी देखरेख कर रहे हैं । उन्होंने यह सुझाव अरब अमीरात-यूएई के शेखों को दिया और उन्हें यह विचार पसंद आया। उन्होंने राजधानी के अबु मुरीखा इलाके में जमीन दी और काम शुरू किया गया । भारत और संयुक्त अरब अमीरात में हजारों कार्यकर्ता अबु धाबी में प्रथमवार पारंपरिक शिखरबंद मंदिर की नींव रख रहे हैं । यह मंदिर सभी धर्मों के लोगों को समाज में सद्भाव की ओर आकर्षित करेगा और कई धर्म और उसके अनुयायी सबको स्वीकार करेगा । राजस्थान में मूर्तिकला का कार्य प्रगति पर है । प्राचीन कला और स्थापत्य को पुनर्जीवित करने वाला यह अनूठा मंदिर होगा । मंदिर सभी धर्मों के लोगों को सहिष्णुता, शांति और सद्भाव के हिंदू जीवन शैली को समझने के लिए स्वागत करेगा । संयुक्त अरब अमीरात में यह मंदिर 2023 तक तैयार होने की उम्मीद है । यह मंदिर परिसर 55000 वर्ग मीटर के विशाल क्षेत्र पर है और अतिरिक्त 53000 वर्ग मीटर जल्द ही आवंटित किए जाने की उम्मीद है । इसमें एक बड़ा एम्फीथिएटर, एक गैलरी, एक पुस्तकालय, एक फूड कोर्ट, और जिसमें 5000 लोग बैठ सके ऐसा एक सामुदायिक हॉल होगा । साथ ही बगीचे, बच्चों के खेलने का क्षेत्र, हेलीपैड इत्यादि भी होंगे । इसमें सात शिखर एक महत्वपूर्ण आकर्षण होंगा जो संयुक्त अरब अमीरात के सात अमीरात का प्रतिनिधित्व करते हैं । स्वामी ब्रह्मविहारी कहते हैं, मंदिर संयुक्त अरब अमीरात के सभी धर्मों और संस्कृतियों के समावेश और सहिष्णुता के मूल्यों का प्रतीक

होगा । प्रत्येक शिखर में देवताओं की कहानियां होगी । मंदिर के सामने की दीवार और सीढ़ियों पर दुनिया के विभिन्न देशों की सांस्कृतिक और नैतिक कहानियां होगी । इस पर नकाशी गई वनस्पति और जीव प्रकृति भगवान के उपहार का प्रतिनिधित्व करेंगे । यह भारत, संयुक्त अरब अमीरात और दुनिया के अन्य देशों के पौधों और जानवरों के बीच सद्भावपूर्ण सहअस्तित्व को व्यक्त करेंगे ।

20 अप्रैल, 2019 को महंत स्वामी महाराज द्वारा भव्य शिलान्यास समारोह किया गया । इसमें सभी भारतीय समुदाय और अमीरात के नेताओं और सभी स्थानीय स्तर के विदेशी राजनयिकों ने भाग लिया । ब्रह्मविहारी स्वामी और महंत स्वामी महाराज ने – महामहिम खलीफा बिन जायद अल नाहयान और क्राउन प्रिंस शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान और भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को धन्यवाद दिया ।

ब्रह्मविहारी स्वामी ने समझाया– मंदिर एक ऐसा वातावरण और मूल्य स्थापित करेगा जो मानवता के उत्सव का प्रतिनिधित्व करेगा । उन्होंने अमेरिकी विचारक डॉ. डेविड फ्रैंक को उद्धत किया; ''अब तक BAPS ने दुनिया भर में 1200 मंदिर बनाए हैं और वे सभी प्रेरणादायक हैं । अक्षरधाम का आपका ये काम पीढीयों के लिए प्रेरक रहेगा । अबु धाबी में यह मंदिर सांस्कृति समन्वय से सभ्यतागत होगा'' ।

महंत स्वामी महाराज ने निर्माण का 'पूजन' किया और निर्माण की देखरेख करने वाले इंजीनियरों को आशीर्वाद दिया । स्वामीश्री ने 'निधिकुंभ' और मुख्य आधारशिला को स्थापित किया ।

महंत स्वामी महाराज ने सभी को आशीर्वाद दिया और कहा 'यह हॉल शांति, प्रेम और सद्भाव से भरा हुआ है । सहिष्णुता और सद्भाव के लिए समर्पित एक महान इशारा है । इससे सभी मानवतावादियों को लाभ होगा । मरुभूमि में सचमुच यह एक स्वर्ग, ओएसिस होगा ।

युगांडा के कंपाला में महंत स्वामी महाराज राष्ट्रपति योवेरी कागुटा मुसेवेनी के साथ

श्री स्वामीनारायण मंदिर - नवसारी

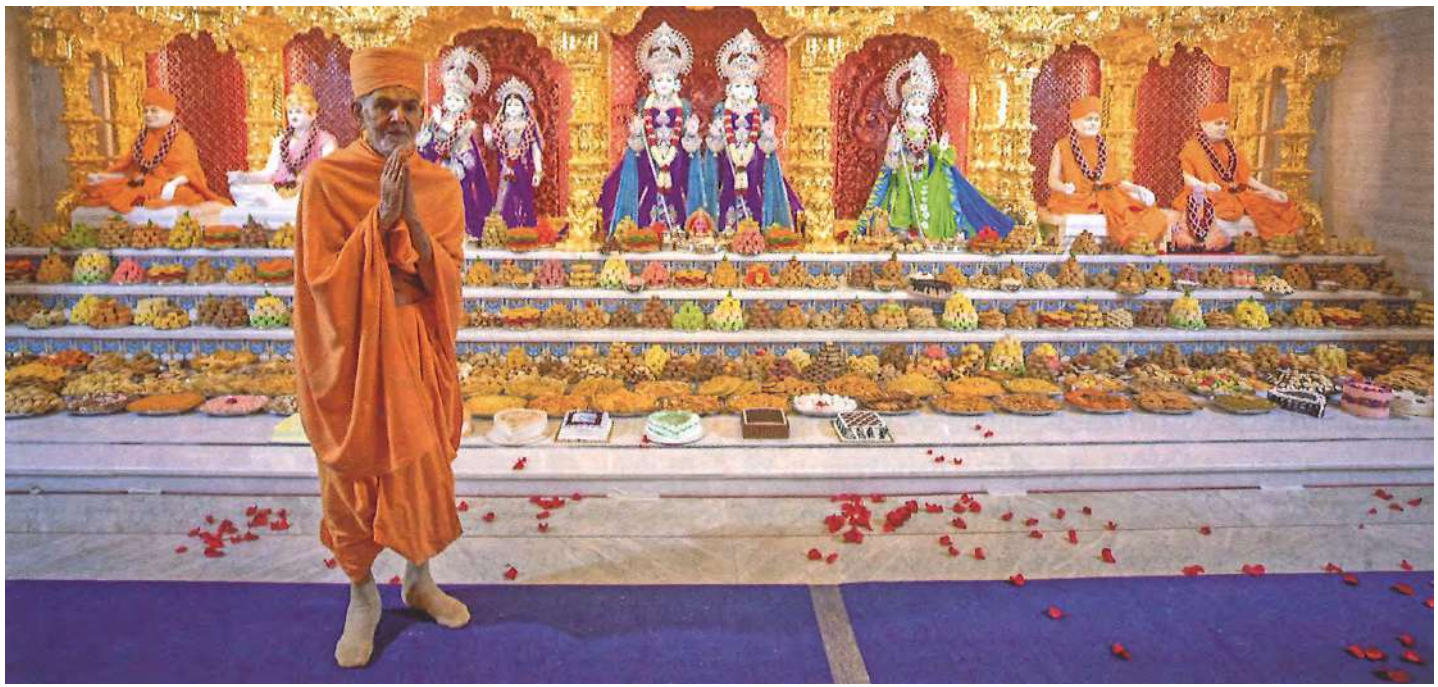

परम पूज्य श्री महंत स्वामी महाराज

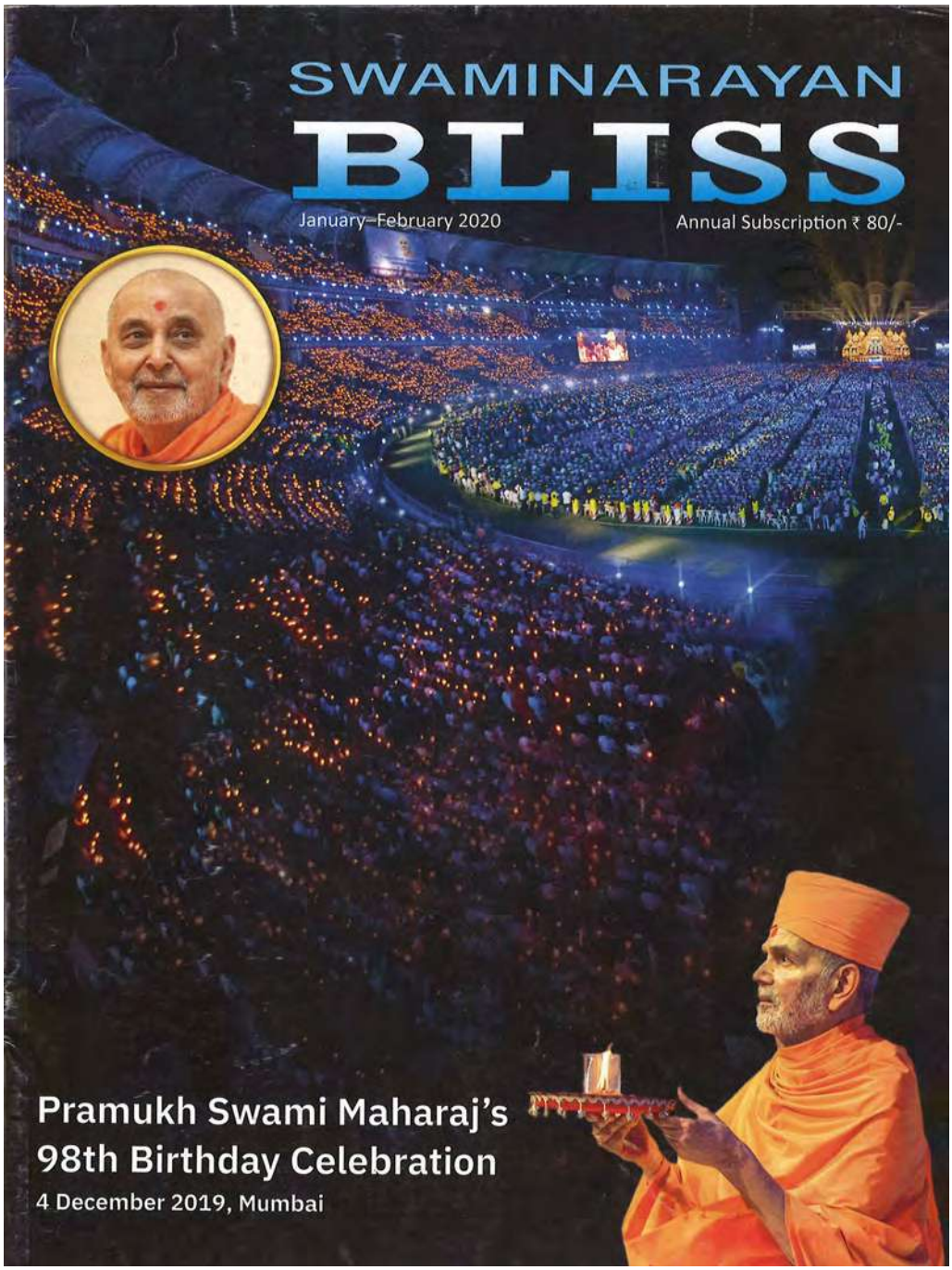

BAPS प्रकाशन BLISS का कवर पेज प्रमुख स्वामी महाराज के कवरिंग 98वीं जयंती समारोह

स्वामीनारायण मंदिर, नियासे में ब्रिटिश प्रधान मंत्री बोरिस जॉनसन

नासिक में शिखरबंध BAPS मंदिर का पहला स्तंभ रखने का ऑनलाइन समारोह

प्रमुख स्वामी स्मृति मंदिर, सारंगपुर के लिए मूर्ति प्रतिष्ठा विधि और शिलान्यास पूजा

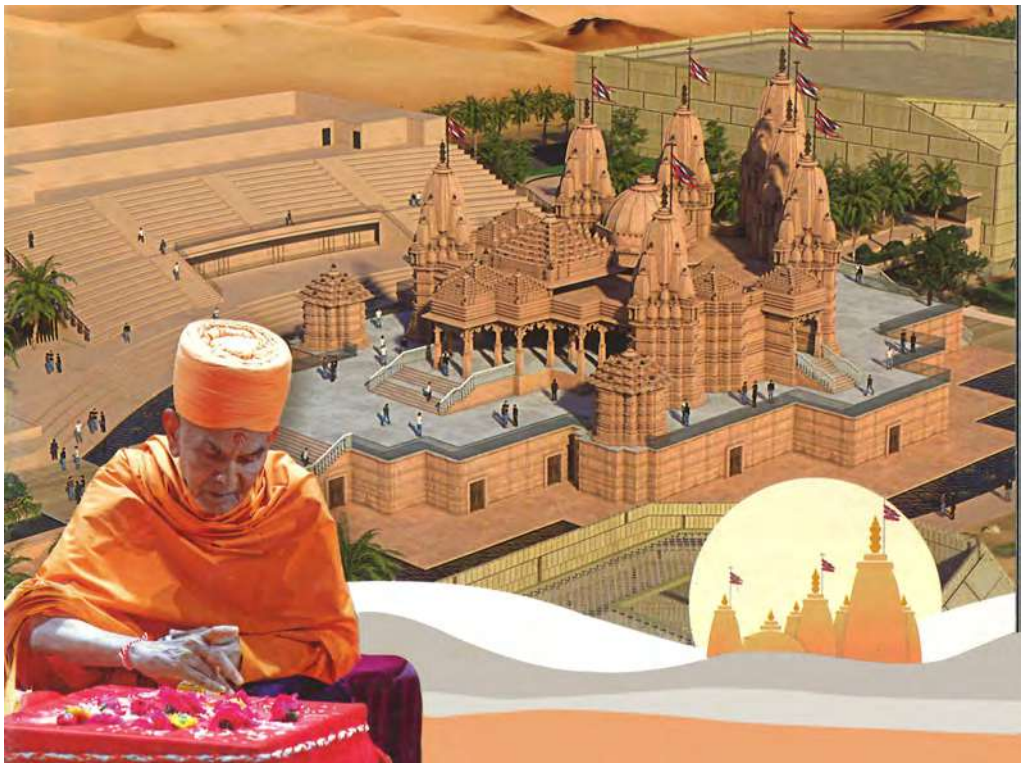

बीएपीएस मंदिर, अबू धाबी में महंत स्वामी महाराज

दुबई DWC एयरपोर्ट पर हेच.ई.शेख नयन अल नाहयान ने स्वामीजी का स्वागत किया

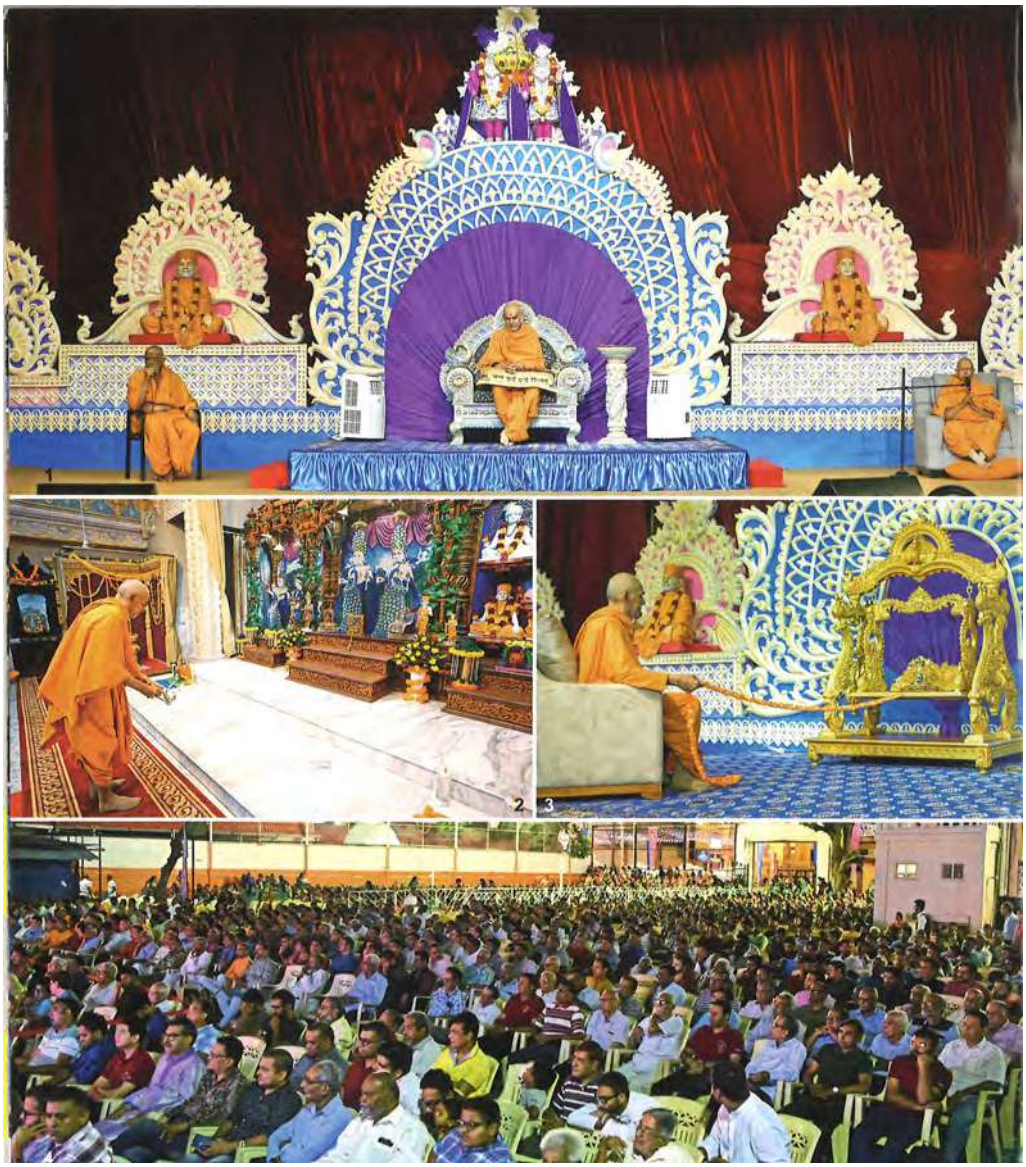

महंत स्वामी महाराज की उपस्थिति में जन्माष्टमी समारोह

24 अगस्त 2019, दार-एस-सलाम, तंजानिया

1. स्वामीश्री की उपस्थिति में, पूज्य त्यागवल्लभ स्वामी (दाएं) सभा को संबोधित करते हैं ।
2. स्वामीश्री बीएपीएस मंदिर, दार-ए-सलाम में आरती करते हैं ।
3. स्वामीश्री ने जन्माष्टमी सभा के दौरान ठाकोरजी को झूला झूला झुलाया ।
4. उत्सव सभा के दौरान भक्त ।

योगीजी महाराज जयंती जून २०२१

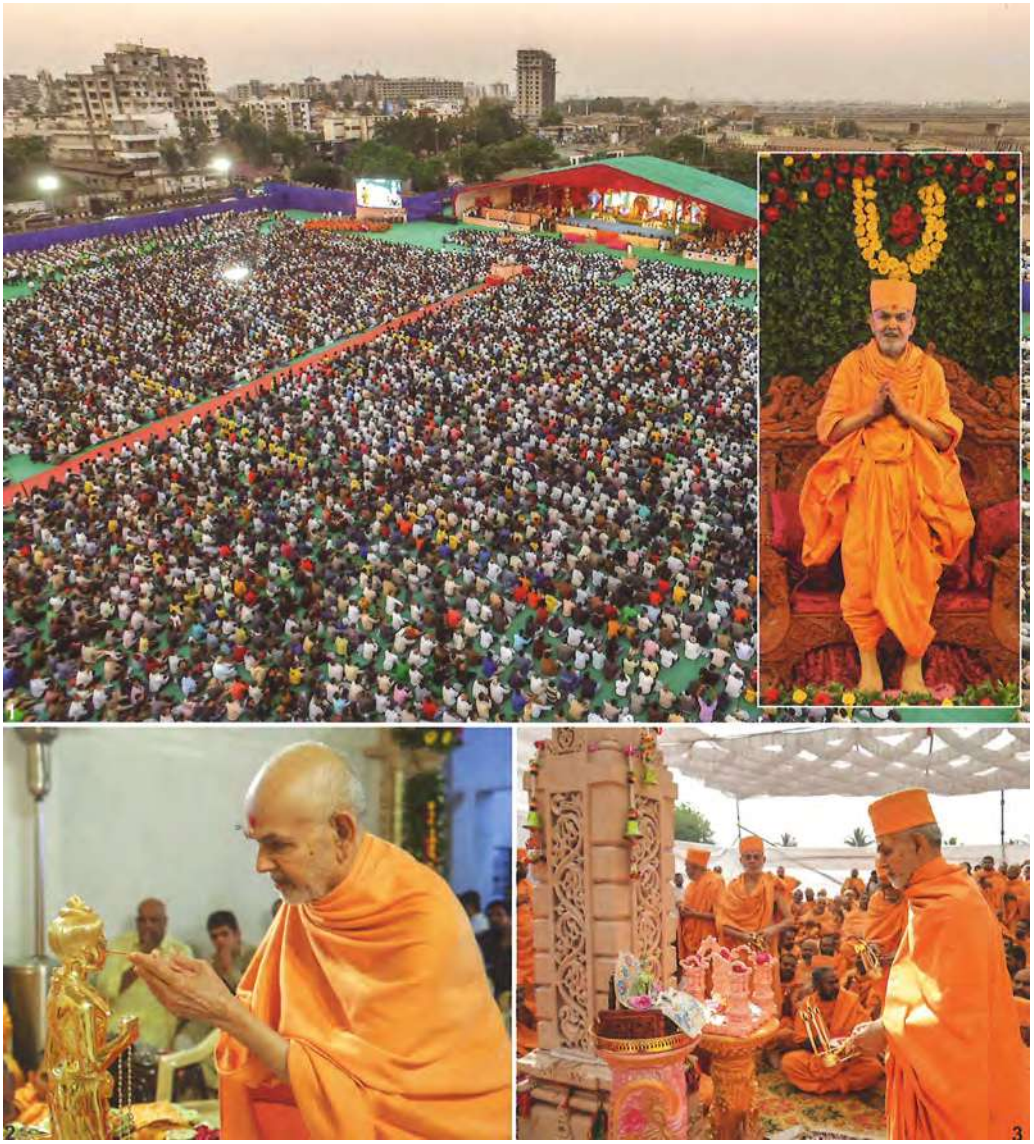

MAHANT SWAMI MAHARAJ'S VICHARAN : SURAT, MAHELAV & NASIK
January - February 2019

1. 14 जनवरी 2018 ग्रैंड उत्तरायण (झोली) उत्सव सभा, सूरत, (इनसेट- महंत स्वामी महाराज ने झोली कॉल, 'स्वामीनारायण हरे, सच्चिदानंद' की सराहना की । प्रभु...')
2. 31 जनवरी 2019स्वामीश्री नई नीलकंठ वर्णी अभिषेक मूर्ति की मूर्ति-प्रतिष्ठा करते हैं और गुरु परम्परा मूर्तियाँ, महलाव, ।
3. 12 फरवरी 2019 स्वामीश्री ने नासिक, महाराष्ट्र में BAPS द्वारा स्थापित मंदिर के निर्माण के प्रथम स्तम्भ का पूजन एवं आरती की ।

ભગવાન સ્વામિનારાયણના પ્રાકટ્યોત્સવ પર્વે ઑસ્ટ્રેલિયા ખાતેથી હરિભક્તોને બળભર્યો પત્ર લખીને પરમ પૂજ્ય મહંત સ્વામી મહારાજે પાઠવેલાં આશીર્વચનો...

HH MAHANT SWAMI MAHARAJ
(Swami Keshavjivandas)

સ્વામી-શ્રીજી
પ. પૂ. પ્રમુખ સ્વામી

Sydney (Australia)
૨૭·૩·૧૮
મંગળવાર

શ્રીહરિ-જયંતી ની ભેટ

આપણી B.A.P.S. સંસ્થામાં બધે મોરચે ડંકો વાગી રહ્યો છે. તેમાં પણ પૂ. ભદ્રેશ સ્વામી ના મોરચે સર્વોપરી ડંકો વાગી રહ્યો છે. શાસ્ત્રીજી મહારાજ કહેતા કે આપણે દેવળે ઘંટ વાગશે તે પ્રત્યક્ષ અનુભવાય છે. ઉધારાની વાત નથી. આમ તો ખરું જોતા, બધે મોરચે અક્ષર-પુરુષોત્તમ ની વાત છે. બધા મોરચા અક્ષર-પુરુષોત્તમ ના જ છે. આપણી વાત સાચી છે, સંસ્થા સાચી છે, સત્સંગ સાચા મળ્યા છે. તો મહારાજ સ્વામી પણ ૨૦૦ વખત સાચા છે. અને હોય જ ને!

ધામ, ધામી અને મુક્તો જ સાચા છે. આ લોકમાં એકાંતિક ભક્તો સાચા છે. બીજા બધા સાચા ખોટે રહ્યા છે અને અમોજ કારણ આવા ભાગ્ય, દિવ્ય સત્સંગ મળ્યો છે, સર્વોપરી આ સત્સંગની વાત છે.

જેને જેને સત્સંગ મળ્યો છે તેના ભાગ્યનો પાર આવે એમ નથી.

માટે સત્સંગ અતિ દૃઢ કરીને રાખવો. મહારાજે કહ્યું છે — માટે સત્સંગ સાચવવાનું જતન કરવું. સાધુ કેશવજીવનદાસ ના જયશ્રી સ્વામિનારાયણ

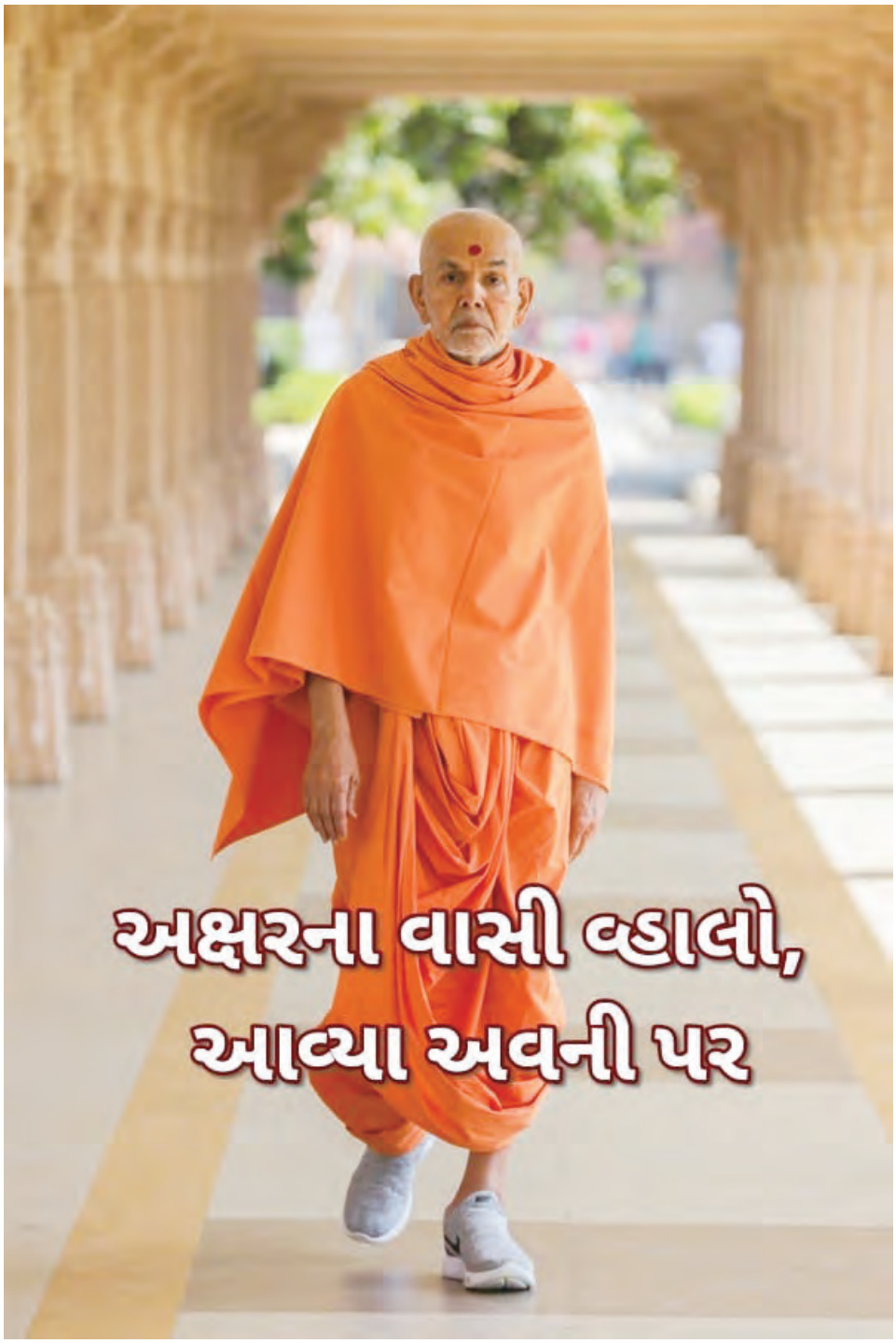
અક્ષરના વાસી વ્હાલો,
આવ્યા અવની પર

महंत स्वामी महाराज 'बातें'

एक आकांक्षी ने महंत स्वामी महाराज से पूछा, ''आध्यात्मिक मार्ग में सबसे बड़ी बाधा क्या है'' ?

''सांसारिक दृष्टिकोण (लौकिकभाव) [भगवान और सत्पुरुष के प्रति]'' ।

''ऐसा क्या है जो किसी को इश्वरीय दृष्टिकोण ('दिव्यभाव') रखने में बाधा डालता है ?''

''व्यक्ति की मूल वृत्तियां ('स्वभाव') ।''

''क्या करना चाहिए ताकि किसी के स्वभाव में रुकावट न आए ?

''भगवान और उनके भक्तों में विश्वास, महिमा और प्रभुभाव रखना चाहिए ।

महंत स्वामी महाराज ने स्पष्ट रूप से आध्यात्मिक पथ पर सबसे बड़ी बाधा –लौकिक भाव को दूर करने का मार्ग बताया ।

गल संयुक्त परिवार पर 'राजिपो'

दिव्यतनय स्वामी ने एकझूट रहने वाले परिवार के लिए महंत स्वामी महाराज की प्रसन्नता ''राजिपो'' के एक प्रसंग को याद किया । उन्होंने कहा, 2012 में महंत स्वामी महाराज ने इंदौर के सत्संग मंडल का दौरा किया था । यहां दिलीपभाई राठौड़ नाम का एक भक्त अपने 35 सदस्यों के विशाल परिवार के साथ रहता था । चुंकि उनका पुराना घर छोटा था, इसलिए दिलीपभाई ने तीन मंजिला बड़ा घर खरीदा था । महंत स्वामीजी के वहां जाने की व्यवस्था की गई थी ।

''उस समय संस्था द्वारा यह निर्णय लिया गया था कि (महंत स्वामीजी की उम्र बढ़ने के कारण) वे केवल किसी भी घर के भूतल पर जाकर उसे पवित्र करेंगे । हालांकि, अगर घर में लिफ्ट हो तो वे उपरी मंजिलों पर जा सकते थे ।

''दिलीपभाई के घर में लिफ्ट नहीं थी । वे महंत स्वामी जी के भूतल के दौरे से खुश थे । हालांकि, जब महंत स्वामीजी ने परिवार की एकता और सद्भाव के बारे में जाना, तो कहा, 'आइए ऊपर जाएंगे'। साधुओं ने कहा कि लिफ्ट नहीं है । स्वामीश्री ने उत्तर दिया कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता । फिर साधुओं ने कहा कि दिलीपभाई ने इस बात पर जोर नहीं दिया है कि वे ऊपरी मंजिलों को पवित्र करें । फिर भी, स्वामीश्री

तीनों मंजिलों पर गए, सभी कमरों और छत पर गए । जब मैंने महंत स्वामीजी से पूछा, 'उन्होंने इतना तनाव क्यों लिया ?' स्वामीजी ने उत्तर दिया, 'उनकी एकता को देखो । वे सब कितने एकझूट है !'

सभी आमंत्रित को पारिवारिक एकता के महत्व का एहसास हुआ, इससे आंतरिक आशीर्वाद और सत्पुरुष का 'राजिपो' अर्जित होता है ।

एक सरल संवाद

एक आध्यात्मिक आकांक्षी और स्वामीश्री के बीच एक प्रेरक संवाद के अंश इस प्रकार है

स्वामीश्री : कुछ देशों में शाही परिवार होते हैं, वैसे ही हमारा एक दिव्य परिवार है । लोग दूसरों के स्वभाव को देखते हैं, जिसे अनदेखा किया जाना चाहिए । हर कोई परमात्मा है । प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए लेकिन सहन करना चाहिए । दूसरों को मुंहतोड़ जवाब देकर कोई खुद को कैसे संवार सकता है ?

आकांक्षी : मैं आपसे कैसे जुड़ सकता हूं ?

स्वामीश्री : बातचीत और आध्यात्मिक जुड़ाव के माध्यम से ।

आकांक्षी : मैं ऐसा कैसे कर सकता हूं, हो सकता है कि हर समय आपके साथ रहना संभव न हो ?

स्वामीश्री : मन के द्वारा मानसिक संगति से ।

आकांक्षी : क्या इसका मतलब यह है कि मानसिक जुड़ाव के माध्यम से आप हमें सुनते हैं और हमेशा हमारे साथ रहते हैं ?

स्वामीश्री : हां ।

आकांक्षी : जब हम मानसिक रूप से आपसे पूछते हैं तो आप कैसे उत्तर देते हैं ?

स्वामीश्री : एक बार जब आप इसे करना शुरू कर देंगे तो आप को भीतर से उत्तर मिलेंगे ।

आकांक्षी : आप कौन हो ?

स्वामीश्री : सत्पुरुष । हमें यह स्पष्ट समझ है कि हमारे पास महाराज, श्री स्वामी और सत्पुरुष की संगति है।

स्वामी बापा के साथ एकता

हितेश पटेल और दीपेन पटेल ने स्वामीश्री को बताया, आज 13 तारीख है, और आज

के दिन और समय के दस महीने बाद प्रमुख स्वामी महाराज "अक्षरधाम" के लिए चले गए थे । इसके बाद, हमने उन्हों से प्रार्थना की थी, 'क्या हम आपके साथ बंध सकते हैं ।' और हम आपके साथ इस तरह से बंधे हैं कि जब हम स्वामी बापा का ध्यान करते हैं तो आप शीघ्र ही स्वाभाविक रूप से हमारे मन में प्रकट होते हैं । हम अब भी वही आनंद अनुभव करते हैं जो हमने स्वामी बापा के साथ किया था । हमें लगता है कि बापा नहीं गए हैं ।

स्वामीश्रीने अपनी उंगली अपनी छाती की ओर इशारा किया, और बोले "एना एज छे [वे और मैं एक ही हैं] ।"

आत्मिक शक्ति

स्वामीश्री का एक विशेषज्ञ द्वारा चिकित्सकीय परीक्षण किया गया था । डॉक्टर ने दवा लिखी और कहा, "इस दवा को लेने से आपका दर्द दूर होगा और आपको खुशी होगी ।"

स्वामीश्री ने जवाब दिया, मैं हमेशा खुश रहता हूं । फिर उन्होंने आगे कहा, मैंने अपनी समस्या सिर्फ इसलिए जाहिर की क्योंकि मुझे ऐसा करने के लिए कहा गया था । नहीं तो ऐसे ही चलता रहता था । वास्तव में, मुझे कोलकाता से ही पिछले दो महीनों से दर्द हो रहा है ।

आत्मस्वरूप स्वामी ने डॉक्टर से पूछा, "यदि वे आपकी निर्धारित दवा नहीं लेंगे तो क्या होगा ?"

डॉक्टर ने उत्तर दिया, "तब उसे गंभीर दर्द का अनुभव होने की संभावना है ।"

स्वामीश्री ने खुलासा किया, "मेरा जीवन आत्मा की ताकत के कारण चल रहा है ।"

डॉक्टर ने स्वामीश्री की आंतरिक शक्ति की प्रशंसा करते हुए कहा, "आप भीतर से बहुत मजबूत हैं । नहीं तो इस तरह की बीमारी में किसी और को बर्दाश्त करना बहोत मुश्किल होता । मैंने लोगों को इस बीमारी के कारण रोते देखा है ।"

जब इस प्रसिद्ध डॉक्टर से उनकी फीस के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने जवाब दिया, "मुझे कोई शुल्क नहीं चाहिए । मैं केवल स्वामीजी का आशीर्वाद चाहता हूं ।"

डॉक्टर के साथ संवाद ने स्वामीश्री की सहनशीलता, आत्मिक शक्ति और इस तथ्य का खुलासा किया कि वह हमेशा खुश रहते हैं ।

असाधारण विनम्रता और महिमा

प्रातः काल में स्वामी श्री ने घनश्याम महाराज की मूर्ति का अभिषेक किया और रॉबिंसविले

के अक्षरधाम में परमहंस मंडप में निर्माणाधीन प्रथम स्तंभ के आधारशिला का पूजन किया, स्वामीश्री सत्संग सभा में उत्सव मनाने पहुंचे । फाइबरग्लास से बने चार स्तंभ प्रत्येक में परमहंस की मूर्ति के पृष्ठभूमि में मुख्य मंच पर ठाकोरजी और स्वामीश्री के आसन-खुर्शी रखे गये थे ।

जब स्वामीश्री एक स्तंभ के पास आए तो उस पर स्थित परमहंस थोड़ा हिले । ऊपर देखते ही परमहंस मुस्कुरा दिए । स्वामीश्री चकित रह गए और उन्होंने परमहंस निश्कुलानंद स्वामी के रूप में तैयार एक बच्चे को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की । परमहंस के हाथ में एक फूल की माला थी । उन्होंने स्वामीश्री को माला से सम्मानित करने के लिए अपना हाथ बढ़ाया तो स्वामीश्री ने ठाकोरजी को अपने पास लाने के लिए कहा ताकि उन्हें पहले माला अर्पित की जाए । हालांकि, किसी ने सूचित किया कि माला पहले ही ठाकोरजी को अर्पित की गई है । फिर स्वामीश्री कुछ कदम आगे जढे और बालक निश्कुलानंद स्वामी ने उन्हें माला पहनाई। फिर, स्वामीश्रीने परमहंस के चरण स्पर्श करने के लिए अपने हाथ फैलाए । जब कि बच्चा अपने चेहरे से 'नहीं' का इशारा करता रहा, स्वामीश्री ने श्रद्धापूर्वक उनके पैर छुए । स्वामीश्री दूसरे स्तंभ पर गए, जिसमें मुक्तानंद स्वामी परमहंस के वेश में एक अन्य बच्चे को बिठाया था । स्वामीश्री ने श्रद्धापूर्वक उनके भी चरण छुए ।

इस अलौकिक नजारे से पूरी सभा आनंदित हो उठी । श्रीजी महाराज के परमहंस के रूप में सजे-धजे बच्चों के लिए स्वामीश्री की महिमा आत्मिय आनंद देने वाली थी । सभा के समापन पर स्वामीश्री ने दोनों बालक परमहंस को माला पहनाई और फिर उनके पैर छुए ।

स्वामीश्री, अच्छी तरह से जानते थे कि परमहंस इस अवसर के लिए तैयार बच्चे थे, फिर भी उन्होंने भगवान स्वामिनारायण के वरिष्ठ परमहंसों की महिमा और सम्मान के कारण विनम्रतापूर्वक उनके पैर छुए । सभी भक्त स्वामीश्री की विनम्रता और भगवान के शिष्यों के लिए उनके आदर से अभिभूत थे ।

गुरु के मार्ग पर चलते हुए

गोंडल में अक्षर देरी की 150 वीं वर्षगांठ समारोह के भाग रूप त्यौहार के मैदान में एक भव्य महापूजा का अनुष्ठान आयोजित किया गया था । महापूजा के समापन में स्वामीश्री आरती करने के लिए खड़े हुए ।

आरती के लिए खड़े होने की स्वामीश्री की रीत कई अवसरों पर देखी गई है । स्वामीश्री से सभी अवसरों पर बैठे रहने और आरती करने का अनुरोध किए जाने के बावजूद, वे हमेशा खड़े रहे हैं ।

ब्रह्मवत्सल स्वामी ने स्वामीश्री से पूछा, "स्वामी, आप आरती करने के लिए क्यों खड़े हैं ? क्या यह ठाकोरजी से आदर के लिए है ?"

स्वामी श्री ने उत्तर दिया, स्वामी बापा प्रमुख स्वामी महाराज हमेशा आरती करने के लिए खड़े रहेते थे। इसलिए मैं आरती करने के लिए खड़ा होता हूं ।

स्वामीश्री अपने गुरु द्वारा प्रचलित भक्ति परंपरा का पालन करते हैं ।

एक विकलांग भक्त

स्वामीश्री अपने दैनिक पूजा स्थल से कार से गोधरा के बीएपीएस मंदिर लौट रहे थे । फुटपाथ पर अनेक श्रद्धालु दर्शन के लिए इंतजार कर रहे थे । स्वामीश्री उन्हें देखकर आशीर्वाद दे रहे थे, तब उन्होंने एक विकलांग भक्त को हाथों में फूल लिए देखा । स्वामीश्री ने उस भक्त से मिलने की इच्छा की, लेकिन तब तक कार मंदिर के द्वार पर पहुंच चुकी थी । स्वामीश्री ने ड्राइवर को रुकने के लिए कहा, और उसने विकलांग भक्त को बुलाने का इशारा किया । भक्त को खोजने में थोड़ा समय लगा । इसलिए, परिचारक साधुओं, जिन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि भक्त विकलांग है, ने स्वामीश्री को सुझाव दिया कि वे आगे बढ़े और मंदिर परिसर के अंदर प्रतीक्षा करें । परंतु स्वामीश्री ने कार को विकलांग भक्त की ओर उलटने पर जोर दिया । लेकिन उसी समय, भक्त आ गया । स्वामीश्रीने प्यार से उनका फूल स्वीकार किए । भक्त आनंद से भावविभोर था, उसने स्वामीश्री के निकट दर्शन और आशीर्वाद की आशा नहीं की थी ।

एक गरीब भक्त के घर को पवित्र करना

शाम को स्वामीश्री ने गुजरात के बोडेली में बीएपीएस मंदिर से करीब 12 किमी दूर कोठिया गांव की यात्रा की । यहां उन्होंने एक गरीब किसान और भक्त श्री रामजीभाई राठवा की झोंपडी का दर्शन किया और पवित्र किया । झोपड़ी की दीवार बांस की पट्टियों, एल्युमिनियम पतरे की छत और सूखे चावल के पौधे के डंठल से बनी थी । रामज ीभाई ने बताया, "हम मेहमान के लिए ऐसे डंठल फैलाते हैं । स्वामीश्री ने आसन के लिए सूखे डंठल की गद्दी" के साथ एक छोटी खाट भी तैयार की गई थी । स्वामीश्री उस पर श्री हरिकृष्ण महाराज को बिठाकर खुद डंठल की गद्दी पर बैठ गए । स्वामीश्री ने रामजीभाई के परिवार के नौ सदस्यों के माथे पर चंदन लगाया । सदस्यों ने स्वामीश्री को पुष्पा माला पहनाकर सम्मानित किया । हरिकृष्ण महाराज को घर मंदिर में रखा गया । स्वामीश्री ने आरती की । ठाकोरजी को मुंगफली और मिश्री का प्रसाद चढ़ाया गया । स्वामीश्री ने थोड़ा खाया । स्वामीश्री ने परिवार के सदस्यों से अपना परिचय देने को कहा और उन्होंने सबको व्यक्तिगत रूप से आशीर्वाद दिया । फिर, स्वामीश्री ने अपने हाथों से

मैनुअल ग्रेन क्रशर-घंटी संचालित कि और उसे पवित्र किया । छत नीची होने के कारण स्वामीश्री ने नीचे झुककर झोपड़ी के प्रत्येक भाग को पुष्पों की वर्षा कर पवित्र कर दिया ।

झोपड़ी से बाहर आने के बाद स्वामीश्री ने दो साधकों को व्यसनमुक्ति के लिए प्रेरित किया । स्वामीश्री ने उस बारमदा को भी पवित्र किया जहां दुधारू पशुओं को रखा गया था और पेड़ के पास बंधे एक बैल पर फूलों की पंखुड़ियां बरसाई ।

स्वामीश्री रामजीभाई के खुले मैदान में रखी गई एक साधारण खाट पर बैठ गए, भक्तों की एक छोटी सभा को संबोधित किया और उन पर पुष्प वर्षा कर आशीर्वाद दिया ।

बिदा होने के पहले स्वामीश्री रामजीभाई के खेत को पवित्र करना चाहते थे । वे दों परिचारक स्वामियों के सहारे चल पड़े और वहां पुष्पवर्षा की । इसके तुरंत बाद, जब स्वामीश्री जाने के लिए कार के पास पहुंचे, तो किसी ने उन्हें सूचित किया कि रामज ीभाई उनकी झोपड़ी के सामने एक पक्का घर बना रहे हैं तत्पश्चात स्वामीश्रीने वहां भी पुष्पवर्षा की । फिर स्वामीश्री बोडेली मंदिर लौटने के लिए रवाना हुए ।

स्वामीश्रीने रामजीभाई के भतीजे गुलाबसिंह की भी इच्छा पूरी की, जिनकी इच्छा थी कि स्वामी श्री उनके घर आएं ।

85 वर्ष की आयु में स्वामीश्री ने कोठिया के गरीब भक्तों की मनोकामना पूरी की और उन्हें आशीर्वाद देने और उनकी साधारण झोपड़ियों और खेतों को पवित्र करने के लिए कष्ट उठाए ।

भगवान सर्व करता है

अपूर्वमुनि स्वामी ने स्वामीश्री से पूछा, "कोई भी कार्य आपके आशीर्वाद से सफल होता है तो सब साधु और भक्त आप की स्तुति करते हैं," आपके आशीर्वाद से सब कुछ अच्छा हुआ । "तो क्या आपको नहीं लगता कि आपने यह किया है ?"

स्वामीश्री ने स्पष्ट रूप से उत्तर दिया, "नहीं, भगवान सब कुछ करते हैं तो और कोई विचार रखने का सवाल ही नहीं है । मैं कुछ भी करने में सक्षम नहीं हूं ।"

अपूर्वमुनि स्वामी ने एक और प्रश्न पूछा, जब इतने बड़े उत्सवों का आयोजन किया जाता है तो हर कोई उनकी सफलता के लिए आपकी प्रशंसा करने लगते हैं । हालांकि, जब कुछ गलत होता है तो कोई लोग आपको दोष देना शुरू कर देते हैं । ऐसे त्योहारों के दौरान क्या आप कभी सोचते हैं कि कुछ गलत या बुरा हो सकता है ?

फिर से, स्वामीश्री ने जोर देकर कहा, "नहीं मैंने सब कुछ सर्व कर्ता के रूप में भगवान पर छोड़ दिया है ।"

अपूर्वमुनि स्वामी ने आगे कहा, "इतने बड़े उपक्रम और जिम्मेदारी के दौरान आप तनाव में होते हैं ?"

स्वामीश्रीने शांति से उत्तर दिया, "नहीं ।"

भगवान का नाम और प्रार्थना

भारत से आठ घंटे की उड़ान के बाद स्वामीश्री दार-एस-सलाम में उतरे ।

जब वे रात सोने जा रहे थे, तो परिचारक स्वामियों ने अनुरोध किया, "लंबी, यात्रा के थकान बाद एक बड़ी नींद लीजीये ।"

स्वामीने खुलासा किया, "मैं बड़ी नहीं लेता । मैं आज दोपहर विमान में नहीं सोया ।"

आश्चर्यचकित स्वामीने पूछा, "तो आप क्या सोच रहे थे ?" स्वामीश्रीने उत्तर दिया, "मैं जाप कर रहा था। 'स्वामिनारायण', 'स्वामिनारायण', और कुछ भक्तों की समस्या के समाधान के लिए प्रार्थना कर रहा था ।"

सेवक

गोंडल के एक भक्त श्री कृष्णभाई पंड्या ने स्वामीश्री से उत्तर प्राप्त करने के लिए अपनी उपलब्धियों की घोषणा की । उन्होंने कहा, "मैं श्री कृष्ण पंड्या हूं । मुझे सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रीय शिक्षक का पुरस्कार मिला है । मैं गोंडल में हमारे स्कूल का प्रिंसिपल था । वर्षों तक मैंने सत्संग गतिविधियों के क्षेत्रीय प्रमुख, संयोजक के रूप में कार्य किया है । ये मेरी उपलब्धियां है; मैं चाहता हूं कि आप हमें अपनी उपलब्धियां और आप कौन हैं के बारे में बताएं ।"

एक पल की झिझक के बिना स्वामीश्री ने उत्तर दिया, "सेवक ।"

श्री कृष्ण पंड्या ने उस पर और विस्तार करने के लिए लेकिन स्वामीश्री ने वही उत्तर दिया, "मैं एक सेवक हूं ।" स्वामीश्रीने कृष्ण पंड्या की उपलब्धियों और सेवाओं के सम्मान में उन्हें प्रणाम किया ।

घर : एक दिव्य महल

'घर' इसका माहत्म्य सभी भाषाओं में व्यक्त होता रहता है । हम में से प्रत्येक की इच्छा है कि हम जहां कहीं भी हो, वहां से 'घर' वापस आ जाएं - चाहे हम यात्रा कर रहे हो या बाहर दैनिक कार्यों में भाग ले रहे हो ।

लेकिन नई सहस्राब्दी में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों और डिजिटल वर्ल्ड की तकनीकी क्रांति के कारण पारिवारिक संबंध अधिक से अधिक जटिल होते जा रहे हैं ।

पुत्रों और पौत्रों के साथ रहने वाले माता-पिता की संयुक्त परिवार के संस्कृति धीरे-धीरे लुप्त हो रहे हैं । एकल परिवार में भी पति और पत्नी, युवा बच्चे और माता- पिता आदि सदस्यों के बीच मतभेद है यद्यपि 'घर' एक ऐसी जगह है जहां व्यक्ति को शांति और सुख मिलना चाहिए - घरो में यह गायब है ।

लोग एक ही छत के नीचे रहते हैं - हालांकि एक दूसरे के बगल में बैठे होते हैं लेकिन मोबाइल फोन - टीवी या लैपटॉप पर अधिक समय बिताते रहते हैं ।

महंत स्वामी महाराज 'घर' की शांति बहाल करने पर जोर देते हैं । उनका कहना है कि केवल भगवान से प्रार्थना करना या धर्मसभा में भाग लेना और संतों को सुनना पर्याप्त नहीं है - हम में से प्रत्येक को एक दिव्य जीवन जीना है - जिसमें चार सिद्धांत शामिल है - यह चार सिद्धांत घरकी दीवारें है जो घर को एक दिव्य महल बनाती हैं ।

- पहली दीवार है जीवन में एक लक्ष्य रखना - कहो में 'ब्रूमरूप' बनना चाहता हूं - मैं ईश्वर का अंश बनना चाहता हूं । यह सिद्धांत दूसरों के साथ हमारे व्यवहार करने के तरीके को बदल देगा - परिवार के सदस्यों और यहां तक कि बाहरी लोगों के साथ भी और वे जो कहते हैं या व्यवहार करते हैं उसके प्रति हमारे दृष्टिकोण और प्रतिक्रिया को बदल देंगा ।
- दूसरी दीवार है हमारी दूसरे के प्रति 'भावनाएं' । महंत स्वामी कहते हैं कि हमें दिव्य भावना रखने की आवश्यकता है । हमें दूसरों के साथ 'दिव्य' के रूप में व्यवहार करना चाहिए जैसे कि वे ईश्वर का प्रतिनिधित्व कर रहे हों । यदि इस दृष्टिकोण को समझे तो हम बिना किसी बाधा के उनका ध्यान रखेंगे । वे गढडा में 'नीम के पेड़' और सारंगपुर में 'खिजड़ा के पेड़' का उदाहरण देते हैं । हम उन्हें दिव्य मानते हैं और वंदन करते हैं -उनके होने के कारण यहां श्री महाराज बसते थे उसी तरह हमें यह महसूस करने की आवश्यकता है कि हमारे माता-पिता, पत्नी -बच्चे, रिश्तेदार, दोस्त और सेवक - सभी दिव्य हैं - ये हमें शांति देंगें, एक-दूसरे से बात करने में खुशी और सम्मान मिलता है इसे सभी सदस्यों को समझना होगा ।
- तीसरी दीवार - महंत स्वामी बताते हैं 'निष्ठा' - 'ईमानदारी' । हमें जो कहना है वही बोलना चाहिए - न कि केवल बोलने या मित्रवतदिखने के लिए7 हमें अपने संबंधों में एक-दूसरे के प्रति प्रामाणिक रहना चाहिए । दूसरों को नीचा नहीं दिखाना चाहिए या आलोचना या निंद नहीं करनी चाहिए, बल्कि सद्भाव से रहना चाहिए और अपने विचारों को व्यक्त करना चाहिए, एक-दूसरे की ताकत और कमजोरी का स्वीकार करना चाहिए - और साथ ही साथ एक-दूसरे का सम्मान करना चाहिए ।

भले ही राय या दृष्टिकोण में अंतर हो । यह हमें 'झोंपड़ी' में भी महल में रहने का एहसास कराएगा । इससे हमें दिव्य प्रसन्नता और संतुष्टि मिलती है ।

- चौथी दीवार है जीवन के 'नियम' । महंत स्वामी महाराज शिक्षापात्री में निर्धारित नियमों का पालन करने को बताते हैं - जब हम ईमानदारी से उस जीवन शैली अपनाते हैं, तो संघर्ष कम हो जाते हैं और सद्भाव बढ़ता है और हमारा जीवन आनंदमय हो जाता है ।

महंत स्वामी महाराज कहते हैं, "इन चारों को अपने घर की चार दीवार समझिए और शांति, सुख, सद्भाव और प्रसन्नता के साथ जिए ।"

अक्षर पुरुषोत्तम दर्शन

महंत स्वामीने "अक्षर अहम पुरुषोत्तमदासोस्मि" मंत्र का परिचय दिया है । यह मंत्र दैनिक जीवन में 'शांति' को बढ़ावा देता है । यह मंत्र गुरु और भगवान को समर्पित है । उनमें अपने विलय की प्रार्थना है ।

महंत स्वामी कहते हैं, हम अपने गुरु का अनुसरण कर सकते हैं और चीजों को जैसा वे समझते हैं समझ सकते हैं और जैसा वे कर रहे हैं वैसा ही आचरण कर सकते है । सबसे महत्वपूर्ण बात - उनकी तरह हमें पुरुषोत्तम - भगवान को समर्पित रहना चाहिए । इसे अक्षर ब्रह्म के साथ एकता कहा जाता है ।

सामान्य व्यक्ति और यहां तक कि अमीर भी जीवन से संबंधित स्वास्थ्य, आय, पारिवारिक संबंधों, लक्ष्यो, को प्राप्त करने, प्राकृतिक या ईर्ष्यालु व्यक्तियों द्वारा निर्मित बाधाओं इत्यादि समस्यायो से घिरे होते हैं । हर कोई इससे बाहर आना चाहता है और इससे उबरने का प्रयास कर रहा है । लेकिन इसमें समय लगता है - एक दिन हो सकता है - एक महीना या एक साल या ज्यादा भी । इस बीच ऐसे व्यक्ति परेशान रहते हैं और जीवन की शांति और प्रफुल्लता को खो देता है । इससे जीवन कठिन हो जाता है । यह मंत्र इसमें से बाहर आने का रास्ता है ।

महंत स्वामी महाराज अक्षर अहम पुरुषोत्तमदासोस्मि मंत्र की व्याख्या करते हैं - "मैं जो अक्षर हूं वह दास है - पुरुषोत्तम का दास ।" मंत्र दो भागों से मिलकर बना है - एक 'अक्षर अहम' और दूसरा 'पुरुषोत्तमदासोस्मि'। यहां अक्षर - का अर्थ है 'गुरु' - में अक्षर हूं - मैं अपने गुरु के साथ एक हूं - मैं उनका अनुसरण करता हूं । दूसरा, पुरुषोत्तमदासोस्मि का अर्थ है कि मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर का सेवक हूं। यह भगवान के साथ हमारे संबंध को दर्शाता है - भक्त के रूप में और दैनिक जीवन में उनके सेवक के रूप में कार्य करता हूं ।

मंत्र में यदि यह समझ लिया जाए, आत्मसात किया जाए तो जीवन के तरीके को समझा जाता है और अनुपालन किया जाता है तो जीवन निश्चित रूप से समस्याओं या बाधाओ के बावजूद सरल हो जाता है, समस्याएं जल्द ही दूर हो जाती है ।

मैं पुरुषोत्तम का अक्षर और दास हूं - इस समझ के बाद मन को साफ करें - जैसे झाड़ू से हम कमरे की सफाई करते हैं ।

हमारे मन में अच्छी और बुरी घटनाए, अच्छे और बुरे विचारों की पूर्ति या अधूरी इच्छाओं की सामूहिक स्मृति साथ जमा होती है । ऐसी बातें भी होती है जो हम अपने परिवार से भी कहना चाहते थे लेकिन एक सामाजिक प्राणी होने के नाते नहीं बोलते ।

सभी नकारात्मक विचार कूड़ा करकट है । मन में कूड़ा करकट हमें लगातार चोट पहुंचाते हैं या हमें अपने भीतर क्रोधित करते हैं । इस मंत्र के ध्यान से साफ और शांत करने की जरूरत है । इससे हमें मन की शांति और जीने में खुशी मिलेगी ।

महंत स्वामी महाराज दो दृष्टांत देते हैं :

मान लीजिए कि हम चल रहे हैं और कोई हमें मारता है और हमें गालियां भी देता है तो हम स्वभाविक रूप से क्रोधित होंगे और कम से कम उसे जवाब देंगे या जवाबी कार्रवाई करेंगे । ऐसी 'क्रोध' या उकसाने की स्थिति में अगर हम सोचते हैं कि मैं 'अक्षर' हूं - तो मेरे गुरु (अक्षर) ने क्या किया होगा ? जब हम इसे एक पल के लिए भी याद करते हैं, तो गुस्सा कम हो जाएगा और किसी भी व्यक्ति के साथ टकराव टाला जा सकता है ।

एक अन्य उदाहरण वे एक ऐसे छात्र का देते हैं जो अच्छा ग्रेड प्राप्त करना चाहता है और कड़ी मेहनत करना चाहता है लेकिन अपनी पढ़ाई में ध्यान केंद्रित करने में सक्षम नहीं है । उस स्थिति में यदि वह पुरुषोत्तम - ईश्वर - को याद करता है और अपनी क्षमता को देखता है और उससे ईश्वर उसकी शक्ति, एकाग्रता उसे स्वतः ही प्रदान कर देते हैं । केवल ईश्वर को याद करना और यह महसूस करना कि आप उसका हिस्सा हैं इससे ध्यान एकाग्र करने और ध्येय हसिल करने की शक्ति आ जाती है ।

दैनिक जीवन में इसका अभ्यास करने से जीवन समृद्ध होगा और हम जिन कठिन परिस्थितियों से गुजर रहे हैं, उनका समाधान होगा । यह आत्मचिंतन के माध्यम से प्राप्त किया जाता है - स्वयं पर और गुरु और भगवान स्वामिनारायण पर ध्यान करने से शांति और प्राप्ति मिलते हैं ।

स्वामिनारायण मंत्र

महंत स्वामी कहते हैं - स्वामिनारायण मंत्र दो शब्दों से बना है - 'स्वामी' और 'नारायण', यह भक्त और उसके गुरु के बीच के संबंध को दर्शाता है । यह अक्षर और पुरुषोत्तम अर्थात् आदर्श भक्त और उसके सर्वोच्च गुरु की उपासना का सुझाव देता है । स्वामिनारायण मंत्र, जब इस अर्थ में समझा जाता है तब यह बताता है कि एक आकांक्षी को अक्षरब्रह्म की तरह बनना होगा और सर्वोच्च परब्रह्म की पूजा करनी होगी । यह अक्षर और पुरुषोत्तम के बीच शाश्वत और अविभाज्य संबंध की व्याख्या करता है ।

जब थोड़ा जोर से जप किया जाता है तो यह एक दिव्य ध्वनि का उत्सर्जन होता है । निरंतर जोर से पाठ करने से एकाग्रता, ध्यान और दिव्य आनंद, परमानंद की प्राप्ति में मदद मिलती है । जब समूह में, लयबद्ध और मधुर संगीतमय संगती के साथ पाठ किया जाता है, तो यह सभी अशुद्ध विचारों और विकर्षणो से मन को शुद्ध करता है और चारों ओर एक दिव्य वातावरण बनाता है ।

यह मंत्र जाप सभी इच्छाओं को पूरा करता है । अच्छा स्वास्थ्य, शांतिपूर्ण जीवन, भौतिक समृद्धि और व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करता है । स्वास्थ्य को बनाए रखने और बीमारी के इलाज में भी यह मदद करता है ।

भविष्य की पीढ़ि

नया आयाम

महंत स्वामी कहते हैं युवा, भावी पीढ़ी समाज या राष्ट्र के विकास की कुंजी है7 हमें नहीं पता कि भविष्य में क्या चुनौतियां आएंगी - लेकिन हम अपनी आने वाली पीढ़ी को इन चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार कर सकते हैं । यह BAPS युवा केंद्रों के पीछे की भावना है - जहां दुनिया भर में बच्चों से लेकर स्नातक तक सब आध्यात्मिक मूल्यों और स्वैच्छिक सेवा की भावना को आत्मसात् करें । दूसरों की मदद करना और खुद को कुशल व्यक्तियों के रूप में उन्हें ढालना है ।

सफलता कौन प्राप्त कर सकता है ?

महंत स्वामी महाराज कहते हैं कि हम चौराहे पर है - हमारे पास तकनीकी क्रांति है - वैज्ञानिक खोजें से हम लाभान्वित हो रहे हैं - लेकिन हमारे युवा कोई जगह भ्रमित है । हमारे कई युवा है जो मोबाइल में व्यस्त हैं । फोन पर दिन भर बातें करना, पढ़ाई की उपेक्षा करना, चरबी युक्त जंक खाद्य पदार्थ भोजन करना और कुछ पेय / नशीली दवाओं की लत, तंबाकू चबाना और धूम्रपान की आदत से ग्रसित है । लोगों को लगता

है कि हमारे युवा विचलित हैं और चिंता है कि भविष्य में क्या होगा ? लेकिन हमें अपने युवाओं का निर्माण करने की जरूरत है । उनके लिए समय निकालें । उनसे बात करें और उन्हें प्रेरित करें और उन पर भरोसा करें - विश्वास है कि वे एक नई उज्जवल दुनिया बनाएंगे ।

वे आगे कहते हैं कि हमें आध्यात्मिक आधार के साथ मजबूत चारित्र्य बनाने की जरूरत है । बिना जाति या पंथ की परवाह किए दूसरों की सेवा करने की भावना का निर्माण करने की आवश्यकता है । हमें उन्हें राष्ट्र के निर्माण के लिए एकजुट करने की आवश्यकता है । लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात परिवार के भीतर मजबूत संबंध, आज्ञाकारिता, माता-पिता का सम्मान करना, दादा-दादी की सेवा करना / उनकी मदद करना और सभी परिवार के सदस्यों के बीच एकता और सद्भाव की समझ बनाये रखना है ।

युवा गतिविधियों से युवावस्था में आध्यात्मिक मूल्यों को आत्मसात् करना योगीजी महाराज ने शुरू किया था । महंत स्वामी महाराज द्वारा इसको विस्तारित किया जा रहा है । वे सभी युवाओं को भविष्य के निर्माण के लिए तैयार करने के लिए लगातार बातचीत कर रहे हैं ।

इसके अलावा लगभग हर केंद्र में युवाओं के लिए खेल गतिविधियां और व्याख्यान सत्र भी होते है । जिन देशों में युवाओं को फास्ट फूड पसंद है, वही वहां भी उपलब्ध कराया जाता है । यह पूरे परिवार को उनकी पसंद की गतिविधियों में जाने और समय मुहाया करने में सहुलियत कराता है ।

सारंगपुर में एक केंद्रीय प्रशिक्षण केंद्र है । यह प्रशिक्षण का केंद्र नए प्रवेशी साधुओं के लिए है । बहुत सावधानी से पाठ्यक्रम तैयार किया गया है वर्तमान समय और पवित्र शास्त्रों के अपने ज्ञान को अद्यतन करने और जीवन के मूल्य पर ध्यान केंद्रित करना । इसका उदेश्य है

प्रशिक्षण में उन्हें चरित्र निर्माण में फिर से कौशल और पुनः कौशल बनाना है, ज ीवन का सामना करने के लिए, ज्ञान के साथ आने वाली चुनौतियों, पेशेवर कैरियर और आत्मविश्वास का विकास भी शामिल है । इसे प्राप्त करने के लिए "मजबूत दृढ़ संकल्प" के निर्माण की आवश्यकता है । लक्ष्य चाहे पढ़ाई, खेल, सामुदायिक सेवाओं या पेशेवर करियर का हो । इसलिए, इसे प्रदान करने और उन्हें स्वतंत्र होने के लिए तैयार करता है, घर की साफ-सफाई से लेकर खाना पकाने तक और पढ़ाई या अन्य काम के साथ-साथ उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है ।

महंत स्वामी महाराज चाहते हैं कि युवा स्वस्थ और शांतिपूर्ण रहें । अपने परिवार के

लिए समर्पित रहे, अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करें और दूसरों की मदद करने हमेशा तैयार रहें । उन्हें सभी बड़ों का सम्मान करने के लिए सहज रूप से इच्छुक होने की आवश्यकता है । और जो कुछ भी वे कर रहे हैं उसमें मन की शांति और खुशी बनी रहनी आवश्यक है । वे चाहते हैं कि वे खेल, जिज्ञासा, दूसरों की सेवा में उत्कृष्टता प्राप्त करें - बाहर निकले और दुनिया का सामना करें और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करें ।

आलस्य :

महंत स्वामी महाराज हमेशा इसके बारे में सोचते रहते हैं कि खुद को कैसे बेहतर बनाया जाए । वे इस बात से भी चिंतित है कि किसी व्यक्ति के विकास में बाधक क्या हैं । उन्हें लगता है कि, आलस्य एक जीवित व्यक्ति के लिये चिता समान है । वचनामृत द्विशताब्दी उत्सव के अवसर पर उन्होंने बताया कि आलस्य को कैसे हटाया जाए ।

''भगवान स्वामिनारायण वचनामृत में आलस्य से सावधान रहने की सलाह देते हैं । उनका कहना है कि किसी भी आलसी व्यक्ति की संगति से बचना चाहिए । आलस्य आध्यात्मिक एवं धर्म के रास्तों पर सबसे बड़ी बाधा है । उन्होंने दो उदाहरण बताए : एक स्कूल में एक शिक्षक ने एक असाधारण निबंध लेखन प्रतियोगिता आयोजित की । विषय था, आलस्य का मतलब... ''सभी छात्र आलस्य के बारे में तुरंत लिखने लगे । किसी ने लिखा'', ''आलस्य'' एक बड़ा शत्रु है । दूसरे ने लिखा, आलस्य एक जीवित व्यक्ति की कब्र है । ''सभी ने इस प्रकार का कुछ न कुछ लिखा । एक छात्र ने शिक्षक को चार पृष्ठ सौंपे, लेकिन वे सभी खाली थे। अंत में सबसे नीचे पृष्ठ लिखा था, इसे आलस्य कहा जाता है ।''

दूसरा उदाहरण एक बार, एक शिक्षक ने अपने छात्रों से पूछा, ''जो आलस्य से प्रभावित हुए हैं, हाथ उठाओ।'' एक को छोड़कर लगभग सभी छात्रों ने हाथ खड़े किए । शिक्षक ने उससे पूछा, ''तुमने हाथ क्यों नहीं उठाया ?'' लड़केने शांत भाव से उत्तर दिया, ''सर, मुझे हाथ उठाने में बहुत आलस आता है ।''

ये दो उदाहरण दर्शाते है कि आलस्य क्या है । आलस्य की निशानी है कामचोरी, गैर जिम्मेदारी और लापरवाही । आलस का अर्थ है मन न लगना, कुछ भी ना करना और निष्क्रिय रहना । आलस्य का अर्थ आवश्यकता से अधिक आराम करना या सोना भी है । लेकिन इस बुराइयों को समझकर और दृढ़ निश्चय से आलस्य को परास्त किया जा सकता है ।

बीएपीएस छात्रालय और स्कूल परिसर

बाल - बालीका कक्ष

लक्ष्य की स्पष्टता :

सबसे पहले, एक स्पष्ट लक्ष्य होना महत्वपूर्ण है । भजन, भक्ति, सत्संग कार्य या अपने सामाजिक कर्तव्य या अपने दिन के काम के संबंध में लक्ष्य निर्धारित करें । फिर, लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपना समय व्यवस्थित करें । इसके बाद, अपनी दैनिक समय सारिणी पर ध्यान केंद्रित करें, सुबह से शाम तक की समय सूचि तैयार करें । शाम तक उस कार्य को पूर्ण करने का निश्चय कर लें ।

अपने दोषों को अपना शत्रु मानना :

भगवान स्वामिनारायण ने कहा है कि अगर कोई अपने आप में किसी भी दोष को दूर करना चाहता है तो उसके प्रति घृणा की भावना विकसित करनी चाहिए । दृढ़ संकल्प करें, "आलस्य मेरा शत्रु है । इसने मेरे जीवन में बहुत कुछ खराब कर दिया है । मैं इसे मेरे जीवन से हटा दूंगा ।"

अच्छे लोगों से प्रेरणा ले :

वचनामृत गढडा I-20 में, भगवान स्वामिनारायण आलस्य छोड़ ने पर बढ़ाना देने के बारे में कहते हैं भगवान के आशीर्वाद है कि सत्संग में भाग लेने से यह आसान हो जाता है आत्म दर्शन या ईश्वर-प्राप्ति प्राप्त करें, हालांकि, जो भी चूक हो जाती है वह अपने आलस्य के कारण होता है । वचनामृत लोया 6 में महाराज कहते हैं, अगर कोइ भक्त बहुत आलसी है, बहुत ज्यादा सोता है और जब दूसरे के द्वारा कहा जाता है जल्दी कीजिए, स्नान करें, ध्यान करें या अन्य नियमों का पालन करें, कहते हैं, 'मैं इसे बाद में करूंगा; क्या है। मैं उन्हें धीरे-धीरे करूंगा - बाद में वह भी अच्छा हो सकता है, किंतु उसके सहवास से बचना चाहिए । श्रीजी महाराज की कृपा प्राप्त करने के लिए आलस्य त्यागें ।

बीएपीएस छात्रालय और स्कूल परिसर

महंत स्वामी महाराज कहते हैं, ''छात्रालय वे स्थान है जहां युवाओं का निर्माण किया जा सकता है ।'' 1954 में योगीजी महाराज आणंद के पास ट्रेन से यात्रा कर रहे थे । विनुभाई (महंत स्वामी) की कृषि महाविद्यालय के उनके मित्र छात्र मिलने आए थे । उन्होंने उन्हें बाहरी छात्रों के लिए उपलब्ध शैक्षणिक सुविधा और छात्रावास की कमी के बारे में जानकारी दी । योगीजी महाराज को लगा छात्र के लिए छात्रावास की जरूरत है । उन्होंने फोन किया । दान आने लगा... अंबालालभाई पटेलने छात्रावास के लिए अपनी जमीन दान कर दी । 1965 में, अक्षर पुरुषोत्तम छात्रालय (APC) का निर्माण पूरा हुआ और 20 जून 1965 को योगीजी महाराज और प्रमुख स्वामी महाराज ने इसका उद्घाटन किया । यह शुरुआत थी । समय के साथ कई केंद्रों पर छात्रालय और स्कूल कॉलेज बने ।

छात्रालय शिक्षा के लिए एक अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं, और छात्रों में मूल्यों और व्यक्तित्व विकास को प्रेरित करते हैं । नित्य प्रातः एवं सायंकाल की सत्संग सभाएं उन्हों में आत्मसंयम, भक्ति और मूल्यों का संचार करती हैं । यह समसामयिक विषयों पर वाद-विवाद-संवाद, प्रश्नोत्तरी, आध्यात्मिकता पर प्रश्न-उत्तर सत्र, भाषणों, प्रेरक नाटकों, संगीत समारोह और पारंपरिक नृत्य प्रशिक्षण, व्यक्तित्व निर्माण, नियमित रूप से आयोजित त्योहारों और अध्ययन मंडलियों द्वारा वार्तालाप के माध्यम से उनके व्यक्तित्व को विकसित करने का अवसर प्रदान करता है । इसके मूल में छात्रों के सहयोग और सद्भाव को बढ़ावा देना, नशामुक्ति अभियान, स्वच्छता अभियान और आपदा के समय राहत कार्य जैसी सामाजिक सेवाओं के लिए प्रेरणा विकसित करना है ।

गुजरात और गुजरात के बाहर कई संस्थान स्थापित किए गए हैं : प्रमुख स्वामी मेडिकल कॉलेज, करमसाद; प्रमुख स्वामी इलेक्ट्रॉनिक्स संस्थान **(विद्यानगर)**; स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर **(विद्यानगर)**; प्रमुख स्वामी विज्ञान कॉलेज (कड़ी) और प्रमुख स्वामी तारामंडल (राजकोट) और कई माध्यमिक और उच्च माध्यमिक **विद्यालय**। वंचितों के लिए BAPS ने महाराष्ट्र, उड़ीसा, अरुणाचल प्रदेश, असम और त्रिपुरा में 15 नए स्कूलों को प्रायोजित किया है, 1967 में वल्लभ **विद्यानगर**, 1967 में गोंडल गुरुकुल, 1983 में BAPS छात्रालय वडोदरा, 1984 में भद्रा गांव में माध्यमिक **विद्यालय**, 1985 में उकाई छात्रालय, 1992 में लंदन में पहला स्वतंत्र हिंदू स्कूल, 1993 में माउंट आबू छात्रावास और 2001 में प्राथमिक **विद्यालय** और 2001 में सारंगपुर में आवासीय **विद्यालय** ।

महंत स्वामी महाराज कहते हैं, हमें दूरदराज के क्षेत्रों के छात्रों और यहां तक कि अनिवासी भारतीय के बच्चों को भी सहायता-सुविधा प्रदान करने की आवश्यकता है । उनके पास साफ-सुथरा कमरा, अच्छा भोजन और इत्तर प्रवृत्ति के अवसर होना चाहिए । हमारे छात्रालयों युवाओं के व्यक्तित्व विकास के लिए आकर्षण के केंद्र बनाने की आवश्यकता है ।

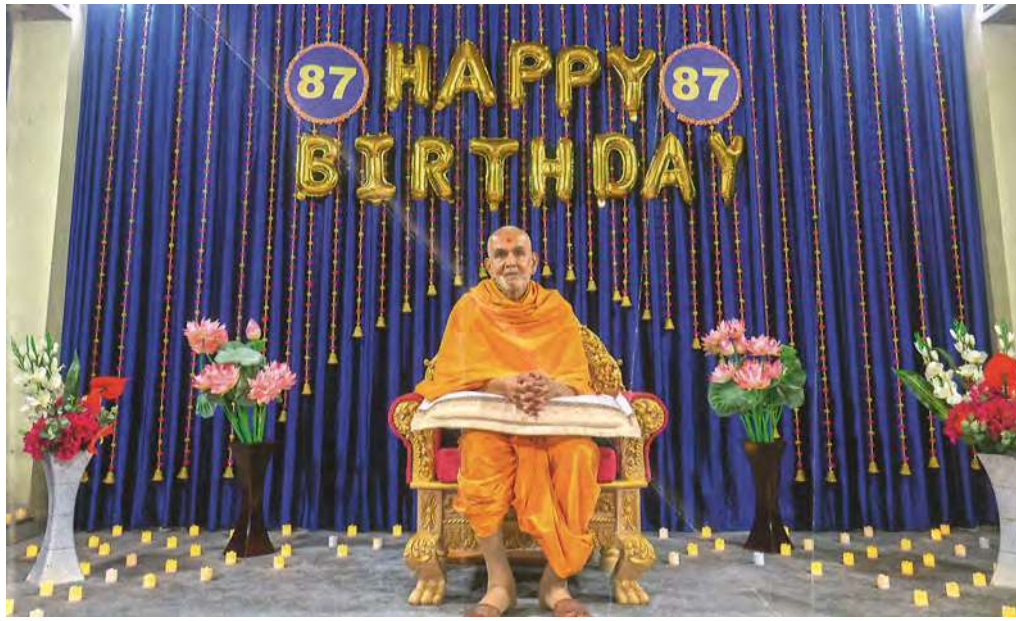

महंत स्वामी महाराज का ८७ वां जन्मदिन ऑनलाइन समारोह

फोटो 1 और 2 : जन्मदिन समारोह वीडियो लिंक के माध्यम से फोटो
3 : स्वामीश्री का ठाकोरजी और गुरुओं का रथ खींचना

विश्वशांति महापूजा

लंदन मंदिर की सुवर्ण जयंती ।

महंत स्वामी महाराज की उपस्थिति में अद्वितीय वैश्विक ऑनलाइन विश्व शांति महापूजा का आयोजन वर्चुअल मीडिया और वरिष्ठ स्वामियों के सहभाग से किया गया था । यह सामूहिक प्रार्थना पारिवारिक सद्भाव और विश्व शांति के लिए थी ।

प्रमुख स्वामी महाराज द्वारा बनाए गए लंदन के नेसडेन मंदिर ने दुनिया भर के लोगों के जीवन को प्रभावित किया है । 50 वर्ष पूरे होने पर इस विश्वशांति महापूजा का आयोजन 33 देशों के 31,000 से अधिक भक्तों ने उत्सुकता के साथ किया गया था । उन्होंने अपने घरों से ही महापूजा में भाग लेने के लिए पंजीकरण कराया, जिसमें कई हजारों लोग बिना पंजीकरण के भी शामिल हुए ।

साधु डॉ. योगविवेकदास स्वामी द्वारा लंदन के मंदिर से 'महापूजा' आयोजित की गई थी । जबकि, भारत के कानपुर से, महंत स्वामी महाराज ने लाइव वीडियो लिंक के माध्यम से महापूजा के उद्घाटन की अध्यक्षता की । उन्होंने आशीर्वाद दिया और इस लंदन मंदिर को विश्व को उपहार में देने में प्रमुख स्वामी महाराज की दृढ प्रतिबद्धता को श्रद्धांजलि अर्पित की और आशीर्वाद दिया की सत्संग गतिविधियां यु.के. और पूरे यूरोप में फलती-फूलती रहेगी ।

महंत स्वामी महाराज का ८७ वा जन्म दिवस समारोह

13 सितंबर 2020 को, महंत स्वामी महाराज का 87 वां जन्मदिन समारोह कोविड-19 महामारी के कारण उत्सवपूर्वक ऑनलाइन आयोजित किया गया था । कंप्यूटर मल्टीमीडिया की सहायता से बीएपीएस स्वामीयों ने नेनपुर में महंत स्वामी महाराज के साथ एक आभासी मंच तैयार किया । विभिन्न मंदिरों में स्थित सदगुरु स्वामी और अन्य स्वामियों ने उनकी उनके लिए शुभ कामना की । पूरे उत्सव कार्यक्रम को गुजराती, हिंदी और अंग्रेजी में प्रसारित किया गया । भारत और विदेशों में अनगिनत भक्तों ने घर पर ही उत्सव का आनंद लिया ।

वास्तव में महंत स्वामी महाराज प्रतिदिन संतो- साधुओं से मिलते हैं जो वस्तुतः भारत के भीतर और बाहर रहते हैं । वे नियमित रूप से उनके साथ बातचीत करते हैं । और भक्तों से भी संवाद करते हैं । इसी तरह महामारी से प्रतिबंधित जीवन में भी उन्होंने सबके लिए द्वार खोल दिए थे ।

श्री हरिकृष्ण महाराज के पास में अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी का वैदिक स्थापना समारोह

दशको पर्यंत योगीजी महाराज और प्रमुख स्वामी महाराज ने श्री हरिकृष्ण महाराज और अक्षरब्रह्म गुणितानंद स्वामी की छोटी चल मूर्ति की पूजा की और हमें भगवान को भक्ति अर्पित करने का आदर्श मार्ग सिखाया। महंत स्वामी महाराज ने भी श्री हरिकृष्ण महाराज की दैनिक पूजा की परंपरा को जारी रखा । 31 अक्टूबर 2020 को वैदिक अक्षर-पुरुषोत्तम दर्शन के अनुरूप महंत स्वामी महाराज ने श्री हरिकृष्ण महाराज के साथ अक्षरब्रह्म गुणातितानंद स्वामी की चल मूर्ति स्थापित की ।

महंत स्वामी महाराज थिंक टैंक है । वे नए विचारों की अवधारणाओं का पता लगाना पसंद करते है । उन्होंने महसूस किया कि स्वामिनारायण आरती को नए शब्दों के साथ ज्यादा प्रभावित करने की जरूरत है । और भद्रेश स्वामी से इस पर काम करने को कहा ।

साधु अक्षरवत्सल दास कहते हैं - आरती शब्द संस्कृत के अरात्रिक शब्द से बना है जिसका अर्थ है अंधकार को दूर करने वाली वस्तु । यह प्राचीन काल से भगवान की भक्ति और सम्मान करने के लिए किया जाने वाला अनुष्ठान है । और ईश्वर के प्रति प्रेम, कृतज्ञता, प्रार्थना और अपार विश्वास की अभिव्यक्ति है । इसकी ज्योत ने भक्तों को बिज ली के व्यापक होने से पहले सूर्योदय से पहले और सूर्यास्त के बाद मंदिर में मूर्ति के दर्शन करने में सक्षम बनाया ।

अनुष्ठान के दौरान गाए जाने वाले गीतों को आरती के रूप में भी जाना जाता है । हिंदू धर्म में कई आरती है, जो देवताओं, गुरु भक्तो और यहां तक कि नदियों की स्तुति और सम्मान के लिए होती है । आज भी, पहले की तरह, भगवान और उनके भक्त के प्रति सच्ची भक्ति की अभिव्यक्ति के रूप में और उनकी महिमा को समझने के लिए आरतीयां को आज भी प्रचलित है ।

1802 में, रामानंद स्वामी के स्वधामगमन के 11 महीने बाद, मुक्तानंद स्वामी ने सहजानंद स्वामी की दिव्यता को महसूस किया और पूजा और भक्ति के भाव के रूप में आरती 'जय सद्गुरु स्वामी...' की रचना की । इस नई आरती ने धीरे-धीरे अन्य आरतीओं का स्थान लिया और लोकप्रिय हो गई ।

महंत स्वामी महाराज ने भद्रेश स्वामी को अक्षर और पुरुषोत्तम की महिमा का गुणगान की आरती की पुनः रचना करने का निर्देश दिया ।

महंत स्वामी महाराज ने भगवान और गुरुओं की आरती उतारी

भद्रेश स्वामी कहते हैं :

''यह परम पूज्य महंत स्वामी महाराज की अंतरतम इच्छा थी कि भगवान स्वामिनारायण द्वारा स्थापित सिद्धांत को एक भक्ति शास्त्र के रूप में प्रस्तुत किया जाए ।

महंत स्वामी महाराज कहते हैं

''अक्षर पुरुषोत्तम आरती भव्य है । जो कोई भी इसे माहत्म्य और विश्वास के साथ गाएगा, उसे परम शांति का अनुभव होगा, और महाराज और स्वामी उन्हें अक्षरधाम के लिए लेने आएंगे ।

''अक्षर पुरुषोत्तम महापूजा का प्रत्येक शब्द महिमा से भरा है; जो कोई भी महापूजा में सच्ची भावना के साथ करेंगे या भाग लेते हैं, उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी होती है और वह शारीरिक, मानसिक और आर्थिक रूप से सुखी हो जाते हैं । वे अपने भीतर परम शांति, अनुभव करेंगे और आध्यात्मिक रूप से प्रगति करेंगे।

प्रगट ब्रह्मस्वरुप गुरुहरि श्री महंत स्वामी महाराज रचित श्री स्वामिनारायण आरती

आस्वाद और अर्थबोध

जय स्वामिनारायण, जय अक्षरपुरुषोत्तम,
अक्षरपुरुषोत्तम जय, दर्शन सर्वोतत्म... जय स्वामिनारायण... टेक

मुक्त अनंद सुपूजित, सुंदर साकारम्,
सर्वोपरी करुणाकर, मानव तनुधारम्... जय स्वामिनारायण..... 1.

पुरुषोत्तम परब्रह्म, श्रीहरि सहजानंद,
अक्षरब्रह्म अनादि, गुणातीतानंद... जय स्वामिनारायण..... 2.

प्रकट सदा सर्वकर्ता, परम मुक्तिदाता,
धर्म एकांतिक स्थापक, भक्ति परित्राता... जय स्वामिनारायण..... 3.

दासभाव दिव्यता सह, ब्रह्मरुपे प्रीति,
सुहृदभाव अलौकिक, स्थापित शुभ रीति... जय स्वामिनारायण..... 4.

धन्य धन्य मम जीवन, तव शरणे सुफलम्,
यज्ञपुरुष प्रवर्तित सिद्धांतं सुखदम्... जय स्वामिनारायण, जय अक्षरपुरुषोत्तम, जय स्वामिनारायण..... 5.

शिक्षापात्री

महंत स्वामी कहते हैं, भगवान स्वामिनारायण द्वारा निर्धारित मार्ग शिक्षापात्री का अनुसरण करें ।

नैतिकता और सामाजिक सद्भाव में गिरावट को देखते हुए, भगवान स्वामिनारायण ने स्थिति को सुधारने के लिए कई वर्षों तक काम किया । उन्होंने अनुयायियों की जीवनशैली में सुधार करने के प्रयास किए और सफल रहे; शिक्षापात्री इस का आधार रहा है । व्यक्ति के दृष्टिकोण को बदलने के लिए स्वामिनारायण संप्रदाय का यह प्राथमिक शास्त्र है और एक ऐसा ढांचा प्रदान करता है जिस पर एक परिवार और उस समाज का नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक एकीकरण किया जा सकता है । इसके 212 श्लोक सभी के लिए कर्तव्यों का सारांश प्रदान करते हैं । शिक्षापात्री तर्कसंगत और प्रगतिशील दोनों है ।

इससे पता चलता है कि ईश्वर की भक्ति, धार्मिक जीवन, सांसारिक सुखों से वैराग्य और आत्मा के रूप में किसी के वास्तविक रूप का ज्ञान आध्यात्मिक प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है ।

भगवान स्वामिनारायण ने अपने भक्तों को स्वास्थ्य, स्वच्छता, पोशाक, आहार, शिष्टाचार, कूटनीति, वित्त, शिक्षा, मित्रता, नैतिकता, आदतों, तपस्या, धार्मिक कर्तव्यो, समारोह और अन्य क्षेत्रों में मार्गदर्शन किया । शिक्षापात्री के निर्देश जीवन के सभी चरणों और क्षेत्रों के भक्तों पर लागू होते हैं – युवा या बूढे, पुरुषों या महिलाएं, विवाहित, अविवाहित या विधवा, गृहस्थ या साधु । भक्तों को अपने कर्तव्यों के प्रति निरंतर जागरूक रहने की आवश्यकता है इसलिए भगवान स्वामिनारायण ने उन्हें प्रतिदिन शिक्षापात्री पढ़ने के लिए निर्देशित किया। इस प्रकार, आज भी, दुनिया भर में हजारों लोग सच्चे दिल से शिक्षापात्री के आदेशों का पालन करते हैं। मूल रूप से संस्कृत पद्य में लिखे गए, शास्त्र की प्रारंभिक हस्तलिपि गुजराती में टिप्पणियां के साथ थी । पहला अंग्रेजी अनुवाद ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय मैं संस्कृत के प्रोफेसर, प्रोफेसर मोनियर- विलियम्स बोडेन द्वारा प्रकाशित किया गया था । शिक्षापात्री 29 भाषाओं में प्रकाशित हो चुकी है ।

वचनामृत

वचनामृत 273 प्रवचनों से भगवान स्वामिनारायण की शिक्षाओं का संकलन है । प्रवचन उपनिषदों के समान है जिनमें गुरु और शिष्यों के बीच संवाद होते हैं ।

गुणातीतानंद स्वामी कहते हैं :

- महाराज ने वचनामृत में अपने अंतरतम रहस्यों, इच्छाओं और नीति नियमों के बारे में

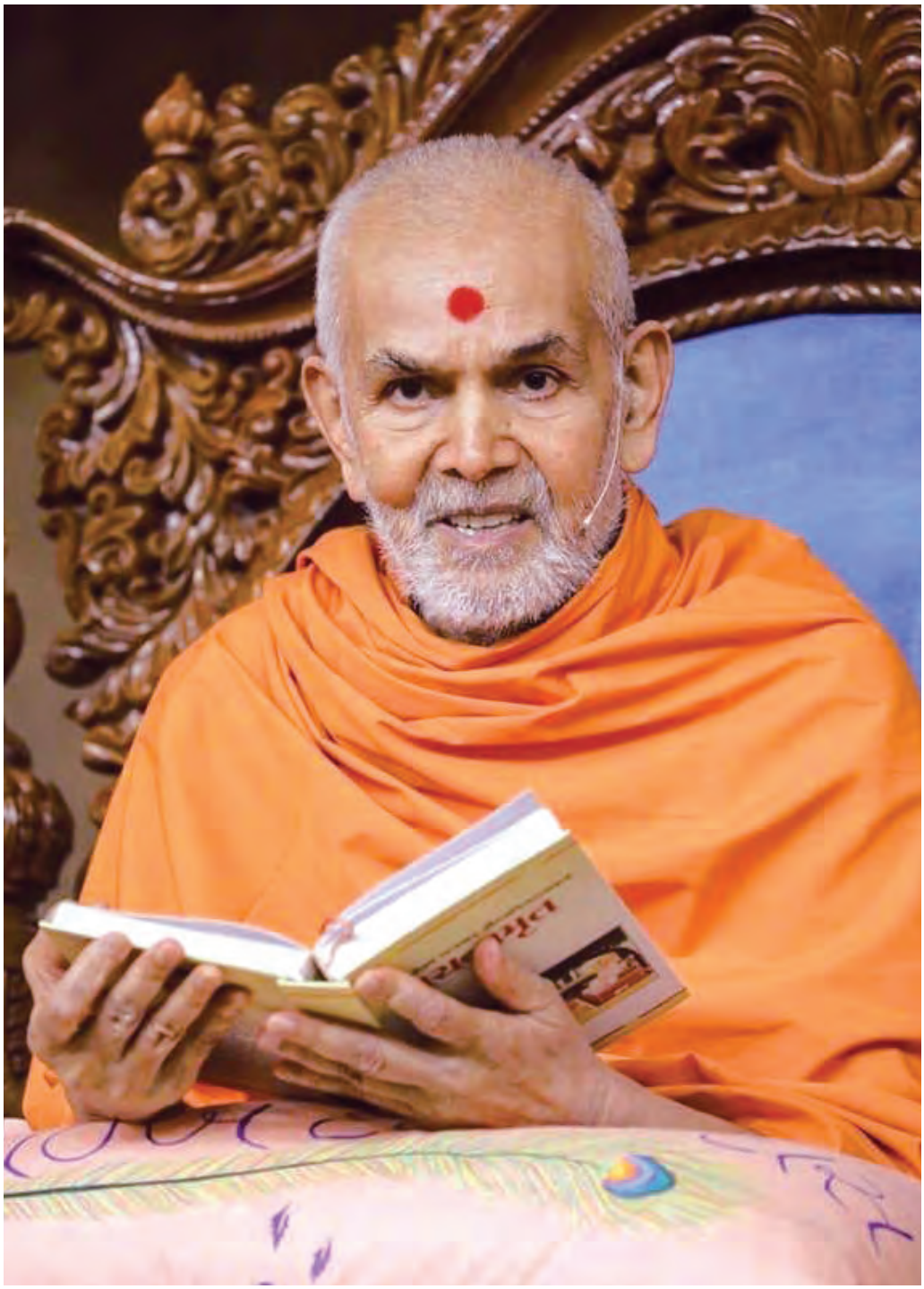

ध्यान में साधु

बहुत कुछ कहा है । इन पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए और इन्हें आत्मसात्करना चाहिए ।

- वचनामृत में चार वेदों, छह शास्त्रों और अठारह पुराणों का सार है । इनमें महाराज ने नैतिक सिद्धांतों की व्याख्या की है । इसलिए इनका अध्ययन करना चाहिए ।

प्रसिद्ध बीएपीएस विद्वान श्री एच. डी. दवे कहते हैं :

"वचनामृत सच्ची वेदांतिक समझ को स्पष्ट करता है, चार वेदों के सार की चर्चा करता है, बारह वैदिक महाकाव्यों की व्याख्या करता है, सांख्य योग, वेदांत और पंचरात्र ग्रंथों की अन्योन्याश्रयता पर चर्चा करता है, आत्मा-प्राप्ति के लिए सांख्यनिष्ठा और योगनिष्ठा की आवश्यकता का वर्णन करता है । और भगवान की निरंतर अभिव्यक्ति को प्रकट करता है -भागवत धर्म का प्रदर्शन करने वाले सत्पुरुष, मोक्ष का प्रवेश द्वार है और भक्तों के लिए आध्यात्मिक मार्गदर्शक है । वचनामृत में एकांतिक धर्म पर भी विस्तार किया गया है जिसमें धर्म, ज्ञान, वैराग्य और प्रकट गुणातीत सत्पुरुष - जो परब्रह्म परमात्मा और उनके निवास ब्रह्मधाम, और सिद्धांतों को प्राप्त करने का माध्यम है । आत्यंतिक मोक्ष - परम मुक्ति प्राप्त करने के लिए आकांक्षी की सहायता करते हैं ऐसे गुणातीत और की आध्यात्मिक अवस्था का निर्देश है ।

वचनामृत स्वामिनारायण संप्रदाय का प्रमुख ग्रंथ है । यह 1819 से 1829 तक भगवान स्वामिनारायण द्वारा दिए गए 273 आध्यात्मिक प्रवचनों का संकलन है । यह आध्यात्मिक पाठ है और तर्क, प्रबुद्ध उपमाए और रूपक, और दिव्य रहस्योद्घाटन, जीवन के गहनतम रहस्यों और प्रश्नों के दार्शनिक और व्यावहारिक उत्तर प्रदान करते हैं । वचनामृत सभी साधकों को क्रोध पर काबू पाने, ईश्वर के स्वरूप को समझने, ईर्ष्या को दूर करने, सहयोगियों को जानने, सच्चे गुरु को पहचानने और ईश्वर में विश्वास विकसित करने के बारे में प्रकाशित करते हैं ।

वचनामृत आध्यात्मिक ज्ञान, गहरी आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और भगवान स्वामिनारायण के स्वयं सर्वोच्च वास्तविकता के व्यावहारिक अनुभव के आधार पर हिंदू धर्म ग्रंथों का सार है ।

सत्संग दीक्षा मुखपाठ

सत्संग दीक्षा शास्त्र संस्कृत में है । इसमें 315 श्लोक है । यह भगवान स्वामिनारायण द्वारा प्रकट यज्ञ और आज्ञा को समझाने का एक शास्त्र है । इसे महंत स्वामी महाराज ने लिखा है ।

महंत स्वामी ने सुझाव दिया कि युवा भक्तो को इसका पठन करना चाहिए । स्वामीश्री ने सभी 315 व्यक्तिओं को कंठस्थ कर इसे अपनी जीवन-शैली में शामिल करने के लिए

प्रेरित किया । स्वामी के आह्वान के जवाब में 3100 से अधिक ''युवक और युवतियों'' ने 18-20 फरवरी 2021 ने सम्मान समारोह में भाग लिया । पूरा कार्यक्रम वेब-ऑन-एयर था । 300 युवकों और युवतियों ने इसका पाठ किया । महंत स्वामी महाराज ने कहा, ''वर्तमान में आप 300 है लेकिन कई और लोग आपका अनुसरण करेंगे और आपके जैसे हजारों होंगे ।'' वे पूरे भारत और विदेशों से थे ।

इसकी शुरुआत 14 से 40 वर्ष की आयु के 5181 युवक और 3664 युवती के प्रारंभिक पंजीकरण के साथ हुई । कार्यक्रम सभी प्रतिनिधियों की सभा के साथ 18 फरवरी 2021 को शुरू हुआ । आत्मस्वरूप स्वामी ने सत्संग दीक्षा शास्त्र लिखने वाले महंत स्वामी महाराज द्वारा विकसित अवधारणा से प्रारंभ किया ।

चुने हुए 300 युवकों ने स्वामीश्री के समक्ष एक स्वर में सत्संग दीक्षा के श्लोक गाए और वातावरण दिव्य हो गया ।

दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में व्यस्त रहते हुए संस्कृत के सभी श्लोकों को याद रखना और सही उच्चारण से पढ़ना आसान नहीं है । दूसरी और, युवाओं ने अपने काम के घंटे बढ़ाएं और आराम और खाली समय कम किया । इसके लिए एकाग्रता, दृढ़ संकल्प और प्रबल इच्छाशक्ति की आवश्यकता थी, सभी ने इसे बड़े उत्साह, भक्ति और पूरे बल के साथ फिरभी पठन किया । स्वामीश्री ने उन सभी को आशीर्वाद दिया । ट्रॉफी, प्रमाणपत्र, प्रसाद और स्मृति चिन्ह दिए गए । दीक्षा के लिए स्वामीश्री ने कहा, ''मैं एक साधु हूं । मेरे पास भगवान है । मैं तुम्हें भगवान देता हूं । मैंने आप सभी के लिए हमेशा आशीर्वाद और आंतरिक शक्ति के साथ दृढ़ रहने की प्रार्थना की है ।''

तत्पश्चात् अक्षर देरी से अखंड ज्योत को स्वामीश्री के समक्ष लाया गया । उसकी लौ का उपयोग करते, स्वामीश्री ने दिया प्रकटाकर वचन दिया कि सभी को अक्षर-पुरुषोत्तम की महिमा को और प्रकट करने के लिए सत्संग दीक्षा को याद करके सीखी गई ब्रह्मविद्या का उपयोग करना चाहिए ।

आरती के बाद, जैसे ही जय नाद हर जगह गूंज रहा था, स्वामीश्री और नेनपुर में साधुओं ने उत्सव में बड़े-बड़े बीएपीएस ध्वज लहराए । साथ ही सभी युवा अपने घरों में छोटे-छोटे बीएपीएस झंडे लहराकर उत्सव में शामिल हुए ।

सभा से विदा होने से पहले स्वामीश्री ने एक तत्काल घोषणा की, जिसमें अपने-अपने मंदिरों से देख रहे सभी साधुओं, पार्षदों और साधकों को उनकी इस उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए सम्मान के निशान के रूप में सभी युवाओं को दंडवत् वंदन अर्पण करने का निर्देश किया ।

॥ સત્સંગદીક્ષા ॥
અખિલ ભારતીય
સંપૂર્ણ શ્લોક મુખપાઠ સ્પર્ધા - ૨૦૨૧
વિજેતા સન્માન સમારોહ
અખિલ ભારતીય
સંપૂર્ણ શ્લોક મુખપાઠ સ્પર્ધા - ૨૦૨૧
સંકલ્પ - ૨૦૦૦

इस प्रकार प्रसन्नचित्र और जीवन भर के लिए दिव्य स्मृतियों से सभर स्वामीश्री वास्तव में उनके भक्तिपूर्ण प्रयासों से प्रसन्न थे । यह प्रतीति से युवाओं प्रफुल्ल थे ।

लाभ की अनुभूति

महंत स्वामी महाराज को प्रसन्न करने के लिए उनकी कड़ी मेहनत और इच्छा के माध्यम से प्रतिभागियो ने कई व्यक्तिगत लाभों का अनुभव किया । उनके अनुभवों में निम्नलिखित सामिल है –

- किसी भी स्थिति में आत्मनिरीक्षण करने की आदत विकसित की ताकि यह तय किया जा सके कि कैसे आगे बढना है ।
- इस समझ को मजबूत किया कि ईश्वर सर्व कर्ता है ।
- वचनामृत और स्वामी की बातों का प्रतिदिन पाठ करने का संकल्प ।
- सत्संग की सेवा करने का अवसर पाकर अपार सौभाग्य का एहसास हुआ ।
- एकादशी को कभी न चूकने के लिए प्रेरित हुए ।
- पारिवारिक और अन्य परिस्थितियों का निपटने के लिए आंतरिक शक्ति प्राप्त की ।
- कठिन कार्यों को करने और हासिल करने के लिए आत्मविश्वास विकसित हुआ ।
- पारस्परिक रूप से लाभप्रद तरीके से दूसरों के साथ बातचीत करना सीखा ।
- अधिक धैर्य विकसित हुआ ।
- प्रशंसा की अपेक्षा और अहंकारी भावनाए कम हुई ।
- स्मृति बढ़ाने के लिए संस्कृत की क्षमता का एहसास हुआ ।
- तनावपूर्ण स्थितियों में शांत रहने की क्षमता विकसित की ।
- ध्यान और पूजा के दौरान बेहतर ढंग से ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बने ।
- एहसास हुआ कि भगवान जो कुछ भी करते है वह अंततः हमारे लाभ के लिए होता है ।
- अपने जीवन में महंत स्वामी महाराज की उपस्थिति का अनुभव किया ।
- स्वामीश्री की इच्छा पूरी होने पर बहुत खुशी की अनुभूति हो रही है ।
- अधिक उत्पादक बनने के लिए समय का प्रभावी ढंग से उपयोग करना सिखा ।
- सत्संग सिद्धांतों की स्पष्ट और गहरी समझ विकसित हुइ ।

प्रेरणा के मोती

महंत स्वामी महाराज की शिक्षा

विचारों की शक्ति

दूसरों को व्यर्थ और मूर्ख मानने से ईश्वर हमें वैसा ही बना देता हैं । हम वही बन जाते हैं जो हम दूसरों के बारे में सोचते हैं । इसलिए, हमें सभी को दिव्य और भगवान के भक्त समझना चाहिए ।

दोष-खोज का परिणाम

जो दूसरों में दोष या अभाव देखता है, वह निश्चित रूप से परिणाम भोगता है । परिणाम स्वरूप उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और उसे बुरे विचार आते हैं ।

नकारात्मकता दूर करना

नकारात्मक मनोवृत्ति को दूर करने के उपाय हैं, 'दूसरों के आनंद में हमारा अपना आनंद है' की भावना का विकास करना और सभी के लिए निर्देशित सभी को शुद्ध बुद्धि और दोषरहित समझना है ।

सद्‌भाव प्राथमिक है

संप, एकता बनाए रखने के लिए सोचना चाहिए की हम क्या कर सकते हैं, हमारे पास किस प्रकार के विचार होने चाहिए और हमें क्या कहना चाहिए । यह मत देखें कि दूसरे क्या करते हैं या नहीं करते हैं हमें अपनी तरफ से संप (एकता) व्यक्त करनी चाहिए ।

पूर्ण सफलता

प्रश्न : पूर्ण सफलता क्या है ?

उत्तर : भीतर सर्वोच्च शांति का अनुभव करना ।

सामंजस्य के लाभ

सामंजस्यपूर्ण ढंग से काम करने के लाभ अपार हैं : व्यक्ति अत्यधिक प्रगति करता है, विशाल आंतरिक विकास प्राप्त करता है और पूरा देश सुखी हो जाता है । हालांकि, जब कोई व्यक्ति लड़ता है, तो वह सब कुछ नष्ट कर देता है ।

पारिवारिक संकटों का समाधान

प्रश्न : पारिवारिक समस्याओं का समाधान कैसे करें और शांति का अनुभव कैसे करें ?

उत्तर : एक दूसरे को समझने की कोशिश करें ।

बच्चों के लिए संदेश

प्रश्न : बच्चों के लिए आपका क्या संदेश है ?

उत्तर : मन लगाकर पढ़ाई करें ।

चार सिद्धांत

जब कोई गलती करता है तो उसे विवेक, नम्रता के साथ, उसे अपना मान कर और उसकी आत्मा की भलाई के लिए बताएं ।

मन की स्थिरता

प्रश्न : हमारा मन व्यग्र हो जाता है । मन की स्थिरता प्राप्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?

उत्तर : सत्संग करें । ग्रेजुएट होने में 20 साल लगते हैं । इसी तरह, इसमे धैर्य और श्रध्धा रखनी होगी, और संत समागम साधुओं के साथ संगति करनी होगी ।

दिव्य मन

प्रश्न : मन को दिव्य बनाने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?

उत्तर : सकारात्मक या स्वस्थ विचारों में व्यस्त रहें । यदि कोई नकारात्मक विचार उठे तो उसे तुरंत दूर कर दें, क्योंकि यह आप को नष्ट कर देगा । हालांकि, एक बार जब मन दिव्य हो जाता है, तो समस्याएं आपको प्रभावित नहीं करेंगी ।

मन के प्रकार

मन के तीन प्रकार :

1. एक साधारण दिमाग है जो विवेकपूर्ण सोच नहीं सकता, जो कुछ उसके रास्ते में आता है वह यह सब कुछ करता है ।
2. एक दिव्य दिमाग अच्छे कर्म करने की प्रेरणा देता रहता है ।
3. एक बुरा दिमाग कभी भी अच्छे के बारे में नहीं सोचता; यह खराब चीजें करने के बारे में सोचता है।

एक आदेश

प्रश्न : युवाओं को आपकी कौन सी आज्ञा का पालन करना चाहिए ताकि आप उनसे पूर्ण रूप से प्रसन्न हों ?

उत्तर : नैतिक नियमों का पालन करें ।

शांति या बेचैनी

जो अपने दोषों को देखता है और उन्हें दूर करने का प्रयास करता हैं वह शांति प्राप्क करता है । लेकिन जो दूसरों के दोष देखता है वह पापी है और दुःख का अनुभव करता है ।

परम शांति

संप, सुहृदभाव और एकता का अभ्यास करने से व्यक्ति भगवान के प्रचुर 'रजिपो' को प्राप्त करता है । व्यक्ति परम शांति का अनुभव करता है । जबकि दूसरों में दोष या अवगुण खोजना कूड़े के समान है : व्यक्ति व्यग्र हो जाता है और दूसरों में व्यग्रता पैदा करता है ।

दूसरों के आगे झुकना

सत्संग में आपको दूसरों के सामने झुकना सीखना होता है न कि दूसरों को अपने सामने झुकाना । साथ ही दूसरों को अपने से बड़ा समझे, और अपने आप को निम्न समझे ।

विनम्रता सभी गुणों को जोडती है

नम्रता जोड़ने की एक शक्ति है । इसे प्राप्त करने पर अन्य सभी गुण एक साथ बंधे और बंधे रहते हैं । हालांकि, विनम्रता के बिना, सभी गुण एक के बाद एक बाहर निकलते हैं और व्यक्ति खाली और बंजर हो जाता है ।

सकारात्मक सहवास रखें

जो दूसरों की आलोचना करता है, उसकी संगति से दूर रहो, क्योंकि वह तुम्हारी बुद्धि को बिगाड़ देगा । जैसे सड़ा हुआ आलू दूसरे आलू को अपने संग से खराब कर देता है, वैसे ही ऐसे व्यक्ति से दूर रहें ।

सत्संग के अ, ब, क

सत्संग के अ, ब, क शरीर से अलग होने के लिए अपने आत्मा को महसूस करना है । इसके बाद ही उसके सभी आध्यात्मिक कार्य सिद्ध होंगे । जब तक शरीर और आत्मा आपस में जुड़े रहेंगे, तब तक कोई भी प्रयास फल नहीं देगा ।

सत्संग का फल

आम के पेड़ का उद्देश्य क्या है? आम पैदा करने के लिए । केले के पौधे का उद्देश्य केला देना होता है7 वैसे ही सत्संग करने का फल सोचा है? देहाभिमान, शरीर के लिए लगाव और अहंकार से छुटकारा और यह विश्वास कि कोई शरीर नहीं बल्कि आत्मा है ।

ठाकोरजी के दर्शन

प्रश्न : ठाकोरजी के दर्शन करते समय आप क्या सोचते हैं ?

उत्तर : भगवान ने हम पर अपनी प्रचुर कृपा बरसाई है । उन्होंने हमें एक महान आध्यात्मिक संघ दिया है। अतः मैं उनका आभार प्रकट करता हूं । मैं पूरी एकाग्रता और आंखों के संपर्क द्वारा उनका दर्शन करता हूं।

पूरा विश्वास

प्रश्न : कोई कैसे जान सकता है कि उसे भगवान और गुरु में पूर्ण विश्वास है ?

उत्तर : वह एक आंतरिक आनंद का अनुभव करता है । बाह्य रूप से कितनी भी अशांति उत्पन्न हो जाए, व्यक्ति स्थिर रहता है ।

विवेक

अपने मूल स्वभाव को जानना आध्यात्मिक विवेक है और हिन प्रकृति को भंग करना परम आध्यात्मिक विवेक है ।

समस्याओं का समाधान

भगवान के भक्त को आत्मा की शक्ति और भगवान की महिमा की शक्ति के क्षेत्र में प्रवेश करना चाहिए। तभी कई समस्याओं का समाधान होगा । इसमे अतिरिक्त शारीरिक शक्ति, बौद्धिक शक्ति और अन्य शक्तियां गंभीर मुद्दों को सुलझाने में पर्याप्त नहीं हैं ।

केसर आम

प्रश्न : सत्संग से सुख कैसे प्राप्त करें ?

उत्तर : स्वामीश्री ने केसर आम दिखाया और कहा, "योगी बापा कहते थे कि सभी में गुणों को देखने से केसर आम के रस की तरह जीवन में मिठास का अनुभव होगा । दूसरों में अच्छे गुण देखकर, महिमा और दिव्य भाव होने से व्यक्ति को परम आनंद का अनुभव होगा । लेकिन जब कोई दूसरों में दोष देखता है तो उसका जीवन खट्टा हो जाता है ।"

सपने

प्रश्न : जब आप सोने के लिए अपनी आंखें बंद करते हैं तो आप सपने में क्या देखते हैं ?

उत्तर : भगवान की मूर्ति, भक्त और साधु ।

'जीवन की यात्रा में तेरे साथ ही हूं.....'

जीवन में अकेलापन कैसे दूर हो? स्वामीश्री के साथ सत्संग.....

चैनपुर के शांत वातावरण में महंत स्वामी महाराज और युवक संत आध्यात्मिक सत्संग कर रहे थे । युवा संतो ने अपनी आध्यात्मिक जीज्ञासाओ को स्वामीजी के सामने राखी और स्वामीश्री ने उसके अपने अनुभव से सरल और स्पष्ट उत्तर दीये ।

अंत में एक प्रश्न पूछा गया :

''हम कई बार डिप्रेशन में चले जाते है, एकलता का अनुभव करते है और ऐसा बहुत कुछ होता है तो कौन सा चिंतन उसको कैसे मीटा शकता है ?''

स्वामीश्री ने उत्तर देते हुए कहा :

''हमे भगवान की प्राप्ति हुई हे हमेशा ऐसा सोचना चाहिए । भगवान हमारे साथ ही है उसका खोज करना। ये एक दीन की बात नही है । हमे तो मन के साथ लगातार कुस्ती लड़नी चाहिए । और संत योगीबापा, प्रमुख स्वामी महाराज, शास्त्रीजी महाराज में द्रढ विश्वास बनाए रखना और 'वोह जो कहेंगे वे मुजे करना ही है' ऐसा संकल्प रखे तो ही हम आगे बढ़ पाएंगे ।'' यह कहके स्वामीजी ने एक कहानी सुनाई :

एक बालक था । गर्मी की छुट्टीयों में उसके माता- पिता हर साल उसको उसकी दादीमाँ के घर ले जाते। और मीलके दूसरे दिन उसी ट्रेन से वापस आते । ऐसा बरसो से चलता था । बाद में बालक ने एक दिन बोला ' अब में काफी बड़ा हो गया हू तो इस साल में दादीमाँ के घर अकेले जाऊं तो ?' थोड़ी बातचीत के बाद उसके माता-पिता सहमत हुए और जाने का दिन तय हुआ ।

माता-पिता उसे रेल्वे स्टेशन छोडने आए । ट्रेन चलाने की तैयारी में थी तो वोह खीड़की में से उसे मीलने लगे और आखरी बार शीख देने लगे तो बालक ने बोला ' में सब जानता हू । आप मुजे कम से कम 100 बार यह बता चूके है ।

ट्रेन चलाने लगी उस समय बालक के पिता ने धीरे से कहा 'देख बेटे रास्ते में कभी तुजे अचानक से कोई बूरा अनुभव हो या तुम डर जाओ तो यह तुम्हारे लीये है ऐसा बोलके ! उनहो ने बालक की जेब में कुछ रख दीया ।

ट्रेन चली.... अब वोह बालक अकेला था...., ट्रेन में बैठा, उसके माता-पिता बगैर, जीवन में पहेली बार.... थोड़ी देर तो उसे अच्छा लगा । खीड़की में से वोह खूबसूरत प्राकृतीक द्रश्य..... देखने लगा.....

तब तक उसके आसपास अंजाने लोग आने लगे, आवाज करने लगे, डिब्बे में आने जाने लगे । उसमे से एक जो मुखीया लगता था उसने बोला यह अकेला है । उसको ऐसी नजर से देखा भी....

अब क्या होगा ? बालक सोचने लगा । बालक बैचेनी का अनुभव करने लगा । वोह सर नीचे करके सीट के कोनै में बेठ गया । उसकी आंखो में आँसू भर आए ।

उसी समय उसके पिता उसकी जेब में कुछ रखते थे वो याद आया । काँपते हाथो से उसने जेब टंटोली, तो एक कागज का टूकड़ा नीकला । उसने कागज को खोला उसमे लीखा था : 'बेटा, में इस ट्रेन में पीछे आखरी डिब्बे में तेरे साथ ही हू.....'

इतना पढ़ते ही बालक में हिम्मत आ गई और डर और अकेलापन दूर हो गया ।

जीवन में भी ऐसा ही है । भगवान ने जब हमे इस धरती पर भेजा तब उनहो ने भी हमारी जेब में एक चीठ्ठी रखी है : बेटा, में आखरी डिब्बे में तेरे साथ ही हूँ...''

जीवन की ट्रेनयात्रा में भगवान साथ ही है । इस लीये उन में विश्वास रखे, उन में श्रद्धा रखो - वह हमेंशा हमारे साथ है । तो अकेलापन नही लगेगा ।

स्वामी श्री ने इस बोधकथा से सब को हिम्मत और प्राप्ति के कैफ से छलका दीये ।

गुरुहरी महंत स्वामी महाराज के सानिध्य में योजीत अखिल भारतीय बाल - बालीका कारिका मुखपाठ सन्मान समारोह

त्रिवेणी संगम

स्वामिनारायण अक्षरधाम - नई दिल्ली
ज्ञान, अध्यात्म और विज्ञान का त्रिवेणी संगम

स्वामिनारायण अक्षरधाम अपने सभी पहलुओं में भारत की गौरवशाली विरासत के सार को प्रदर्शित करता है। ये आध्यात्मिकता, ज्ञान, कला, वास्तुकला और विज्ञान व अतीत का उत्सव है, वर्तमान को संबोधित करता है और भविष्य को आकार देता है । और सभी को ईश्वर में विश्वास, शांति और खुशी, अखंडता और राष्ट्रीय गौरव के प्रति प्रेरित करता है । अक्षरधाम मंदिर स्वयंसेवा, प्रतिभा और आध्यात्मिक विश्वास का प्रमाण है । यह परियोजना पांच साल तक तीन हजार लाख घंटे के कुशल और स्वैच्छिक प्रयास से पूरी की गई है ।

प्रमुख स्वामी महाराज ने कहा, ''अक्षरधाम विश्वास और शांति का स्थान है और शाश्वत सुख की दिशा में अपने प्रयास में मानव जाति को प्रेरित करता है, समृद्ध करता है और शक्ति प्रदान करता है ।'' यह ज्ञान, अध्यात्म और विज्ञान और प्रौद्योगिक का त्रिवेणी संगम है ।

पूर्व राष्ट्रपति, डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने व्यक्त किया कि ''स्वामिनारायण अक्षरधाम,

गुरुहरी महंत स्वामी महाराज के सानिध्य में योजित अखिल भारतीय बाल-बालीका कारिका मुखपाठ सन्मान समारोह

आराधना के एक नये प्रमुख केंद्र ने भारतीय संस्कृति और आस्था को गौरवान्वित किया है ।''

''लेकिन ये करने वाला कौन है ? विशाल फिल्म थियेटर में हमने इसके निर्माता को देखा । एक बच्चा नदियों के बीच से गुजरते हुए, बर्फ से ढके हिमालय पर चढ़ता है, फिसलता है, फिसलता है और फिर चढ़ता है और चढ़ता है, पूरे देश में घूमता है और भारत की सभ्यता के उद्‌गम स्थल की खोज करता है । यह बच्चा कौन है ? क्या आप बच्चे को याद कर सकते हैं ? ओह ! वह है दैवी संतान, बालक स्वामिनारायण।

यह एक सुंदर सांस्कृतिक परिसर का निर्माण शिक्षा, अनुभव और प्रबुध्धता का स्थान है । इसमें पारंपारिक पत्थर नकशीकाम और स्थापत्य कला, भारतीय संस्कृति, प्राचीन मूल्य और बुद्धि कौशल्य एवं आधुनिक माध्यम और तकनीकी का सर्जनात्मक संयोजन हुआ है । इस परिसर के बहुस्तरीय आयोजन में बौद्धिक शक्ति, मानवीय इच्छाशक्ति, अदम्य सामर्थ्य, अस्खलित करुणा, विज्ञान और तकनीकी समज का संयोजन, विविध सांस्कृतियों के अनेक रंग और आखिरी में समग्र ज्ञान की शक्ति अभिव्यक्त हो रही है तत्वतः यह जीवंत प्रतिमाओं का चेतनासभर परिसर है ।

मंदिर

इसे सुंदर गुलाबी बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर से बनाया गया है । स्मारक 141 फीट ऊंचा, 316 फीट लंबा है । इसे बिना स्टील के बनाया गया है । इसमें 234 अलंकृत नकाशीदार स्तंभ, 9 अलंकृत गुंबद, 20 चतुर्भुज शिखर हैं । इसकी बाहरी दीवारों पर एक शानदार गजेंद्र पीठ (पत्थर के हाथियों का स्तंभ) और 20,000 मूर्तियां और भारत के महान साधुओं, भक्तों, आचार्यों और दिव्य अवतारों की प्रतिमाए हैं ।

स्वामिनारायण मंडपम्

आंतरिक गर्भगृह में बैठे भगवान स्वामिनारायण की 11 फीट ऊंची स्वर्ण मंडित मूर्ति है, साथ ही गुरु परम्परा, अर्थात् अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी, भगतजी महाराज, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज और प्रमुख स्वामी महाराज की मूर्तियां स्थापित है ।

सनातन धर्म के देवता श्री सीता-राम, श्री राधा-कृष्ण, श्री लक्ष्मी-नारायण, श्री शिव-पार्वती, सब अवतार और भगवान की चार चतुर्व्यूह और 24 केशव मूर्तियां बहुत प्रमुख हैं ।

परमहंस मंडपम्

परमहंस मंडपम् 72 फीट ऊंचा है । यह एक भव्य, अलंकृत नकाशीदार गुंबद है । इसमें भगवान स्वामिनारायण के परमहंस की मूर्तियां हैं । चतुर्भुज और अष्टभुजाकार स्तम्भों को

म्यूजिकल फाउंटेन, अक्षरधाम नई दिल्ली

भारत की १२० पवित्र नदियों से एकत्रित जल की औपचारिक पूजा

कनाडा के प्रधान मंत्री स्टीफन हार्पर का अक्षरधाम, नई दिल्ली का दौरा

स्वस्तिक स्तम्भ कहा जाता है । खंभों को भगवान केशव के 24 विभिन्न रूपों की अलंकृत मुर्तियों से उकेरा गया है ।

घनश्याम मंडपम्

घनश्याम मंडपम् आठ स्तंभों पर टिकी हुई है । इसमें 38 फीट चौड़ा तश्तरी के आकार का गुंबज है जो जमीन से 32 फीट ऊपर है । मोर की आकर्षक डिजाइन वाले गुंबज के केंद्र में भगवान स्वामिनारायण के बाल रूप घनश्याम महाराज की नाजुक नकाशी वाली मूर्ति है । खंभों में भगवान स्वामिनारायण के बचपन की घटनाओं को दर्शाती सुंदर नकाशी है ।

कीला मंडपम्

कीला मंडपम् 72 फीट ऊंचा है । इसके चार मुखी स्तंभों पर भगवान स्वामिनारायण के बचपन, किशोरावस्था और उनके बाद के वर्षों की कहानियों को चित्रित करती नकाशी है ।

नीलकंठ मंडपम्

ग्यारह वर्ष की आयु में, भगवान स्वामिनारायण ने अपना घर छोड़ दिया और नीलकंठवर्णी के रूप में जाने जाने लगे । उन्होंने भारत की सात साल की तीर्थयात्रा पैदल की । जमीन से 32 फीट ऊपर आठ भुजाओं वाले स्तंभ और तश्तरी के आकार के अलंकृत गुंबज पर नीलकंठ मोहक कहानियों उकेरी गई है । गुंबज के केंद्र में नीलकंठवर्णी की नाजुक और सुंदर मूर्ति है ।

स्मृति मंडपम्

1781 से 1830 तक भगवान स्वामिनारायण ने सनातन धर्म में नई निष्ठा को प्रेरित किया । पृथ्वी पर उनके जीवन और कार्य को दिखाने के लिए स्मृति मंडपम् में उनके पदचिन्हों की प्रतिकृति प्रदर्शित की गई है । प्रदर्शित अन्य अवशेष उनके केश, माला, कपड़े और अन्य वस्तुएं हैं, जो 200 से अधिक वर्षों पहले पृथ्वी पर उनकी उपस्थिति की याद दिलाते हैं ।

सहजानंद मंडपम्

इसमें 32 फुट ऊंचे तश्तरी के आकार के गुंबज को आधार देने वाले आठ भुजावाला अलंकृत स्तंभ हैं । इसके केंद्र में भगवान स्वामिनारायण (सहजानंद स्वामी) की एक सुंदर पत्थर की मूर्ति है । वे एक विशाल नीम के पेड़ के नीचे बैठे हैं । केवल 21 वर्ष की आयु में वे आध्यात्मिक प्रमुख बने और 25 वर्ष की आयु में, उन्होंने 500 विद्वानों और धर्मपरायण परमहंसों को दीक्षा दी । उनके प्रति श्रद्धा के रूप में, अक्षरधाम के मंडपों और स्तंभों में परमहंसों की 500 संगमरमर की मूर्तियां है ।

भक्त मंडपम्

भगवान स्वामिनारायण ने अपनी प्रेरणा से सनातन धर्म को ब्राह्मण वर्गों से दलितों तक अनगिनत लोगों को पहुंचाया । 72 फीट ऊंचे भक्त मंडपम् के स्तंभों पर उनके हजारों महान भक्तों में से 148 मूर्तियों को प्रदर्शित किया गया है ।

पुरुषोत्तम मंडपम्

पुरुषोत्तम मंडपम् में अक्षरब्रह्म गुणातीतानंद स्वामी और दिव्य भक्तों के साथ भगवान स्वामिनारायण की सुंदर संगेमरमर की मूर्तियां मिलती हैं ।

मंडोवरी

स्वामिनारायण अक्षरधाम मंदिर की सुंदर बाहरी दीवारों को मंडोवर के नाम से जाना जाता है । नाजुक नकाशीदार मंडोवर 611 फीट लंबा और 310 फीट ऊंचा है । इसमें महान ऋषियों, साधुओं, भक्तों, आचार्यों और दिव्य अवतारों की 200 शिल्प कृतियां हैं । यह विभिन्न गजस्तर सिंहस्तर, व्यालस्तर, कुंभस्तर, कलशस्तर, गवक्षस्तर, जिंघा और छज्जा के स्तरों में बना है । कुंभस्तर में श्री गणेशजी की अलग-अलग मुद्रा में 48 अलंकृत नकाशीदार मूर्तियां शामिल है ।

मंडोवर को इसके आधार स्तर का जगती कहा जाता है । इस स्तर में विश्व के सज ीवों की नकाशी मिलती है । सबसे पहले, एक हाथी है, जो शक्ति का प्रतीक है, दूसरा शेर जो शौर्य और उग्रता का प्रतीक है । इसके बाद, व्याल जानवर (एक विलुप्त पौराणिक पक्षी) मिलता है जो गति के लिए प्रसिद्ध था । बाद की परतों में फूलों की नकाशी मिलती है जो सुंदरता और सुगंध का प्रतीक है । मंडोवर के मध्य भाग में भगवान, ऋषियों, देवों, आचार्यों और भक्तों के दिव्य अवतारों की मूर्तियां मिलती हैं ।

नारायण पीठ

मंदिर की शिखर की प्रदक्षिणा को नारायण पीठ कहा जाता है । यहां, सुंदर कांस्य पैनल भगवान स्वामिनारायण के जीवन से दिव्य घटनाओं को दर्शाते हैं । प्रत्येक 60 फीट लंबे ऐसे तीन पैनल में भगवान स्वामिनारायण को गढ़डा में नीम के पेड़ के नीचे प्रवचन देते हुए, त्योहार मनाते हुए और लोगों को नैतिक और आध्यात्मिक रूप से सुधारने और उन्नत करने के लिए विभिन्न वाहनों से यात्रा करते हुए दिखाएं हैं ।

गजेंद्र पीठ

गजेंद्र पीठ प्रकृति, मनुष्य और परमात्मा के साथ हाथियों की कहानियों और किंवदंतियों की विशेषता वाली निचली प्रदक्षिणा अद्वितीय और मनोरम है । यह 1,070 फीट तक

गजेंद्र पीठ, अक्षरधाम, नई दिल्ली

फैले गुलाबी पत्थर में अलंकृत रूप से उकेरा गया है । ये पीठ पूरे पशु जगत के प्रतीक हाथियों को श्रद्धांजलि अर्पित करती है । प्रदर्शन सामाजिक सद्भाव, शांति और आध्यात्मिक विश्वास के संदेशों को दर्शाता है ।

नारायण सरोवर

नारायण सरोवर मुख्य अक्षरधाम मंदिर को घेरे एक पवित्र झील है । इसमें मानसरोवर सहित देश भर की 151 नदियों और झीलों का पवित्र जल है । नारायण सरोवर में 108 गौमुख हैं, जो भगवान के 108 नामों का प्रतीक हैं ।

परिक्रमा

परिक्रमा (परिक्रमा पथ) को ईश्वर के प्रति श्रद्धा और भक्ति प्रदान करने के मार्ग के रूप में माना जाता है । दो मंजिला स्वामिनारायण अक्षरधाम परिक्रमा राजस्थान के लाल पत्थर से बनी है, इसमें 1,152 स्तंभ, 145 खिड़कियां और 154 संवरण शिखर शामिल हैं । निचली परिक्रमा की हर खिड़की और गैलरी से अक्षरधाम मंदिर के अलग, लुभावने दृश्य दिखाई देते हैं ।

प्रदर्शनी हॉल

ह्लीन प्रदर्शनी हॉल में से प्रत्येक आधुनिक और वैज्ञानिक तरीके से भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को दर्शाता है :

1 मूल्यो का हॉल (सहजानंद दर्शन)

खुशी, सफलता और मन की शांति के लिए किसी के जीवन को तराशने का मुख्य विषय खुद को तराशते हुए एक व्यक्ति के शिल्प द्वारा चित्रित किया गया है । प्रदर्शनियों में भगवान स्वामिनारायण के जीवन का फिल्म शो, 3-डी डायोरमा और ऑडियो-एनिमेट्रोनिक्स प्रस्तुतियों के माध्यम से अहिंसा, पुरुषार्थ, प्रार्थना, नैतिकता, शाकाहार, पारिवारिक सद्भाव, आदि के सार्वभौमिक संदेशों को चित्रित किया गया है ।

2 जाइंट स्क्रीन थियेटर (नीलकंठ दर्शन)

एक महाकाव्य जैसी लंबी फिल्म 18 वीं शताब्दी के अंत में भारत में बाल-योगी नीलकंठवर्णी की रोमांचक और प्रेरक तीर्थयात्रा को चित्रांकन करती है । इसे उत्तर में हिमालय की बर्फीली चोटियों से लेकर दक्षिण में केरल के प्राचीन तटों तक 108 स्थानों पर शूट किया गया है । फिल्म भारत के पवित्र स्थानों, त्योहारों और आध्यात्मिक परंपराओं को एक विशाल पर्दे पर दर्शाती है जो छह मंजिला से अधिक ऊंची है ।

Hall of Values

Giant Screen Theatre

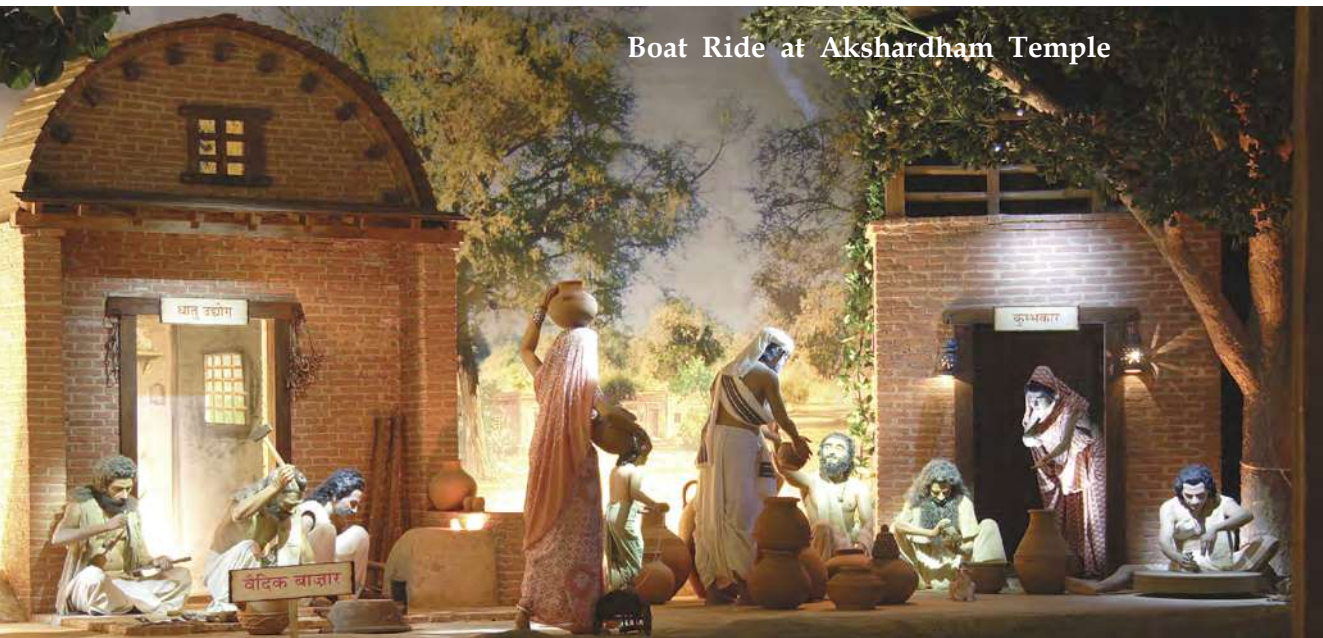
Boat Ride at Akshardham Temple
धातु उद्योग
कुम्भकार
वैदिक बाज़ार

3 नाव की सवारी (संस्कृति विहार)

12 मिनिट की नाव की सवारी में भारत की गौरवशाली विरासत का 10,000 वर्षों के दौरान एक शानदार अनुभव मिलता है ।

- दुनिया के सबसे पुराने ग्रामीण जीवन और वैदिक भारत के बाजार ।
- दुनिया के पहले विश्वविद्यालय तक्षशिला का दर्शन ।
- भारत के महान ऋषि-वैज्ञानिकों द्वारा शून्य, गुरुत्वाकर्षण, खगोल विज्ञान, प्लास्टिक सर्जरी, आयुर्वेद और आदि ऐसे प्राचीन खोजों और आविष्कारों ।

नीलकंठवर्णी की मूर्ति

नीलकंठवर्णी की 27 फीट ऊंची एक सुंदर और प्रभावशाली कांस्य मूर्ति बड़े फिल्म थिएटर के बाहर प्रेरक मुद्रा में है ।

संगीतमय फव्वारा (यज्ञपुरुष कुंड)

यज्ञपुरुष कुंड वैदिक यज्ञ कुंड और संगीतमय फव्वारा का एक अद्‌भुत संयोजन है । इसका नाम बीएपीएस स्वामिनारायण संस्था के संस्थापक और भगवान स्वामिनारायण के तीसरे उत्तराधिकारी स्वामी यज्ञपुरुषदासजी ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज के नाम पर रखा गया है । यह विशाल यज्ञ कुंड 300 फीट X 300 फीट का है, और इसमें 2,870 और 108 देरीयां है । इसके केंद्र में कमल के आकार का यज्ञ कुंड है । रात में, रंगीन संगीतमय जलधारा के फव्वारों के साथ केंद्र जीवंत लगता है ।

ये फाउंटेन शो भारत की वैदिक भावनाओं को प्रतिध्वनित करता है । संगीतमय फव्वारा अपने सभी सुंदर रंगो, पानी की विविध आकृतियां पैटर्न और संदेशों में मनोरंजक और लुभावने है ।

भारत उपवन

भारत उपवन सांस्कृतिक पाश्चादभू वाला एक शानदार उद्यान है । इसने लॉन, हरे-भरे बगीचे और भारत के आदर्श रूप महान व्यक्तियों के अद्‌भुत कांस्य प्रतिमाएं है । वीर योद्धा, स्वतंत्रता सेनानी, राष्ट्रीय हस्तियां और महान महिला व्यक्तिविशेष की मूल्यवान प्रतिमाएं आगंतुकों हमारे महान राष्ट्र के गर्व के लिये को प्रेरित करते हैं ।

स्वामिनारायण अक्षरधाम इस प्रकार त्रिवेणी संगम, आध्यात्मिकता, ज्ञान और प्रौद्योगिकी का संगम है ।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक गैलीलियो के बारे में एक कहानी है । परंपरागत रूप से, उस समय

दृढ़ता से यह माना जाता था कि पृथ्वी चपटी है और सूर्य इसके चारों ओर घूमता है । लेकिन गैलीलियो ने उस पर विश्वास नहीं किया। उसकी जिज्ञासा ने उन्हें इस पर शोध करने के लिए प्रेरित किया, जिससे अंततः पता चला कि पृथ्वी गोल है और चपटी नहीं है और यह सूर्य के चारों ओर घूमती है । जब उन्होंने यह घोषणा की तो रूढ़िवादी धार्मिक नेताओं को यह पसंद नहीं आया । उन्हें अपना बयान वापस लेने या सीधे परिणाम भुगतने के लिए कहा गया। गैलीलियो ने अपने बयान को वापस ले लिया, लेकिन इतिहास ने उन्हें सही साबित कर दिया । इस तरह की घटनाओं से यह विश्वास हो गया है कि विज्ञान और तथा कथित धर्म मेल नहीं खाते । वे दुनिया और जीवन और यहां तक कि तथ्यों को देखने के दो अलग-अलग तरीके हैं । जब भी वैज्ञानिक कारणों के आधार पर धार्मिक आदेशों का विरोध किया जाता है, तो वे कहते हैं, ''धर्म को वैज्ञानिक सिद्धांत में मत लाओ ।'' इस तरह की सोच आज भी जीवन के कई क्षेत्रों में व्याप्त है ।

महंत स्वामी महाराज कहते हैं : अक्षरधाम में आधुनिक दुनिया के लिए धर्म की एक अलग दृष्टि है । यह लोगों को तर्क और वास्तविक आत्म-साक्षात्कार और अभ्यास के आधार पर आध्यात्मिकता में विश्वास करने के लिए प्रेरित करता है । अध्यात्म के साथ विज्ञान, प्रौद्योगिकी और ज्ञान का उपयोग मानव जाति के लाभ के लिए ''त्रिवेणी संगम'' बनाता है । ऐसा त्रिवेणी संगम एक सुदृढ भावी पीढ़ी का विकास करता है जो सहस्त्राब्दियों कि अज्ञात चुनौतियों का सामना कर सकती है । अक्षरधाम ऐसा त्रिवेणी संगम है और मानव जाति के लिए युगपुरुष प्रमुख स्वामी महाराज का योगदान है ।''

ट्रस्ट

बोचासणवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

बीएपीएस का पहला केंद्र 1907 में गुजरात के आणंद जिले में बोचासन में स्थापित किया गया था । 24 जून 1947 को, ब्रह्मस्वरुप शास्त्रीजी महाराज द्वारा श्री अक्षर पुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था के प्रशासन और प्रबंधन के लिए ट्रस्ट दस्तावेज 28 जून 1947 को सब-रजिस्टार, खेड़ा में पंजीकृत किया गया । ये दस्तावेज सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 की धारा 92 के तहत अनुमोदन और पुष्टि के लिए बॉम्बे के तत्कालीन एडवोकेट ज नरल सी. के. दफतरी के पास गया । तब से संस्थान का प्रबंधन इस विलेख की शर्तों के अनुसार किया जा रहा है । बॉम्बे पब्लिक ट्रस्ट एक्ट, 1950 अधिनियम अंतर्गत किया गया, यह ट्रस्ट 20 नवंबर, 1954 को एक पब्लिक ट्रस्ट के रूप में अनुमोदित हुआ ।

तत्पश्चात ट्रस्ट का प्रधान कार्यालय अहमदाबाद में स्थानांतरित हुआ और सहायक चेरिटी आयुक्त, अहमदाबाद ने इसे 2 फरवरी, 1977 को बॉम्बे पब्लिक ट्रस्ट अधिनियम के तहत एक सार्वजनिक ट्रस्ट के पंजीकरण को अनुमोदित किया ।

उस समय संस्था छोटी थी । इसकी गतिविधियां कम थी और कार्यक्षेत्र ज्यादातर गुज रात तक ही सीमित था । जब गतिविधि का विस्तार हुआ तो कुछ बदलाव करना आवश्यक हो गया । इन बदलावों को चेरिटी कमिश्नर ने मंजूरी दे दी है । इस तरह के ट्रस्ट और विदेशों में जहां बीएपीएस संचालित होता है स्थापित किए गए हैं ।

ट्रस्ट का मुख्य उद्देश्य धार्मिक, सामाजिक कार्य करना और शिक्षा को आगे बढ़ाना है । व्यसन मुक्ति, गरीबी उन्मूलन, बाल संस्कार और सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति को बढ़ावा देना ट्रस्ट के अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं ।

संस्था लोकतांत्रिक पद्धति से चलती है और इसमें भक्तों, साधुओं या यहां तक की ट्रस्टीयों की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक आंतरिक तंत्र है । संस्था के प्रमुख को किसी भी विवाद को हल करना होता है । उनका निर्णय अंतिम और सभी पर बाध्यकारी होता है ।

प्रमुख स्वामी महाराज 1951 में संस्था के अध्यक्ष बने । उन्हें अपने गुरु, शास्त्रीजी महाराज द्वारा इस पद तक पहुंचाये थे । उनके नेतृत्व और प्रेरणा से संस्था का विस्तार हुआ है और यह आज बहुराष्ट्रीय और बहुआयामी हो गया है ।

BAPS संस्था बड़े पैमाने पर बहुधा आध्यात्मिकता के प्रसार के लिए है । और समुदाय की सामाजिक जरूरतों को भी पूरा करता है । इसका काम आध्यात्मिकता और समाज सेवा का मिश्रण है । इसने इस सिद्धांत की पुष्टि की है कि ''ईमानदारी से समाज की सेवा चाहने वालों का आध्यात्मिक रूप से शुद्ध होना चाहिए।'' संस्था के वर्तमान प्रमुख महंत स्वामी महाराज हैं ।

संस्था के उद्देश्य हैं :

i. सच्ची शिक्षा का प्रचार और प्रसार करना और ज्ञान का प्रसार करना ।

ii. गुरुकुल (स्कूल), और बाल मंदिर (किंडरगार्डन) की स्थापना और रखरखाव ।

iii. शिक्षा, चिकित्सा राहत, गरीबी उन्मूलन और आम जनहित की उन्नति जैसे सामान्य धर्मार्थ उद्देश्यों को बढ़ावा देना ।

iv. छात्रावास, शैक्षणिक केंद्र आदि सहित युवा, बच्चों, महिलाओं और वयस्क के लिए केंद्रों की स्थापना करना।

v. पर्यावरण, चिकित्सा, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देना ।

vi. अशिक्षा और व्यसनों का उन्मूलन ।

vii. नैतिकता, चारित्र्य और धर्म के सिद्धांत और मूल्य आधारित जीवन को बढ़ावा देना और प्रचार करना।

viii. सार्वजनिक धार्मिक पूजा का प्रचार करना ।

ix. मंदिरों और हरिमंदिरों का निर्माण करना ।

x. निम्नलिखित माध्यम से धर्मार्थ गतिविधियों को बढ़ावा देना :

    1. गरीबी उन्मूलन और समाज के कमजोर वर्गों के लिए सहायता ।

    2. शिक्षा ।

    3. चिकित्सा और स्वास्थ्य सेवा ।

    4. लोगों की मदद करने के लिए अन्य आवश्यक गतिविधियां ।

    5. मल्टीमीडिया चेनलों के माध्यम से साहित्य का प्रकाशन और प्रचार ।

संस्था के भीतर इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक वितरण प्रणाली मौजूद है : इनमें शामिल हैं :

i. 160 नियमित सामाजिक गतिविधियों की बेहतरी के लिए 50,000 से अधिक की एक विश्वव्यापी स्वयंसेवकों की शक्ति ।

ii. भूकंप, बाढ़, अकाल, आग, आदि में राहत और पुनर्वसन कार्य ।

iii. शिक्षा और दवा के लिए वित्तीय सहायता ।

iv. युवा और बच्चों के विकास के लिए 9000 से अधिक केंद्र और कई कार्यक्रम ।

v. अस्पताल, स्वास्थ्य केंद्र और चिकित्सा शिविर ।

vi. सांस्कृतिक कार्यक्रमों, सेमिनारों, सम्मेलनों और परिषदों के लिए सांस्कृतिक और धार्मिक सद्भाव ।

vii. बेहतर शिक्षा सुविधाओं के साथ छात्रावासों और जनजातियों के विकास के लिए केंद्र ।

दिन प्रति दिन के आधार पर संस्था को चलाने के लिए यह एक इसका मजबूत प्रशासनिक ढांचा है । निर्णय लेने की प्रक्रिया विकेंद्रीकृत है । हर केंद्र अपने दैनिक कार्यो में स्वायत्त है । लेकिन बुनियादी गतिविधियों के लिए स्पष्ट और निश्चित मार्ग रेखा है ।

संस्था की बुनियादी संरचना निम्नलिखित है-

i. इस में बोर्ड के ट्रस्टीओं

ii. प्रतिनिधियों की अंतर्राष्ट्रीय शाखा

iii. राष्ट्रीय समितियां

iv. क्षेत्रीय समितियां

v. स्थानीय स्तर की समितियां

vi. आवश्यकता के आधार पर विशेष समितियां

i. ट्रस्टीयों का बोर्ड :

ट्रस्टी बोर्ड में इक्कीस सदस्य होते हैं । इसमें सन्यासी और गृहस्थ दोनों शामिल हैं । सन्यासी सदस्यता का अर्थ संस्था का एक संत (साधु) जो आजीवन ब्रह्मचारी है और लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए पूरी तरह से समर्पित है । गृहस्थी सदस्य का अर्थ विवाहित या अविवाहित व्यक्ति जो सन्यासी और स्वैच्छिक आधार पर संस्था की सेवा करता है । ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत स्वामी महाराज हैं ।

ii. प्रतिनिधियों की अंतरराष्ट्रीय शाखा :

यह शाखा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संस्था का मार्गदर्शन करती है । वर्ष में कम से कम एक बार बुलाई गई बैठक में निर्णय लिया जाता है । यह अंतरराष्ट्रीय शाखा में BAPS ट्रस्टी और भारत के प्रमुख केंद्रों और विदेशों के प्रतिनिधि शामिल है ।

iii. राष्ट्रीय समितियां :

अंतरराष्ट्रीय काम के लिए ट्रस्टी बोर्ड विभिन्न राष्ट्रों की राष्ट्रीय समितियां से लगातार बातचीत करता है और मार्गदर्शन करता है । ये समितियां देश में धर्मार्थ कार्य के लिए जिम्मेवारी वहन करती हैं । और भौगोलिक, सांस्कृतिक और जनसंख्या के अनुसार गतिविधियां करती हैं और लोगों की जरूरते जानने के लीए नियमित रूप से मिलती हैं ।

iv. क्षेत्रीय और स्थानीय समितियां :

पुरुषों और महिलाओं के लिए क्षेत्रीय और स्थानीय प्रबंधन समितियां विभिन्न शहर और क्षेत्र में रोज-ब-रोज की गतिविधियों की देखरेख करते हैं । समितियों ये प्रवृत्तियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों की प्रतिक्रिया इकठ्ठा करती हैं । और संस्था और उसकी नीति के व्यापक उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में स्वतंत्र रूप से निर्णय लेती हैं ।

v. आवश्यकता के आधार पर विशेष समितियां :

ट्रस्टी मंडल भूकंप या अकाल राहत, त्योहारों या प्रदर्शनियों का उत्सव जैसी विशेष आवश्यकता के लिए परियोजनाएं के आधार पर विशेष समितियों का गठन करते हैं । ऐसी समितियां ट्रस्टी मंडल के निर्देशों के अनुसार परियोजना पूर्ण होने तक कार्य करती हैं । पूरी संस्था और प्रबंधन दल, विशेष समितियों के साथ एकजुट रहकर लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सुचारू रूप से कार्य करते है ।

विभिन्न महत्वपूर्ण गतिविधियों की वर्तमान स्थिति इस प्रकार है- हालांकि संख्या हर रोज बढ़ रही है ।

अंतरराष्ट्रीय केंद्र

- भारत, अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोप, अफ्रीका, पेसिफिक विस्तार और मध्य पूर्व में 3300 केंद्र ।
- पुरुषों और महिलाओं, युवाओं और किशोरों के लिए 7215 साप्ताहिक सभाएं ।
- बच्चों के लिए 5400 साप्ताहिक सभाएं ।

दक्षिण आफ्रिका के महानगर जोहनीशबर्ग में तैयार होने वाले शिखरबद्ध BAPS मंदिर की शिलापूजन विधि

न्यूज़ीलेन्ड की राजधानी वेलिंगटन में होने वाले नूतन BAPS मंदिर का शिलान्यास

ओस्ट्रेलिया के कनबरा और थाइलेंड के बेंकोक महानगर में आयोतिज नूतन BAPS मंदिर का शिलान्यास विधि

यू.के. के बर्मिंगहाम और मांचेस्टर मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा एवम महुवा के स्मृति मंदिर की कलश - धजादंड की पूजनविधि – फरवरी 2022

परम पूज्य महंत स्वामी महाराज के सानिध्य में सारंगपुर में आयोजीत सत्संग दीक्षा आंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी सेमिनार - नवंबर 2021

यूक्रेन – रशिया युद्ध के दौरान सरहद पर पीड़ितो की सेवा में बीएपीएस स्वामीनारायण संस्था

दुनिया भर के स्वयंसेवक

- 55,000 स्वयंसेवक ।
- नैतिक और सांस्कृतिक गतिविधियां–सेवा में वार्षिक 1,20,000 स्वयंसेवक–घंटे ।
- वार्षिक 6,30,000 सत्संग सभा ।
- भारत, ब्रिटेन, अमेरिका, अफ्रीका में सांस्कृतिक उत्सव के लिए 34 मिलियन मुलाकाती पधारे ।
- 5,54,790 छात्र अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक परीक्षाओं में शामिल हुए हैं ।

यूक्रेन – रशिया युद्ध के दौरान सरहद पर पीड़ितो की सेवा में बीएपीएस स्वामीनारायण संस्था.....

चिकित्सा गतिविधियां

- 8 अस्पताल और स्वास्थ्य क्लीनिक ।
- सालाना 4,15,000 रोगियों का इलाज ।
- 76 औषधीय–आध्यात्मिक सम्मेलनों में 20,000 से अधिक डॉक्टरों ने भाग लीया ।

शैक्षणिक गतिविधियां

- 31 स्थायी शिक्षण संस्थान 11,000 से अधिक छात्रों को सेवा प्रदान करते हैं ।
- सालाना 5,000 से अधिक छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती है ।
- आपदा प्रभावित क्षेत्रों में 55 स्कूल बने ।

पर्यावरण गतिविधियां

- हजारों गांवों में लाखों पेड़ और झाड़ियां लगाई गई ।
- सड़कों गांवों में हजारों जल संरक्षण परियोजना ।
- प्रतिवर्ष रीसाइक्लिंग के लिए हजारों टन कागज एकत्र किया जाता है ।

सामाजिक गतिविधियों

- 33 आपदा राहत कार्यों को सफलतापूर्वक प्रबंधित किया गया ।
- 50,000 परिवार दैनिक पारिवारिक सभाओं के आयोजन के लिए प्रेरित हुए ।
- बीस लाख से अधिक लोगों को व्यसन छोड़ने के लिए प्रेरित किया ।

जनजातीय गतिविधियां

Sadhus meditating with Swamishri

- आदिवासी उत्थान के लिए 800 स्थाई केंद्र ।
- हजारों आदिवासी परिवारों ने व्यसनों और अंधविश्वासों को त्याग दिया है ।
- 9 मोबाइल मेडिकल क्लिनिक सालाना 250000 आदिवासी गांवों की बस्ती का इलाज करते हैं ।

आध्यात्मिक गतिविधियां

- दुनिया भर में 700 से अधिक BAPS मंदिर ।
- हजारों तीर्थयात्री प्रतिदिन प्रत्येक BAPS मंदिरों में जाते हैं ।
- 1,000 से अधिक साधु ।

उपरोक्त संख्या और प्रत्येक गतिविधि दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है । संस्था की सफलता को समझने के लिए, यह जानना उपयोगी है कि साधुओं को कैसे प्रशिक्षित किया जाता है और स्वयंसेवकों को बिना स्वार्थ के निष्ठापूर्वक काम करने को कैसे प्रेरित किया जाता है ।

साधु परंपरा

मंदिर, शास्त्र और साधु हिंदू संस्कृति और परंपरा के स्तंभ माने जाते हैं । BAPS केन्द्र ये तीनों को संरक्षित रखते हैं और बढ़ावा देते हैं । गुरु शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, प्रमुख स्वामी महाराज और अब महंत स्वामी महाराज ने पूरे भारत में और दुनिया भर में नए मंदिरों को बढ़ावा दिया है और पवित्र शास्त्रों को सार्थक तरीके से अधिक लोगभोग्य बनाया । उन्होंने निर्मल ओर निर्मोही साधुओं की परंपरा को आगे बढ़ाया और उनको दीक्षा देकर दुनिया भर में बीएपीएस साधुओं का विशिष्ट समूह रचा गया है । साधुओं के लिए कठिन लेकिन लोकलक्षी आचार संहिता है । यह इस प्रकार है-

निष्काम :

पूर्ण ब्रह्मचर्य ।

निर्लोभ :

धन और सांसारिक संपत्ति का पूर्ण त्याग, (पैसे को नहीं छूना, पैसे न रखने के लिए या दूसरों को अपनी ओर से नहीं रखने के लिए) ।

निस्वाद :

खाने से पहले एक लड़की के कटोरे में भोजन को मिलाकर और फिर पानी डालना । इस नियम के पीछे का विचार अपने स्वाद नियंत्रण में रखना है ।

निस्नेह :

ईश्वर के अतिरिक किसी और से अनासक्त हो जाना । मूल स्थान और निकट संबंधियों से दूर रहना ।

निर्मान :

अहंकार दूर करके विनम्र बनना और सबकी सेवा करना ।

सभी साधुओं को उपरोक्त पांच नियमों का कड़ाई से पालन करना होता है ।

साधु को कैसे प्रशिक्षित किया जाता है

साधुओं के मार्गदर्शन और प्रशिक्षण के लिए अहमदाबाद जिले के सारंगपुर में एक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किया गया है ।

जो साधु बनना चाहते हैं ऐसे सत्संगी युवा शुरुआत में केंद्र में 12 से 18 महीने साधक नए शिक्षार्थी के रूप में बिताते हैं । इसके लिए 21 साल या उससे अधिक उम्र के युवाओं को हर दिसंबर और मार्च में प्रवेश दिया जाता है । इस प्रारंभिक अवधि के दौरान, वे एक भारतीय पारंपरिक पोशाक 'झभो' और 'धोतियुं' पहनते हैं ।

वे पूरे वर्ष विभिन्न सेवाओं में संलग्न होते हैं, धर्म शास्त्रों का अध्ययन करते हैं, स्वामी की बातें, वचनामृत, शिक्षापात्री, अक्षरब्रह्म गुणातितानंद स्वामी के प्रवचन, कीर्तन याद करते है और आधुनिक दुनिया और विज्ञान से संबंधित अन्य विषयों का भी अध्ययन करते हैं । उन्हें सेवा और तपस्या के संबंध में मार्गदर्शन दिया जाता है । इस समय के दौरान, साधक साधु व्रतों का पालन करते हैं, हालांकि कुछ विशेष परिस्थितियों में वे अपने परिवार के सदस्यों से मिल सकते हैं । इस गहन प्रशिक्षण के दौरान साधक को साधु बनने की अपनी इच्छा को दृढ करने का अवसर मिलता है । इस प्रारंभिक प्रशिक्षण के अंत में, और उसके माता-पिता की लिखित सहमति के बाद, महाराज उसे पार्षद बनाते हैं और दीक्षा महोत्सव में उसे दीक्षित किया जाता है ।

इस दीक्षा को प्राप्त करने पर पार्षद सफेद वस्त्र धारण करते हैं और सिले हुए वस्त्रों का त्याग करते हैं । एक छोटी 'शिखा' को छोड़कर उसका सिर मुंडा हुआ है और उसे 'जनोई' दिया जाता है ।

इस 'पार्षद' चरण में भी प्रशिक्षण जारी रहता है । इस अवधि के दौरान वचनामृत (भगवान स्वामिनारायण के प्रवचन) और सभी गुरुओं के जीवन का विस्तार से अध्ययन किया जाता है । इसके अलावा सेवा और तपस्या भी चलती रहती है ।

उपनिषद्, श्रीमद्भागवत, भगवद्गीता, महाभारत और अन्य हिंदू शास्त्रों और विश्व के

अन्य धर्मों का अध्ययन किया जाता है । अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत और अन्य भाषाओं को भी पढ़ायी जाती है । इसके अलावा संगीत, कला, विज्ञान, आधुनिक तकनीक और अन्य रचनात्मक विषयों में शिक्षा दी जाती है । इन अध्ययनों के साथ-साथ नियमित धार्मिक सेवा और तपस्या चलती रहती है ।

लगभग 12 -18 महीनों के बाद, 'भगवती दीक्षा' पार्षदों को दी जाती है । वे अब भगवा वस्त्र धारण करते हैं । उन्हें नया नाम दिया जाता है ।

प्रशिक्षण केंद्रों में रहने वाले साधुओं की दैनिक दिनचर्या सुबह 4:00 बजे से शुरू हो जाती है । भगवान को याद करते हुए, वे स्नान करते हैं और व्यक्तिगत पूजा करते हैं । फिर सुबह 5:45 बजे मंगला आरती में शामिल होते हैं, और 6:00 बजे से विभिन्न सेवाएं शुरु होती है : मंदिर परिसर की सफाई, देवताओं के लिए फूलों की माला बनाना, सब्जियां काटना, भोजन तैयार करना, महापूजा करना, देवताओं को सजाना, आश्रम की सफाई करना आदि ।

सुबह 7:15 बजे सभी श्रृंगार आरती में शामिल होते हैं । आरती के बाद भगवान का विवरण और स्तुति करते हुए भजन गाए जाते हैं । फिर जलपान के बाद सुबह 8:00 बजे प्रवचन होते है ।

एक घंटे के लिए अनुभवी वरिष्ठ साधु वचनामृत पर आधारित प्रवचन देते हैं और साधु के जीवन के बारे में मार्गदर्शन और प्रेरणा देते हैं ।

मंदिर परिसर में 'यज्ञपुरुष संस्कृत विद्यालय' में पाठ्यक्रम के आधार पर सुबह 9:00 बजे से दोपहर 12:00 बजे तक अध्ययन कक्षाएं आयोजित की जाती हैं ।

दोपहर 12:00 बजे का भोजन परोसा जाता है, साधु लकड़ी के एक छोटे से कटोरे में खाते हैं । जब भोजन परोसा जा रहा होता है, तो हर कोई 'स्वामिनारायण' महामंत्र का उच्चारण जोर से करता है । और भोजन करने से पहले एक स्वर में वैदिक प्रार्थना की जाती है ।

दोपहर 12:30 बजे प्रतिदिन सभा भवन में प्रवचन होते हैं । उसके बाद साधु व्यक्तिगत अध्ययन में संलग्न होते हैं । शाम 4:00 बजे सभी सभा भवन में ध्यान के लिए एकत्रित होते हैं । शास्त्र पढ़े जाते हैं । 4:30 से 6:30 तक, फिर से अध्ययन कक्षाएं होती है । शाम 7:30 बजे संध्या आरती की जाती है । 8:00 बजे रात का खाना परोसा जाता है । 8:45 बजे सायं की सभा शुरू होती है । एक घंटे तक साधकों, पार्षदों और साधुओं द्वारा भक्ति गीत गाए जाते हैं ।

इसके बाद वे अपने कमरों में लौट जाते हैं । निजी अध्ययन में एक घंटा बिताने

के बाद, रात के लिए निवृत हो जाते हैं । साधु बिस्तर के लिए पतले गद्दे का प्रयोग करते हैं । मौसम के अनुसार वे सामान्य शयनगृह में या छत पर सोते हैं । किसी के पास अलग कमरा नहीं है ।

ये सभी गतिविधियां साधुओं के बीच सद्भाव को मजबूत करती है । विभिन्न क्षेत्रों, देशों और शैक्षिक पृष्ठभूमि से होने के बावजूद, वे एक दूसरे के साथ पूर्ण सामंजस्य में रहते हैं ।

साधु हर महीने नियमित रूप से 5 से 7 निर्जल उपवास रखते हैं ।

कई साधु हंमेशा दिन में एक बार ही खाते हैं । वे अन्य कठिन तपस्या भी करते हैं, जैसे, धारणा-पारणा, चंद्रयण, खत्र, तप्तक्रूच, आदि ।

प्रशिक्षण केंद्र में 5 साल पूरे करने के बाद, महंत स्वामी महाराज साधुओं को विभिन्न बीएपीएस मंदिरों में अलग-अलग प्रकार की सेवाओं में संलग्न होने के लिए नियुक्त करते हैं ।, साधुओ 500 से अधिक मंदिरों में सामाजिक, शैक्षिक, नैतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक गतिविधियों सहित 160 से अधिक मानवीय सेवाओं का सक्रिय रुप से प्रबंधन करते हैं ।

साधुओं में डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड अकाउंटेंट और पोस्ट ग्रेजुएट हैं । विज्ञान, वाणिज्य, कला, कंप्यूटर, प्रबंधन, कानून और अन्य क्षेत्र में स्नातक हैं । कुछ हार्वर्ड और ऑक्सफोर्ड जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के स्नातक हैं ।

भारत के साथ-साथ साधुओं संयुक्त राज्य अमेरिका, केनेडा, इंग्लैंड और अफ्रीका जैसे विभिन्न देशों से भी हैं । पाश्चात्य परिवेश में पले-बढ़े युवकों ने साधु के कठोर व्रतों और अनुशासनों को स्वेच्छा से स्वीकार किया है ।

विद्वान और समर्पित साधुओं का यह वर्ग आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करना चाहता है और समाज की सेवा करना चाहता है । चूं कि इन साधुओं की समज आंतरिक शांति लाती है, इसलिए उनका जीवन भारत की महान साधु परंपरा के सच्चे आदर्शों का उदाहरण बनते हैं । केंद्रों में वे भक्तों को प्रेरित करने और उनके जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों को विकसित करने के लिए जिम्मेदार रहते हैं । दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों और प्रमुख कार्यक्रमों के आयोजन और संसाधनों को जुटाने के लिए भी वे काम करते हैं । उन्हें समय-समय पर एक केंद्र से दूसरे केंद्र की यात्रा करनी होती है । केंद्र में रहने के दौरान, उन्हें गांवों का दौरा करना होता है और व्यक्तिगत रूप से अपने भक्तों के घर-भ्रमण करना पड़ता है । वे यात्राओं के दौरान बच्चों और युवाओं में भी समान रुचि लेते हैं और उन्हें मंदिर जाने और जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों के सिखने के लिए प्रेरित करते हैं ।

स्वयं सेवकों

स्वयंसेवक वे भक्त होते हैं जो प्रार्थना या दर्शन करने के अलावा संस्था के उद्देश्यों की पूर्ति करना चाहते हैं । सभी भक्त समाज सेवा के लिए बाहर नहीं आते हैं । लेकिन कई ऐसे हैं जो भाग लेते हैं । कुछ अस्थायी रूप से, अन्य दीर्घकालिन आधार पर । स्वयंसेवक बनने के लिए कोई बाध्यता या प्रोत्साहन नहीं है । यह केवल व्यक्तिगत प्रेरणा के कारण है, जीवन में कुछ पूरा करने की इच्छा है, जो आमतौर पर व्यक्तिगत पारिवारिक जीवन प्रदान नहीं करता है । शास्त्रीजी महाराज ने इसकी शुरुआत की थी और योगीजी महाराज और प्रमुख स्वामी महाराज ने स्वयंसेवकों की भूमिका का विस्तार किया । महंत स्वामी महाराज ने इसे और व्यापक रुप दिया । इस संबंध में एक आचार संहिता विकसित की गई है और सभी केंद्रों पर इसका पालन किया जाता है ।

इसे स्वामीश्री और स्वयंसेवक बनने की इच्छा रखनेवाले एक सत्संगी के बीच के संवाद के जरिए जानेंगे ।

प्रश्न : सत्संगी के तौर पर दिन-रात भगवान की सेवा करने के बाद, हम अभी भी हमारे सांसारिक जीवन में उतार-चढ़ाव का अनुभव कर रहे हैं । और अक्सर हमारा पारिवारिक और सामाजिक कार्य बिगड़ते हैं या रुक जाते हैं । ऐसा क्यों होता है ?

स्वामीश्री : महाराज कहते हैं कि जिसने भगवान के चरणों में शरण ली है ऐसे भक्तों को कोई परेशानी नहीं है । वे काल, कर्म और माया के प्रभाव से मुक्त है । सांसारिक आत्माओं को उनके कर्म के कारण दुःख होता है । भगवान के भक्तों को भगवान की आज्ञाओ के पालन में चूक के कारण पीडा का सामना करना पड़ता है । हमें इसकी जानकारी नहीं है लेकिन हमारी गहरी इच्छाओं के कारण गलतियां की जाती है और इसलिए कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । ये दुःख स्वीकार करना होगा । जीवन में कठिनाइयां समस्या कई तरह से उत्पन्न होती है लेकिन भगवान यह देखने के लिए परीक्षण कर रहे हैं कि क्या उनके भक्त को उन पर अतूट विश्वास है । दादा खाचर एक महान भक्त थे । उन्होंने अपना सब कुछ महाराज को दे दिया और महाराज और उनके भक्तों की जबरदस्त महिमा के साथ सेवा की । फिर भी महाराज ने उसकी परीक्षा ली और उसने अपनी संपत्ति खो दी । जिससे उसने महाराज, साधुओं और भक्तों की सेवा की, और जिससे उसने अपनी आजीविका अर्जित की, वह सारी संपत्ति खो गई । उसकी आमदनी बंद हो गई । फिर भी दादा खाचर को यह नहीं लगा कि महाराज की शरण में जाने से कठिनाई हो रही है । ऐसा कोई विचार नहीं कि महाराज उसकी परीक्षा ले रहे थे । भूतकाल में नरसिंह मेहता, मीराबाई, पांडव आदि भक्तों की परीक्षा हुई है । जो सच्चे भक्त है, उनकी परीक्षा होती है । मुश्किलों के बीच भी अगर कोई दृढ़ रहे, तो

कोई समस्या नहीं होगी, महाराज ने जो चाहा वह उचित है इसे उसी तरह देखता है । परीक्षा पास करने वालों को कोई चिंता नहीं है ।

प्रश्न : हम त्योहारों आदि में भगवान को प्रसन्न करने के लिए सेवा करते हैं और बदले में हमें अक्षरधाम मिलता है । क्या यह पक्का है ?

स्वामीश्री : भगवान सभी को अक्षरधाम देने आए हैं । वह निश्चित है, लेकिन हमें संदेह होता रहता है ।

प्रश्न : हमें कब तक भगवान को प्रसन्नम करना है ?

स्वामीश्री : जब तक आप इस शरीर को नहीं छोड़ते तब तक आपको भगवान को प्रसन्न करना है । जब आप शादी करते हैं, तो क्या आपको इसे जीवन भर निभाना नहीं पड़ता है ? क्या आपको अपने बच्चों की परवरिश नहीं करनी है ? आपको इसे तब तक करना है जब तक आप जीवित हैं **:** जब तक आप ब्रह्मरुप नहीं बन जाते तब तक आपको यही करना है । अपने आप को पूर्ण माने, लेकिन जागरूकता बनाए रखनी होगी ताकि कोई समस्या न आए । महाराज की भक्ति और सेवा अंत तक करनी है ।

ईश्वर का कार्य उसी प्रामाणिकता से करना चाहिए जैसे व्यक्ति सांसारिक कार्य करता है । जैसे वो शरीर के लिए करता है, वैसे ही आत्मा के लिए करना है । अगर आपका बेटा बहुत कमाता है तो आप खुश हैं । इसी प्रकार आप जितनी भक्ति करते हैं, सत्संग करते हैं, सेवा करते हैं, महाराज उतने ही प्रसन्न होते हैं ।

इसलिए सदा जितना हो सके उतना करते रहें । जितना अधिक आप करते हैं उतना अपने स्वभाव को नियंत्रित किया जाता है ।

प्रश्न : यह साधु और पार्षद के लिए है । हम गृहस्थों को कैसा बनना चाहिए ?

स्वामीश्री : तुम्हें भगवान का भक्त बनना है । 'निजात्मनं ब्रह्मरुपम्' - जब यह अवस्था प्राप्त हो जाएगी तो कोई प्रश्न नहीं रहेगा, नहीं तो फिर विवाद में फसेंगे, सवाल उठेंगे । जो ब्रमरूप है वो दूसरों के दोष नहीं देखते । वे केवल भक्ति और सेवा में तल्लीन रहते है ।

जो पूर्ण है, उसमें कोई दोष नहीं है । ऐसे आदर्श हमें बनना हैं । वे केवल भगवान की पूजा करना चाहते है । उसे प्रसन्न करना, उसकी आज्ञाओं को समझना और उसके अनुसार कार्य करना, कार्यकर्ताओं को और कुछ करने की आवश्यकता नहीं है । अगर आप दूसरों के दोषों पर ध्यान देते हैं तो कोई काम नहीं होता। यदि कोई व्यवसाई केवल दूसरों को देखकर इधर-उधर चला जाए, तो क्या उसका व्यवसाय फल-फूल जाएगा? अगर हर

कोई अपना कर्तव्य करने में ईमानदार और कुशल है तो कोई समस्या नहीं होगी । तो, साधुओं या कार्यकर्ताओं के लिए, कोई प्रश्न नहीं हैं, व्यक्ति को काम करने का संकल्प लेना चाहिए । व्यक्ति को संकल्प करना चाहिए कि वह सेवा करना चाहता है । जो भी कार्य सौंपा गया है, उसे जिम्मेदारी से करना चाहिए। यह हमारा कर्तव्य है कि जो कार्य सौंपा गया है वह पूरी निष्ठा से किया जाए । बाल मंडल, युवा मंडल, किशोर मंडल – जो भी कर्तव्य दिया जाता है, अगर उसे ठीक से किया जाता है तो क्या कोई सवाल होगा? आप जो कर रहे हैं वह कोई निजी व्यवसाय या सरकारी नौकरी नहीं है, यह भगवान की सेवा है । योगीजी महाराज कहते थे । ''यह ठाकुरजी का काम है ।'' अतः इस कार्य को सही ढंग से करना चाहिए ।

इससे आप क्या समझते हैं ? यदि कार्यकर्ता अपना काम ठीक से और जिम्मेदारी से करते हैं, तो क्या कोई समस्या उत्पन्न होगी ? साधुओं और कार्यकर्ताओं को बाल मंडल, किशोर मंडल और सत्संग मंडल का काम सौंपा गया है । यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत रहे तो कोई समस्या नहीं होगी ।

प्रश्न : सरकारी नौकरियों में कागजी कार्यवाही होती है, सत्संग में भी ऐसा ही होता है । हम सब काम करते हैं लेकिन क्या इन सभी रिपोर्टों और फॉर्मों को भरने की जरूरत है ?

स्वामीश्री : सरकारी नौकरी में आप यह सब करते हैं ना ? आपको सभी फाइलों का निरीक्षण करना है, उन्हें क्रम में रखना है – क्या यह परेशानी है ? आपको भुगतान किया जाता है, और आप वह सब करते हैं। एक व्यवसायी को अपने ग्राहकों को संतुष्ट करना होता है ।

इसलिए आपको भेजी गई कागजी कार्यवाही को पूरा करना आपकी जिम्मेदारी है । लेकिन अगर आप रिपोर्ट को पूरा नहीं करते हैं और वापस नहीं करते हैं तो काम आगे कैसे बढ़ सकता है ? आपको लग सकता है कि यह काम अभी पूरा नहीं हुआ है और बहुत कुछ आ गया है ।

आप घर पर या काम पर सवालों का सामना करते हैं लेकिन आपके पास दृढ़ निर्धार है । नौकरी में आप जिम्मेवारीयो को वहन करते हो । हम भगवान को खुश करना चाहते हैं, इसलिए इसमें कोई धोखा नहीं हो सकता । इसलिए प्रत्येक कार्य में जो भी कागजी कार्यवाही शामिल है, आप समय निकालकर ठीक से करें और भेज दें । इसमें आलस्य से काम का ठेर लग जाएगा – दैनिक हिसाब-किताब नहीं लिखे जाने पर ढेर सारा बकाया हो जाता है । इसलिए हमेशा सतर्क रहें । अगर लगातार जागरूकता हो तो काम सही तरीके से होता है ।

भुंगा – BAPS द्वारा निर्मित कच्छ शैली में एक पारंपरिक घर

BAPS द्वारा निर्मित कच्छ भूकंप पीड़ितों के लिए एक स्कूल और घर

BAPS सुनामी अपील नेस्डेन मंदिर में विशेष प्रार्थना सभा के माध्यम से, विभिन्न देशों के दूतों के साथ लंदन

प्रश्न : हमारे कई पारिवारिक और सामाजिक दायित्व भी हैं । ये हम उत्साह के साथ और बिना बताए करते हैं । हालांकि, जब सत्संग की बात आती है, तो हमें याद दिलाना पडता है कि क्या काम करना है । ऐसा क्यों है ?

स्वामीश्री : गुणातीतानंद स्वामी ने अपने भाषणों में कहा है कि संसार का मार्ग कठिन नहीं है, क्योंकि यह शुरू से ही जीव में समाया हुआ है । इसलिए स्वाभाविक रूप से इसका पालन किया जाता है । क्या किसी को हमारा मार्गदर्शन करना है ? क्या बच्चों को टीवी देखने के लिए कहा जाना चाहिए ? भले ही वे स्कूल में नहीं पढे हो, लेकिन टीवी का इस्तेमाल करना जानते हैं । यह भीतर से आता है । क्या शराब पीने के लिए कोई कॉलेज हैं ? सांसारिक मार्ग से हमारा लगाव होने के कारण हम अनायास ही उसका अनुसरण करते हैं।

कोई आपको बताए या ना कहे, इसे अपनी गृहस्थी चलाने को आप जिम्मेदारी के रूप में लेते हैं । मनुष्य का मन ऐसे कार्य आदि में तत्परता से लग जाता है, लेकिन उसे भगवान की भक्ति में लगाना कठिन होता है । और ईश्वरीय ज्ञान को समझना कठिन है । यह आत्मा और परमात्मा का ज्ञान है; अक्षररुप बनना और पुरुषोत्तम की पूजा करना – ज्ञान का वह मार्ग कठिन है ।

वचनामृत को पढ़ने, स्वामी बातों को पढ़ने, उन्हें याद करने और कीर्तन करने के लिए बार-बार कहा जाना चाहिए । हमें गहराई में जाना है । सीधा मूल पर ।

प्रश्न : बापा, आपने वर्षों तक लगातार संस्था की सेवा की है । आपने कभी सुविधाएं नहीं मांगी, या हताशा या थकान नहीं दिखाई । हमने आपको कभी उबासी लेते नहीं देखा और आप में न आलस देखी है । आप यह सेवा किस विचारों से करते हैं ?

स्वामीश्री : भगवान ने यह सेवा दी है, इसलिए उन्हें प्रसन्न करने के लिए ऐसा किया जाता है । आपका एक ही उद्देश्य होना चाहिए – उसे पसंद करना । आपका एक ही उद्देश्य होना चाहिए- ईश्वर को प्रसन्न करना। अगर आप इस दुनिया में अन्य लोगों को खुश करना चाहते हैं, तो आपको वह काम करना होगा जो वे आपको करने के लिए कहते हैं । लेकिन यह तो आत्मा के आनंद के लिए है । जो ज्ञान तुम पर प्रकट हुआ है, वह सत्य है । अगर यह आपके जीवन में अंकित हो जाए तो यह ज्ञान और लोगों तक पहुंचेगा । सुख-सुविधाओं की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए । यह मत देखो कि दिन है या रात । इस बात को थोड़ा-बहुत समझ चुके हैं, तो आप सब यह कीजिए । आस-पास बैठने से कुछ हासिल नहीं होता । यह काम करना ही होगा । इसे बोझ न समझें । यदि कोई इस कार्य को अपना महान भाग्य मानता है तो उत्साह बना रहेगा। हम कोई गलत संदेश नहीं देना चाहते हैं । अगर दूसरे नहीं समझते हैं, तो चिंता ना करें । उसको भगवान

की महिमा की बात करने से आपको पीछे नहीं हटना चाहिए । हमने जो ज्ञान प्राप्त किया है, हमें दूसरों को उत्साह से समझाना चाहिए क्योंकि हम भगवान को प्रसन्न करना चाहते हैं । जन्म से ही हमने दूसरों को प्रसन्न किया है - माता, पिता, पत्नी, बच्चे, परिवार, रिश्तेदार आदि । इस समय हम श्रीजी महाराज को प्रसन्न करना चाहते हैं और अक्षरधाम प्राप्त करना चाहते हैं । अगर इस लक्ष्य को पक्का कर लिया जाए तो कोई समस्या नहीं होगी और आप महसूस करेंगे कि इसे हासिल करने के लिए क्या किया जा सकता है ।

संसाधन जुटाना :

यह असाधारण कार्य है । सभी मंदिरों को भारी पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है और बाद में रखरखाव पर भी लागत आती है । तद्उपरांत, सभी धर्मार्थ गतिविधियों, पुनर्वास या राहत कार्यों के लिए संसाधनों की आवश्यकता होती है । यह सब राशि भक्तों द्वारा जुटायी जाती है । सभी प्रकार के दाता हैं । यह धन या समय के द्वारा प्रयासों और योगदान का सामूहिक अभियान है । कोई नेम प्लेट नहीं लगाई जाती है, भले ही दाता ने बहुत बड़ा योगदान दिया हो । नेसडेन या शिकागो या अक्षरधाम जैसे मंदिर के निर्माण के लिए सामुदायिक प्रयासों से बहु-मिलियन डॉलर जुटाये गये हैं । सब मंदिरों को भारत के भीतर या विदेशों में बसे समुदाय से धन मिलता है ।

आगे बढ़ने की गतिविधियां :

सभी केंद्रों में अन्य धर्मों के व्यक्तियों से संपर्क करने और उन्हें सम्मानित अतिथियों के रूप में प्रमुख समारोहों और उत्सवों में भाग लेने के लिए आमंत्रित करने की प्रथा है । साधुओं और महंत स्वामी महाराज की यात्राओं के दौरान, उन्हें यथासंभव अधिक से अधिक भक्तों - साथ ही, महत्वपूर्ण व्यक्तियों - उस प्रदेश के विभिन्न विषयों के प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मिलने के लिए उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाता है । देश के साथ-साथ विदेशों में भी राष्ट्राध्यक्षों और अन्य धर्मों और संगठनों के प्रमुखों के साथ बैठकें आयोजित की जाती हैं । मुख्यालय और हर दूसरे केंद्र में इसका एक अलग मल्टीमीडिया और प्रकाशन विभाग हैं । अहमदाबाद प्रतिष्ठान स्वामिनारायण अक्षरपीठ, शाहीबाग में स्थित है ।

कोविड-१९ राहत - संयुक्त अरब अमीरात, अहमदाबाद, भारत से प्राप्त सांद्रक-ओक्सिजन कोन्सेन्ट्रेटर का प्रथम जथ्था :

चिकित्सा संकट के इस समय में भारत की मदद करने के लिए बीएपीएस नेटवर्क और उसके स्वयंसेवकों के माध्यम से दुनिया भर से ऑक्सीजन सिलेंडर, टैंकर और कोन्सेन्ट्रेटर की आपूर्ति की गइ थी ।

कोन्सेन्ट्रेटर की शुरुआती खेप 30 अप्रैल को अहमदाबाद पहुंची ।

पूज्य ईश्वरचरण स्वामीने अहमदाबाद के शाहीबाग में बीएपीएस श्री स्वामिनारायण मंदिर में पूजा की, इन उपकरणों के लिए सभी रोगियों के लिए यथासंभव सहायक होने की प्रार्थना की । इस तरह के और भी कई कोन्सेन्ट्रेटर अलग-अलग शहरों में विभिन्न अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों में वितरण के लिए आने वाले हैं और जल्द ही आने की उम्मीद है ।

परम पूज्य महंत स्वामी महाराज ने भगवान स्वामिनारायण, गुणातीतानंद स्वामी और प्रमुख स्वामी महाराज के आशीर्वाद से सभी के अच्छे स्वास्थ्य और इस संकट से जल्द से ज ल्द निपटने के लिए प्रार्थना की ।

प्रकाशन

पत्रिका	सदस्यता
स्वामिनारायण प्रकाश (गुजराती) 45 साल के बाद 2001 में प्रकाश स्वामिनारायण में अलग समाविष्ट हुआ है	60000
स्वामिनारायण ब्लीस अंग्रेजी	40000
स्वामिनारायण प्रकाश (हिन्दी)	5000
ङ्कहिला पत्रिका प्रेमवती (गुजराती)	10000
ब्रच्चों के लिए बाल प्रकाश (गुजराती)	5000
ब्रच्चों के लिए बाल प्रकाश (अंग्रेजी)	3000
• **अन्य प्रकाशन :** शाहीबाग अक्षरपीठ द्वारा अन्य भाषाओं में 500 से अधिक पुस्तकें और पत्रिकाएं निम्नानुसार प्रकाशित की जाती है **:**	
• गुजराती	300
• अंग्रेजी	100
• हिन्दी	70
• मराठी	15
• बंगाली	3
• तमिल	1
• तेलुगु	1
• अन्य भाषाएं	10
• ऑडियो और वीडियो कैसेट	400
• भगवान के जीवन पर ऑडियो सीडी और एनिमेटेड वीडियो भारतीय संस्कृति पर स्वामिनारायण सीडीरॉम	50

अध्यात्म के BAPS केंद्र :

ये केंद्र सद्भाव, शांति और प्रेम फैलाने के लिए आराधना के केंद्र है, नहीं कि नफरत या कट्टरवाद को बढ़ावा देने या भौतिक सुविधाओं के लालच में धर्मांतरण कराने । सभी केंद्र में, पुरुष, महिलाएं और बच्चे एक शांतिप्रिय लोगों के रूप में एकजुट होकर रहकर आध्यात्मिकता और आदर्श हिंदु जीवन शैली सीखते हैं ।

स्वामीश्री के नेतृत्व में सब बीएपीएस केंद्र हिंदू जीवन शैली, इसकी आध्यात्मिक विषय-वस्तु, इसका सहिष्णु और शांतिपूर्ण व्यवहार, परिवार के भीतर, एकता माता-पिता और बड़ों के लिए सम्मान और समाज के लिए सहयोग ये सभी दुनिया भर में फैले हुए हैं ।

अक्षरधाम अवधारणा **अद्वितीय** है । पहला अक्षरधाम मंदिर गुजरात के गांधीनगर में बना । दूसरा अक्षरधाम नई दिल्ली में । तीसरा एक रॉबिंसविले - न्यू जर्सी, यूएसए में निर्माणाधीन है । ये प्रमुख स्वामी महाराज और महंत स्वामी महाराज की प्रेरणा से बीएपीएस की अनूठी, चमत्कारी और स्मारकीय रचना हैं । ये पृथ्वी पर मानव जाति को प्रेरित कर रहे हैं, भगवान में श्रद्धा को स्थापित कर रहे हैं ।

सदियों पहले हिंदू धर्म ने देश की सीमाओं को पार कर लिया है, इसने विदेशी भूमि में बहुत प्रभाव डाला है । हिंदू मंदिर कई दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों जैसे कंबोडिया, लाओस और इंडोनेशिया आदि में पाए जाते हैं । हाल के दिनों में बीएपीएस द्वारा शुरू किए गए व्यवस्थित अभियान के माध्यम से भारत के बाहर 54 से अधिक देशों में कई मंदिरों और केंद्रों का निर्माण किया गया । बेशक, भक्त शुरू में भारतीय हैं जो विदेशों में बसे हैं । लेकिन इसका प्रभाव महसूस किया गया है जैसे कि नेसडेन मंदिर की कहानी इसे देखा गया है; यहां तक कि स्थानीय लोगों ने भी इसे स्वीकार किया है । एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि यह अभियान हमारे परिवारों और नई पीढ़ी पर पश्चिमी भौतिकवादी संस्कृति के हमले को रोकने में सफल रहा है । प्राचीन आध्यात्मिक मूल्यों को पुनर्जीवित किया गया था ।

जिन लोगों को इसकी आवश्यकता है, उनके लिए स्वैच्छिक सेवा - जाति या पंथ के पूर्वाग्रह के बिना प्रमुख धार्मिक संदेश है । हरिभक्त जो स्वयंसेवक बनना पसंद करते हैं वे अच्छी तरह से प्रेरित होते हैं । वे मंदिर के भीतर सेवा देते हैं - लेकिन आपदा के समय जैसे चक्रवात, सूखा, भूकंप आदि में वे साधुओं के नेतृत्व में पहुंच जाते हैं । यह धार्मिक संस्थाओं और धर्मों को एक अलग अर्थ प्रदान करता है - जीवन का एक तरीका - "इसका अर्थ है जरूरतमंद लोगों की सेवा करना, चाहे वे भक्त हो या किसी अन्य धर्म, संप्रदाय या देश के हों ।" भोजन के पैकेट के वितरण के साथ राहत कार्य समाप्त नहीं होते है - किंतु प्रभावितों के व्यक्तिगत और सामूहिक पुनरुत्थान, इन्हीं की

आर्थिक और सामाजिक प्रवृत्ति में सहायक बनने के लिए सहायक बनना चालू रहता है, ऐसे घर-परिवारों को सामान्य करने के लिए नेतृत्व कर रहे साधुओं का 'हिलींग टच' मिलता है । कच्छ पुनर्वास कार्य इसका उदाहरण है ।

इससे हमारी सेवा करने की आंतरिक इच्छा प्रज्वलित होती है । हम में से अधिकांश लोग अपने दैनिक व्यस्तता के कारण सामान्यतः नहीं करते लेकिन इस प्रयासों से यह इच्छा आध्यात्मिक आधार पर प्रबल हो जाती है और स्वैच्छिक सेवाओं में परिवर्तित होती है ।

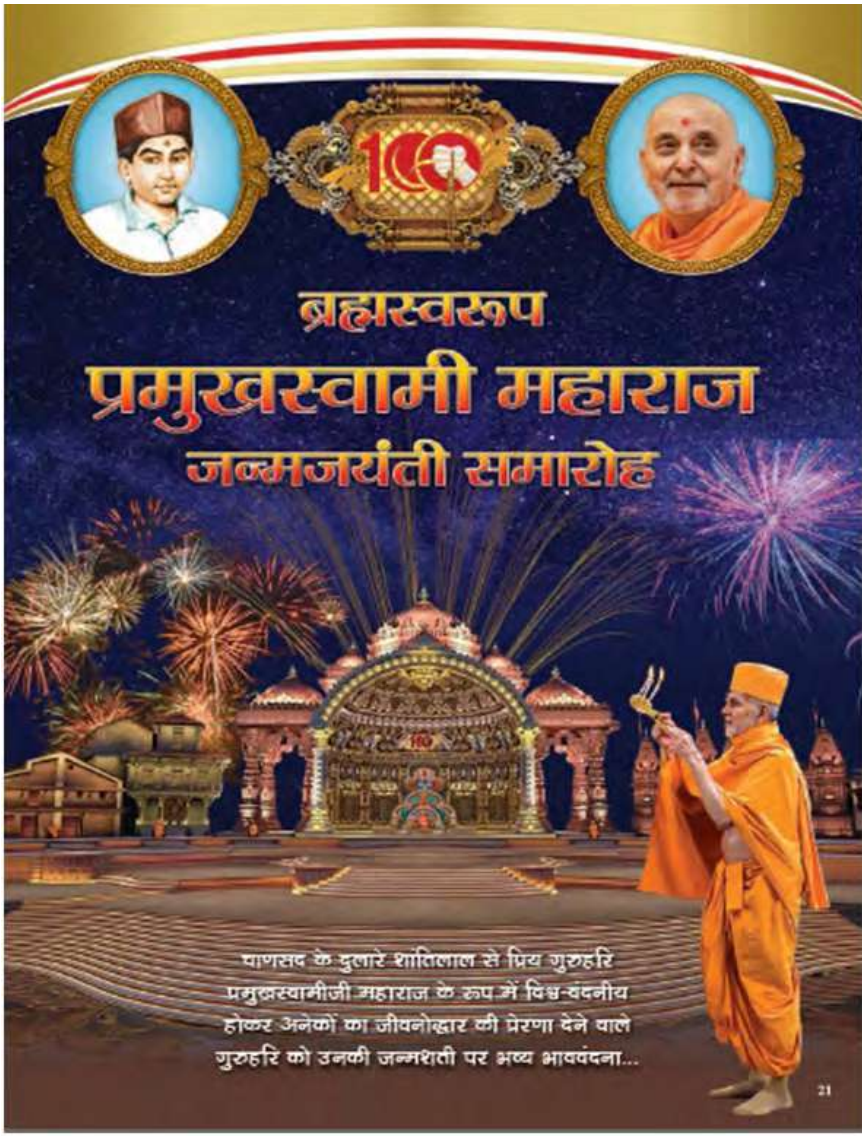

महान ऋषि

महंत स्वामी महाराज -दिव्य शक्ति

2009 में महंत स्वामी महाराज केन्या के नैरोबी मे थे । उन्होंने ''अपने आप को जानो'' नामक अपनी व्याख्यान श्रृंखला शुरू की और दर्शकों से पूछा, ''आप अपना परिचय कैसे देंगे ?'' उन्होंने आगे कहा कि लोग आमतौर पर उनके घर, स्थिति, कार्यस्थल आदि के बारे में उल्लेख करते हैं । उन्होंने विस्तार से बताया ''हमारी असली पहचान यह है कि हम वे हैं जिन्होंने पृथ्वी पर भगवान को प्राप्त किया है ।''

सुश्री सुनीता शर्मा ने महंत स्वामी महाराज के लिए अंग्रेजी में एक काव्यात्मक प्रस्तुति की थी उसका हिंदी में भावानुवाद इस तरह है :

महंत स्वामीजी - दिव्य शक्ति
दुबला-पतला सा फुर्तीला मानव,
सदा चेहरे पे आछी सी मुस्कान,
इतना प्रचंड उसका शक्ति-प्रभाव,
शीघ्र ही हो जाती है पहचान ।

उसके ज्ञानक्षेत्र में सहस्त्र सूर्य प्रकाशे,
कार्यक्षेत्र में उसके धरा घुमती रहे,
सितारे टिमटिमाति उसके आसपास,
ब्रह्मांड चलता जिसके साथ साथ है ।

अंशीष अमीधारा बहाता रहता,
पलक झबकारे में नियति लिखता,
आत्मसात् उसने जो किया है,
आध्यात्मिक रंगावलि दिखाता ।

उसकी नझर एक जरा सी पड़ी,
दु:ख अपरंपार बिदा होत है,
हृदय से उद्‌गारित हर शब्द, अंतरात्मा पावन करे,
परमात्मा सो कोमल स्पर्श, गौरवान्वित सबको करे ।

छोटा सा उसका एक कदम, सभी दिशा में गगन हिलाए,
छोटा सा उसका एक मोड़, घबराहट सर्वत्र शांत करें,
उसके सिर झुकाते ही देवी-देवता प्रकट होते,
सब जीवित प्राणी चेतनवंत हो जाते हैं ।

भाल पर उसके 'चांदलो',
शाश्वत ऊर्जा से सबको जोड़तो,
गुरुओं की जब वे परिक्रमा करें,
वैश्विक ऊर्जा चोमेर पसारे ।

जब वे हाथ जोड़त होत है,
सब दोष हमारे दूर हटे,
जब वे हाथ ऊपर उठाते,
जन्मांतर चक्र से हम छूटते हैं ।

पृथ्वी ग्रह पर प्रबल शक्ति वे,
'संप' - 'विनम्रता' सदा निभाते,
हर सांस उसकी हम को दान करें,
सबके लिए प्रार्थना अपना वे कर्तव्य समझे ।

नि:स्पृह, निर्लोभ, नि:स्नेह, निर्मान, निष्काम,
पूजनय उसके यह गुण सभी,
वह एक, केवल बना है,
'अक्षरधाम' का द्वार बना है ।

- सुनीता शर्मा

महंत स्वामी, योगीजी महाराज और प्रमुख स्वामी महाराज

महंत स्वामी –
योगीजी महाराज और प्रमुख स्वामी महाराज

महंत स्वामी महाराज पूर्ण मन से और पूरा आदर से बताते हैं कि प्रमुख स्वामी महाराज और योगीजी महाराज ने उनको भक्त की इस ऊंचाई पर रह शके ऐसे रूप में उनको ढाला है ।

उच्च कोटि के इन दोनों संत के बारे में वे प्रेम और समर्पण से बातें करते थे; योगीजी महाराज बहुत बड़े संत थे परंतु अत्यंत सरल हार्दिक थे और साधु, हरिभक्त या अन्य आगंतुक सबके लिए, सदा सुलभ थे। वे बहुत विनम्र थे और अपनी 'महानता' किसी के सामने व्यक्त होने नहीं देते थे । बच्चों, युवा या वरिष्ठ सबके साथ समान ही रहते थे । प्रमुख स्वामी महाराज भी निराभिमानी ओर निर्मोही थे । आसानी से सबको मिलते थे । पत्र, फोन या व्यक्तिगत मुलाकात से सभी को प्रत्युत्तर देते थे । विपरीत विचारों वाले व्यक्तियों को भी साथ में लाने की उनकी क्षमता थी ।

अपनी करिश्माई अपील से वे बड़े पैमाने पर समुदाय को प्रेरित करते हैं । योगीजी महाराज और प्रमुख स्वामी महाराज दोनों ही – बहुत ही सरल भाषा में सरल वाणी में बात किया करते थे । उन्होंने बच्चों से लेकर देशों के राष्ट्रपतियों तक कई स्तरों पर काम किया । उनका ध्यान सबके कल्याण पर था । परिवार की खुशी तथा युवाओं को सार्थक लक्ष्य प्राप्ति के लिए सत्संग और गृह सभाओं को बढ़ावा देते थे । उन्होंने अपने भक्तों में एक आत्मविश्वास को प्रेरित किया कि वे जो कुछ भी कर रहे हैं उसमें सफल होंगे या वे जिस बाधा का सामना कर रहे हैं उसे दूर करेंगे ।

महंत स्वामी भी ऐसे ही हैं – विनम्र और सभी के लिए सुलभ, और सहज । वे सदा भक्तों के बीच चलते हैं, कम बोलते हैं – 'मितवासी' वे सभी की भलाई पर ध्यान केंद्रित करते हैं एवम् नया करने वाले 'थिंकटैंक' है । हम महंत स्वामी – महान ऋषि में योगीजी महाराज और प्रमुख स्वामी महाराज दोनों को देखते हैं ।

महंत स्वामी महाराज एक महान ऋषि हैं और उनमें योगीजी महाराज द्वारा अपने कीर्तन "हाजी भला साधु" में वर्णित उच्च पद के सभी गुण हैं :

'तन की उपाधि ताजे सो ही साधु'
'जो अपने शरीर की फिकर छोड़ देता है वह सच्चा साधु है'

महंत स्वामी ने कभी भी अपनी सुख-सुविधाओं की परवाह नहीं की और बहुत ही सादा जीवन व्यतीत किया। एक साधु के रूप में अपने युवा दिनों में, 103 डिग्री बुखार के बावजूद उन्होंने बर्तन धोए और भोजन क्षेत्र को राख से साफ किया ।

'मान-अपमाने, एकता सुख-दुख में समभाव,
यही के सुख है, नहीं स्वर्ग लुभाव'

वह सम्मान और अपमान में और खुशी और दुख में समभाव रखते हैं; वह समझता है कि इस संसार के सुख नगण्य हैं और स्वर्ग के सुख भी उसे लुभा नहीं सकते ।

महंत स्वामी बहुत विनम्र है और एक सादा जीवन जीते हैं - चाहे एक साधु या एक भक्त मेजबान वे किसी से भी कुछ अपेक्षा नहीं करते हैं ।

एक बार, पाटण की यात्रा के लिए वे गए थे तब स्थानीय मेजबान के नहीं होने पर भी स्टेशन पर पहुंचे। आधी रात थी, स्वामीश्री एक बेंच पर सोए । यद्यपि स्थानीय मेजबान का इस प्रकार का व्यवहार उचित नहीं था, स्वामीश्री ने उनके घर जाकर उन्हें आशीर्वाद दिया ।

'हाजी भला साधु, हरिदी साधु'
'सच्चा साधु हमेशा भगवान की भक्ति में तल्लीन रहता है ।'

मुंबई में एक युवा साधु के रूप में महंत स्वामी महाराज ने हमेशा हरि के लिए माला तैयार करने का कार्य मांगा - ठाकोरजी के लिए सजाई गई ऐसी माला तैयार करने में बहुत समय और एकाग्रता लगती थी ।

1969 में, उन्होंने छह फुट लंबी एक माला तैयार की और गोंडल-योगीजी महाराज को भेजी, जो उन्होंने घनश्याम महाराज को चढ़ाई और कहा, ''महंत स्वामी की भक्ति अवर्णनीय है ।''

'लालच लोभ हराम है, गृह न गांठे दाम...'

'उसने लोभ और प्रलोभनों का त्याग किया है । उसके पास में धन नहीं रखते है । और वह पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करता है । साथ में, वह लगातार भगवान के नाम का जाप करता है'

यह वास्तव में और उपयुक्त रूप से महंत स्वामी का वर्णन करता है । बीएपीएस एक बहुराष्ट्रीय आध्यात्मिक संगठन है जो लाखों भक्तों और 1000 से अधिक साधुओं के साथ साठ से अधिक देशों में फैला हुआ है। फिर भी, महंत स्वामी हमेशा नम्र, सरल और सादा रहे । वे बहुत जल्दी उठते है, योग करते है और प्रार्थना के लिए आते है । वह सभी के लिए समान है, साधु हो या भक्त ।

'मुक्तानंद सो संतके सदा रहत हरिपास'
मुक्तानंद कहते हैं, ऐसे संत के भीतर ईश्वर सदा वास करते हैं ।

सचमुच महंत स्वामी महाराज का यही रहस्य है । उनके साथ रहना महाराज के साथ होने के समान है । उनके दर्शन महाराज के दर्शन हैं । उनके प्यारे शब्द महाराज के प्यारे शब्द हैं । उनका आशीर्वाद महाराज का आशीर्वाद है । वे शुद्ध, दिव्य, अक्षरब्रह्म है – और भगवान स्वामिनारायण का प्रकट रूप है । इसलिए मैंने उन्हें महान ऋषि – महंत स्वामी महाराज कहा ।

संदर्भ

- ब्रह्म स्वरूप शास्त्रीजी महाराज — दिसंबर, 1960
  हर्षद पटेल –
- स्पंदन – भाग – 1, 2, और 3 — जुलाई, 2021
  साधु विवेकजीवनदास द्वारा
- प्रेरणा के मोती — मार्च, 2020
  साधु विवेकजीवनदास द्वारा
- भगवान स्वामीनारायण – समकालिन लोकजीवन — फरवरी 1996
  बीजी वाघेला द्वारा गुजराती प्रकाशन
- स्वामीनारायण आनंद मुद्दे :
- स्वामीनारायण का सांस्कृतिक योगदान – — दिसंबर, 1977
  19 वीं सदी में संप्रदाय
  डॉ रश्मिबेन व्यास द्वारा,
  स्वामीनारायण गुरुकुल, राजकोट ।
- स्वामीनारायण हिंदू धर्म का परिचय — 2001
  कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस
  रेमंड ब्रैडी विलियम्स द्वारा
- मराठा सम्प्रेमय खंड 1977 का — 1977
  भारतीय लोगों का इतिहास और संस्कृति ।
  भारतीय विद्या भवन, बम्बई ।
  प्रो. आर.सी. द्वारा मजूमदार,
- अक्षरब्रह्म गुणातीनंद स्वामी — 1979
  साधु ईश्वरचरणदास द्वारा
- प्रागजी भगत – हर्षदभाई दवे द्वारा — मई 1969
- स्वामीनारायण हिंदू धर्म का परिचय
  – रेमंड ब्रैडी, विलियम कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस
- भारत का एक उन्नत इतिहास
  आर सी मजूमदार, ट्रिनिटी प्रेस

शब्दावली*

1.	आज्ञा	आदेश / निर्देश ।
2.	अक्षर	आंतरिक वास ।
3.	अक्षर पुरुषोत्तम	दो चित्र :- ए) अक्षर अक्षरब्रह्ममण्य गुणातीतनंद स्वामी, सबसे प्रमुख भगवान स्वामीनारायण के शिष्य । बी) पुरुषोत्तम सर्वोच्च देवत्व, भगवान स्वामीनारायण. उनकी साथ में पूजा की जाती है ।
4.	अक्षरधाम	ए) भगवान कृष्ण का दिव्य निवास अथवा भगवान स्वामीनारायण/ स्वर्ग । बी) भगवान स्वामीनारायण की स्मृति में, गांधीनगर (गुज रात) मे स्मारक को हाई-टेक नाम दिया गया ।
5.	आरती	देवता की पूजा से पहले एक अधिनियम के रूप में बत्ती जलाने रस्म ।
6.	आश्रम	पवित्र व्यक्तियों का निवास स्थान/ आवासीय विद्यालय जहां पवित्र व्यक्ति बच्चों के साथ रहते हैं और शिक्षा प्रदान करते हैं ।
7.	आत्मानिष्ठ स्वयं	(आत्मा) की आत्म के रूप में चेतना ।
8.	आण्विक	आत्मा से संबंधित ।
9.	अवतार	भगवान का अवतार । हिंदू धर्म में यह है माना जाता है कि भगवान धरती पर एक इंसान के रूप में जन्म लेते हैं । वह अव्यवस्था, अराजकता, धार्मिक मूल्यों की हानि बुराई की ताकतों पर विजय प्राप्त करता है और फिर से आध्यात्मिक मूल्य स्थापित करता है ।

* पुस्तक में प्रयुक्त सुविधा संस्कृत शब्दों का अर्थ

10. बापा	महंत स्वामी महाराज स्नेही को इस शब्द से संबोधित करते थे
11. बीएपीएस (BAPS)	बोचासनवासी श्री अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था ।
12. भाई	भाई ।
13. भजन-कीर्तन	भक्ति गीत ।
14. भक्त-भगवान ।	भक्त और भक्त ।
15. भक्ति	भक्ति ।
16. ब्राह्मण	ए) अक्षर, भगवान का शाश्वत निवास स्वामीनारायण. बी) सर्वोच्च देवता निर्माता का नाम ।
17. ब्रह्मचर्य	ब्रह्मचर्य की प्रथा ।
18. दर्शन	सम्मान के साथ देवता या पवित्र व्यक्ति को देखना
19. एकादशी	अँधेरे और चंद्र के अँधेरे दोनों पड़ावों दिन हिंदू माह का ग्यारहवाँ । इसे एक के रूप से पवित्र दिन माना जाता है ।
20. गढड़ा	गुजरात के भावनगर जिले का एक गाँव । भगवान स्वामीनारायण का मंदिर ने 29 वर्षों के लिए अपने आधार के रूप में इस्तेमाल किया । इसमें एक शानदार पत्थर है ।
21. घनश्याम महाराज	भगवान स्वामीनारायण ।
22. गोंडल	यहीं पर गुणातीनंद स्वामी गुजरे थे । उसके में एक सुंदर शिरीन बनाई गई है स्मृति को अक्षर देवी के नाम से जाना जाता है । योगीजी महाराज भी यहाँ लम्बे समय तक रहे ।
23. गृहस्थ	गृहस्थ ।
24. गुरु ।	एक धार्मिक शिक्षक, आध्यात्मिक गुरु ।
25. गुरु परम्परा	पवित्र व्यक्तियों, आध्यात्मिक गुरुओं का पदानुक्रम ।
26. हरि कृष्ण महाराज	भगवान कृष्ण । भगवान स्वामीनारायण को भी हरि कृष्ण महाराज कहा जाता है ।

27. हरिजन	नीची जाति का सदस्य ।
28. कारसेवा	आध्यात्मिक या सामाजिक कार्य के लिए स्वैच्छिक सेवा ।
29. कोठारी	साधु जो एक मंदिर का प्रशासनिक प्रबंधक हैं ।
30. महोत्सव	महोत्सव समारोह ।
31. मंदिर	हिंदू पूजा स्थल, मंदिर ।
32. मंत्र	श्रद्धेय शब्द पवित्र भजन के दौरान सुनाया गया पूजा या समारोह ध्यान ।
33. देवता की मूर्ति	मूर्ति ।
34. मूर्ति प्रतिष्ठा	एक मंदिर में देवता की स्थापना प्रतिष्ठापन का धार्मिक कार्य ।
35. निश्चय	दृढ़ अडिग विश्वास ।
36. निर्लोभ	लोभ से मुक्ति, दरिद्रता का व्रत ।
37. निर्माण	अहंकार से मुक्ति ।
38. निर्विकल्प	भगवान की महिमा का निश्चय संकल्प ।
39. निष्काम	जुनून से मुक्ति ।
40. प्रसाद	साधु जीवन में दीक्षा का पहला चरण ।
41. प्रसाद	पवित्र खाद्य पदार्थ, जो सबसे पहले भगवान को चढ़ाया जाता है और बाद में भक्त को वितरित करने के लिए ।
42. पूज्य	माननीय ।
43. ऋषि	ऋषि, संत ।
44. सभा	सभा ।
45. सद्गुरु	पवित्र व्यक्ति जिन्होंने अभी तक दुनिया को त्याग दिया है भक्तों को मार्गदर्शन प्रदान करता है ।
46. साधु	एक व्यक्ति जिसने संसार को त्याग दिया है और ईश्वर प्राप्ति के उद्देश्य से जीवन जीने के लिए एक आध्यात्मिक गुरु के हाथों दीक्षा ली है ।
47. संप्रदाय	एक धार्मिक फैलोशिप, संस्था ।

48. संस्कृत	प्राचीन भारत की शास्त्रीय भाषा ।
49. संस्था	एक संगठन ।
50. सत्संग	पवित्र संगति, आध्यात्मिक से जुड़ी गुरु, साधु या अन्य भक्त ।
51. सेवा	आध्यात्मिक सेवा ।
52. शिक्षापत्री	संस्कृत में 212 छंद 1826 में भगवान स्वामीनारायण द्वारा लिखित उपदेशों का पत्र । यह अपने भक्तों का मार्गदर्शन के लिए बुनियादी आचार संहिता की रूपरेखा तैयार करता है
53. श्रीजी महाराज	भगवान स्वामीनारायण
54. ठाकोरजी	श्रीजी महाराज की छोटी धातु की मूर्ति ।
55 तिलक/चंदलो	भगवान में आस्था को दर्शाने के लिए माथे पर लगाया जाने वाला एक चिह्न ।
56. उपनिषद	प्राचीन हिंदू शास्त्र – वे ऋषियों के दार्शनिक कालक्रम की व्याख्या भगवान, आत्मा और ब्रह्मांड की प्रकृति हैं ।
57. उपासना	पूजा
58. विचारम	आध्यात्मिक यात्राएं ।
59. यज्ञ	यज्ञ की पूजा जहां घी (स्पष्ट मक्खन) और अनाज के साथ आग में चढ़ाया जाता है एक विशेष प्रार्थना का पाठ-मंत्र ।
60. योगी	आध्यात्मिक रूप से सिद्ध व्यक्ति ।

अधिकांश अर्थ ''प्रमुख स्वामी महाराज'' साधु शांतिप्रियदास पुस्तक से हैं ।

स्पंदन :

जयदेव सिंह द्वारा अनुवादित स्पंद-कारिकास शिव सूत्र पर मोतीलाल बनारसीदास प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित – 2000 एक भाष्य है

स्पंदन या स्पंद का शाब्दिक अर्थ है गति या ''धड़कन ।'' यह दर्शाता है गतिशीलता या दिव्य की रचनात्मक ऊर्जा: दिव्य रचनात्मक स्पंदन ।

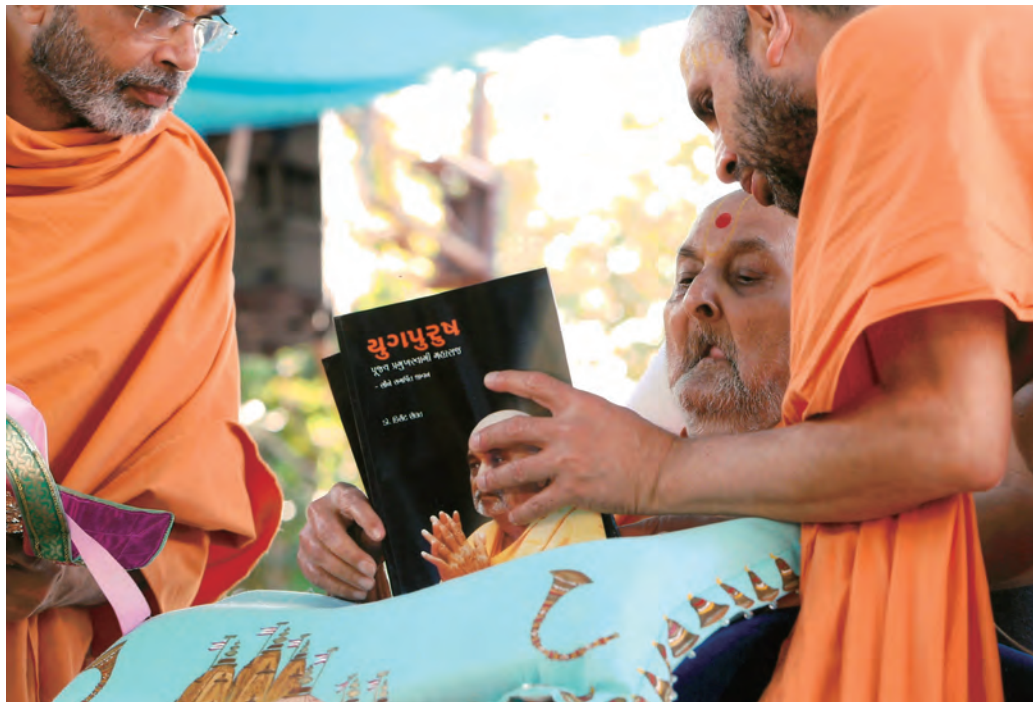

लेखक और उनके परिवार के सदस्य प्रमुखस्वामी महाराज और महंत स्वामी महाराज के साथ

लेखक और उनके परिवार के सदस्य

महंत स्वामी महाराज द्वारा ज्युग पुरुष के मराठी संस्करण की पुस्तक का विमोचन, सितंबर 2013

पुस्तक विमोचन : 'महान ऋषि महंत स्वामी महाराज', सारंगपुर मे । नारायण गुरुजी के साथ लेखक 12 जून, 2019

महंत स्वामी महाराज द्वारा पुस्तक का विमोचन - युग पुरुष, लेखक नारायण गुरुजी के साथ अहमदाबाद में - 15 जनवरी, 2017

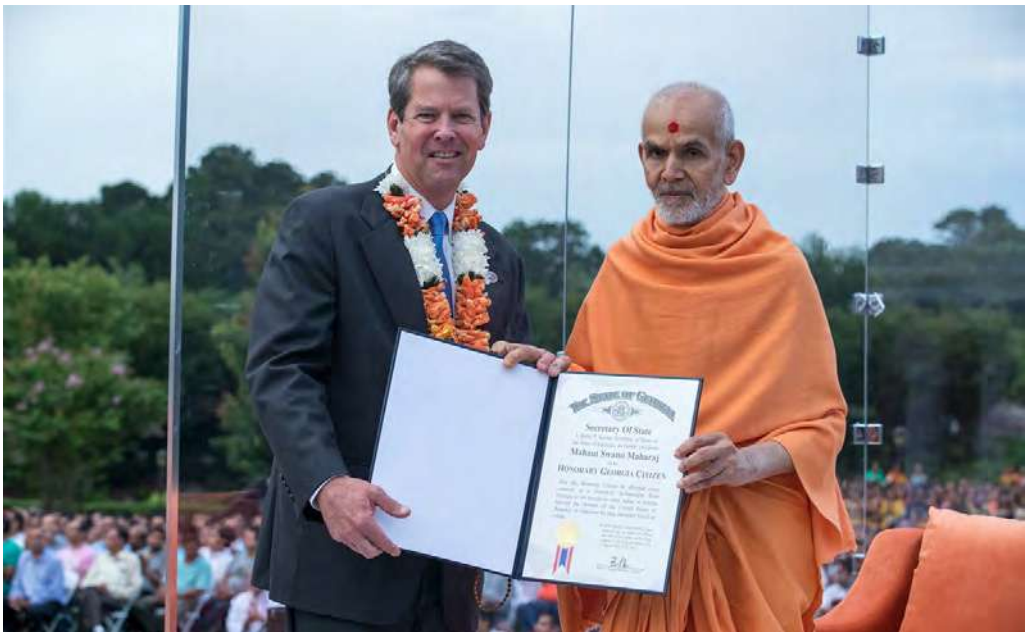

Georgia secretary of State declares MSM Honorary – Georgia State Citizen

Mayor of liburn Proclaims 1st Jyly 2017 as HH Mahant Swami Maharaj Day

1st July 2017 – Atlanta

लेखक का परिचय (संक्षिप्त)

डॉ. किरीट नानुभाई शेलत ने 38 साल जितनी लंबी अवधि तक गुजरात राज्य के वहीवटी तंत्र में विविध उच्च पद पर आई.ए.एस. अधिकारी के तौर पर सेवा प्रदान की है । उन्होंने अपने 'पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन' पर महानिबंध के साथ डी. लिट. डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की है । और 1969 मैं गुजरात वहीवटी सेवा में शामिल हुए थे और गुजरात के कृषि और सरकार विभाग के अग्र सचिव रहने के बाद सेवा**निवृत्त** हुए। **निवृत्ति** के बाद वे और भी **प्रवृत्तिशील** रहे है । उन्होंने कृषि के विकास के लिए राष्ट्रीय कक्षा की 'नेशनल काउन्सिल फॉर क्लाइमेट चेन्ज एंड सस्टेइनेबल डेवलपमेंट एंड पब्लिक लीडरशिप (एन. सी.सी.एस.डी. संस्था, परम पूज्य प्रमुख स्वामी महाराज के आशीर्वाद से कार्यरत की है । वे इस संस्था के वर्तमान एक्झिक्युटिव चेरमैन है ।

उन्होंने गरीब परिवार, किसानों और लघु **उद्यमियों** और दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए बड़े पैमाने की परियोजनायें रची है और कार्यान्वित की है । तथा कृषि और ग्रामीण विकास से संबंधित, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और स्थानीय स्तर पर चुनौतियों से निपटने के तरीके और किसानों की आय दुगनी करके आत्मनिर्भर कृषि के निर्माण के लिये 20 से अधिक पुस्तकें लिखी है और कइ परिसंवादों का संचालन किया है ।

स्वामिनारायण विचारधारा के प्रखर अनुयायी डॉ. किरीट एन. शेलत ने पू. प्रमुख स्वामी महाराज की जीवनी लिखी है । उनका ये प्रेरक पुस्तक ''युगपुरुष, पूज्य प्रमुख स्वामी महाराज - दूसरों को समर्पित जीवन'' नौ संस्करणों के साथ छह भाषाओं में प्रकाशित हुई है ।

महंत स्वामी महाराज जैसे एक नम्र, सरल और सहज मानवी कैसे एक **वैश्विक** आध्यात्मिक संस्था का नेतृत्व कर सकते हैं और अगणित मानवीओ को प्रेरित कर सकते हैं और सार्थक महान ऋषि बन सकते हैं उसकी गाथा लेखक ने उसकी इस रचना ''महान ऋषि - महंत स्वामी महाराज'' में तादृश की है ।

About Publisher;
National Council for Climate Change Sustainable Development and Public Leadership (NCCSD)

आत्मनिर्भर और आत्मनिर्भर-जलवायु स्मार्ट किसानों का निर्माण

नई सहस्त्राब्दी में दुनिया जलवायु परिवर्तन की चुनौती का सामना कर रही है तेजी से अप्रत्याशित मौसम की घटनाएं और इसके गहन प्रतिकूल प्रभाव आवास । जलवायु परिवर्तन का कारण ग्लोबल वार्मिंग है - बढ़ी हुई ग्रीन हाउस गैस । हालांकि ग्लोबल वार्मिंग एक आंतरराष्ट्रीय घटना है - इसके प्रतिकूल प्रभाव स्थानीय स्तर पर होते हैं। गाँव, कृषि भूमि और किसान गंभीर रूप से प्रभावित हैं । बाढ़, चक्रवात, बारिश में देरी, सूखा, एक दिन बेमौसमी भारी बारिश, गर्म और ठंडी लहरें, पाला - ये सभी फसल-विफलता, पशुधन और मत्स्य पालन की कम उत्पादकता और बढ़ी हुई मृत्यु दर की ओर ले जाते हैं ।

इसी संदर्भ में डॉ. किरीट शेलत ने मार्च 2010 में ''ग्लोबल वार्मिंग, सतत कृषि, विकास और सार्वजनिक नेतृत्व'' पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन गूजरात विद्यापीठ - अहमदाबाद में आयोजन कर संवाद की शुरुआत की । सम्मेलन का विशेष उद्देश्य अहमदाबाद में कृषि पर ध्यान देने वाला एनजीओ राष्ट्रीय परिषद जलवायु परिवर्तन सतत विकास और सार्वजनिक नेतृत्व - एन.सी.सी.एस.डी स्थापित करने का था । मई 2010 में दिल्ली में हुई एक बैठक में इस विचार पर चर्चा हुई थी जिसमे जस्टिस बी.पी. सिंह, डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन, श्री पुरुषोत्तम रूपाला, डॉ. वाई. एस. राजन और श्री कांतिसेन श्रॉफ और अन्य लोगों ने भाग लिया और विचार का स्वागत किया । प्रमुख स्वामी महाराज उस समय दिल्ली में थे । प्रवर्तक - न्यायमूर्ति बी.पी. सिंह, डॉ. किरीट शेलत और अन्य लोगों ने उनसे मुलाकात की और इस प्रयास के लिए उनका आशीर्वाद मांगा । प्रमुख स्वामी ने आशीर्वाद दिया और कहा ''यह एक बहुत अच्छी पहल है । हमारी सबसे बड़ी चुनौती ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब परिवार की रोजी-रोटी है । मुझे यकीन है कि आपके सभी प्रयास स्थायी आजीविका पाने मे उनकी मदद करेंगे है ।

संगठन को सितंबर २०१० में डॉ. किरीट शेलत के कार्यकारी अध्यक्ष रूप में शुरू किया गया था और न्यायमूर्ति बी.पी. सिंह इसके अध्यक्ष हैं।

एन.सी.सी.एस.डी. ने अपने मिशन की शुरुआत किसानों और युवा के लिए ''थिंक मीट फॉर पॉलिसी सूत्रीकरण और क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम'' द्वारा की । जलवायु

परिवर्तन की चुनौतियों का सामना करने के लिए सार्वजनिक नेतृत्व – निर्वाचित और गैर–निर्वाचित दोनों, और किसानों को तैयार करने पर ध्यान केंद्रित किया गया था । इस के बाद: पहलों की श्रृंखला थी ।

एनसीसीएसडी ने जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का सामना करने के लिए UNFCCC द्वारा आयोजित विभिन्न देशों की पार्टियों के ''बैठकें – सम्मेलन'' में भाग लिया । COP चर्चाओं में 'कृषि और प्रशंसक' शामिल नहीं थे । भूमि शमन के लिए प्रकृति के उपकरण के रूप में कृषि की – मान्यता नहीं थी – एनसीसीएसडीने साइड इवेंट्स आयोजित किया और प्रदर्शनी में भाग लिया और आंतरराष्ट्रीय संगठन के वरिष्ठ नेताओं से भी मिले और समज दी की कृषि प्रतिकूल प्रभावों को कैसे कम कर सकती है। एनसीसीएसडी सफलतापूर्वक COP में कृषि को प्राथमिकता दीलाई । पेरिस समझौते ने खाद्य सुरक्षा, खाद्य उत्पादकता, प्रौधोगिकी हस्तांतरण और क्षमता बढ़ाने के महत्व को स्वीकार किया । FAO को भी यह विचार पसंद आया और उसने एक विशेष प्रयोजन संगठन GACSA बनाया जिसे ''जलवायु स्मार्ट कृषि के लिए वैश्विक गठबंधन कहा जाता है ।

राष्ट्रीय स्तर पर ICAR द्वारा NICRA – जलवायु अनुकूलता कृषि के लिए राष्ट्रीय संस्थान की शुरुआत की गई थी। एनसीसीएसडी ने इसके हिस्से के रूप में 'क्षमता निर्माण' शुरू किया और किसानों के लिए गाइड बुक विकसित की "Developing Climate Resilient Agriculture" ।

एनसीसीएसडी ने 2014 में 'जलवायु न्याय' पर एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया भारत के मुख्य न्यायाधीश ने इसका उद्घाटन किया । किसान संबंधित मुद्दे पर ध्यान केंद्रित किया गया और परिणाम उदार फसल बीमा पॉलिसी थे उन किसानों को भी कवर करने के लिए, जिन्होंने क्रेडिट प्राप्त नहीं किया है ।

2014 में एनसीसीएसडी ने फ्लोरिडा कृषि के साथ प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए और मैकेनिकल यूनिवर्सिटी (FAMU), USA बिल्डिग क्लाइमेट स्मार्ट किसान के लिए पहल की । यूएसए के २६ वैज्ञानिकों ने गुजरात में किसानों की मुलाकात की और उन्हें प्रशिक्षित किया।

एनसीसीएसडी ने एक गाइडबुक ''बिल्डिग क्लाइमेट स्मार्ट फार्मर्स'' – जलवायु परिवर्तन में किसानों की आय दोगुनी करना तैयार की है । इस पुस्तक के लेखक डॉ. किरीट एन. शेलत और डॉ. ओडेमारी म्बुया हैं, FAMU - USA । एनसीसीएसडी नियमित रूप से थिंक टैंक सेमिनार आयोजित कर रहा है, किसानों, ग्रामीण युवाओं, विश्वविद्यालय के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम – छात्र, सरकारी अधिकारी, नीतियों के लिए नए विचार विकसित करना और इसे सरकार के साथ साझा करना।

ल भारत के माननीय प्रधान मंत्री – श्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए कॉल के जवाब में 'एनसीसीएसडी'ने आत्मनिर्भर भारत के लिए आत्मनिर्भर कृषि और किसान – हितधारकों की भूमिका पर काम किया, यह – आत्मनिर्भर किसानों पर सेमिनारों की अनुवर्ती श्रृंखला के रूप में वेब–ऑन–एयर के माध्यम से आयोजन कर रहा है । इसने कृषि विभाग – गुजरात सरकार के साथ आत्मनिर्भर किसानों के विकास के लिए – गुजरात के लिए एक रोडमैप कृषि – 2020-30 पर काम किया ।

एनसीसीएसडी ने 25 से अधिक प्रकाशन निकाले हैं और उन्हें इस पर गर्व है इस पुस्तक को प्रकाशित करें जो दर्शाती है कि ''आध्यात्मिक नेता'' बनाने में क्या जाता है ।

संपर्क करें
सुश्री निशा शाह
सीईओ
जलवायु परिवर्तन स्थायी विकास और सार्वजनिक नेतृत्व के लिए राष्ट्रीय परिषद
(NCCSD)
पटेल ब्लॉक, राजदीप इलेक्ट्रॉनिक कंपाउंड,
स्टेडियम सिक्स रोड, नवरंगपुरा,
अहमदाबाद–३८००१४
ईमेल: drkiritshelat@gmail.com, वेबसाइट: www.nccsd.india.org

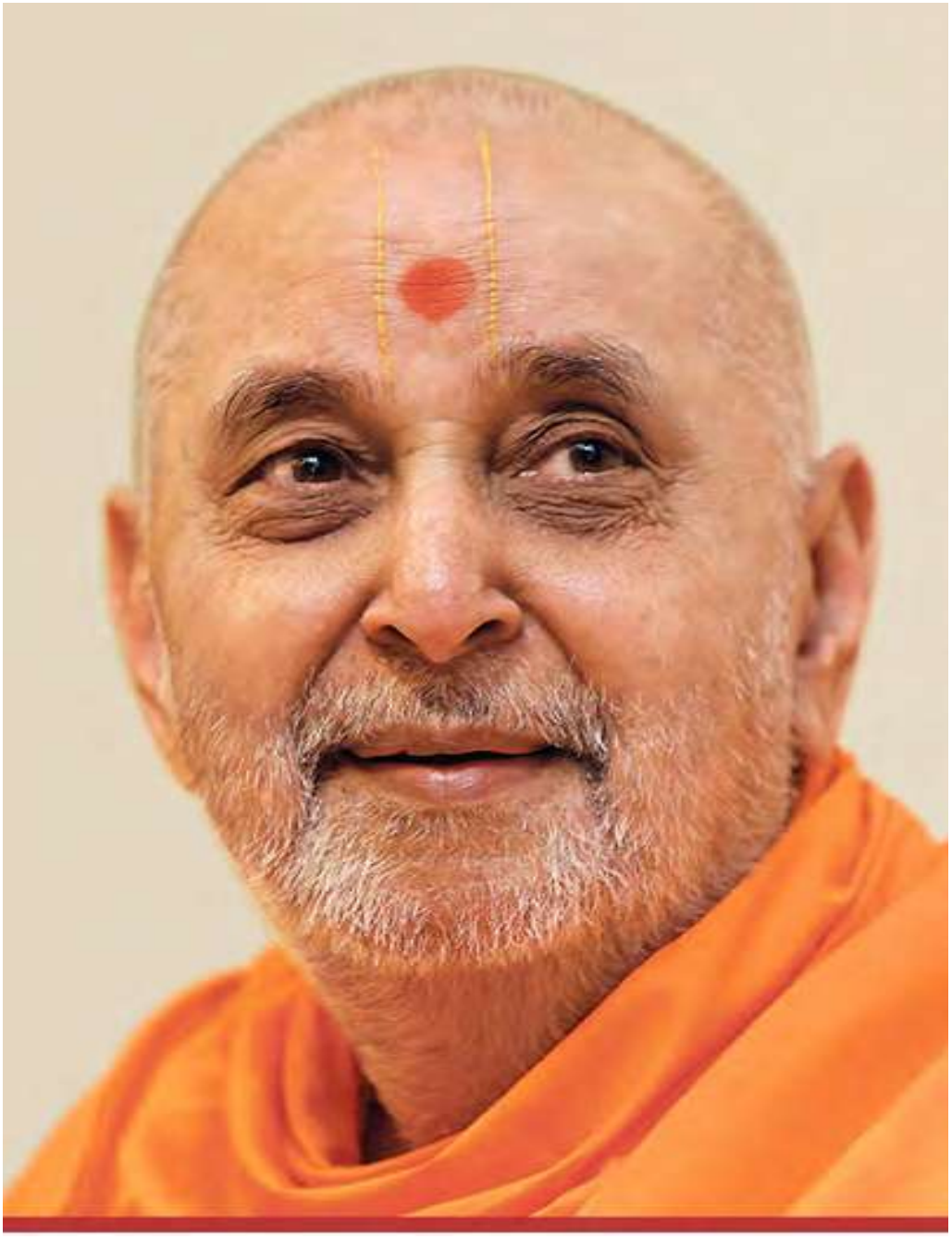

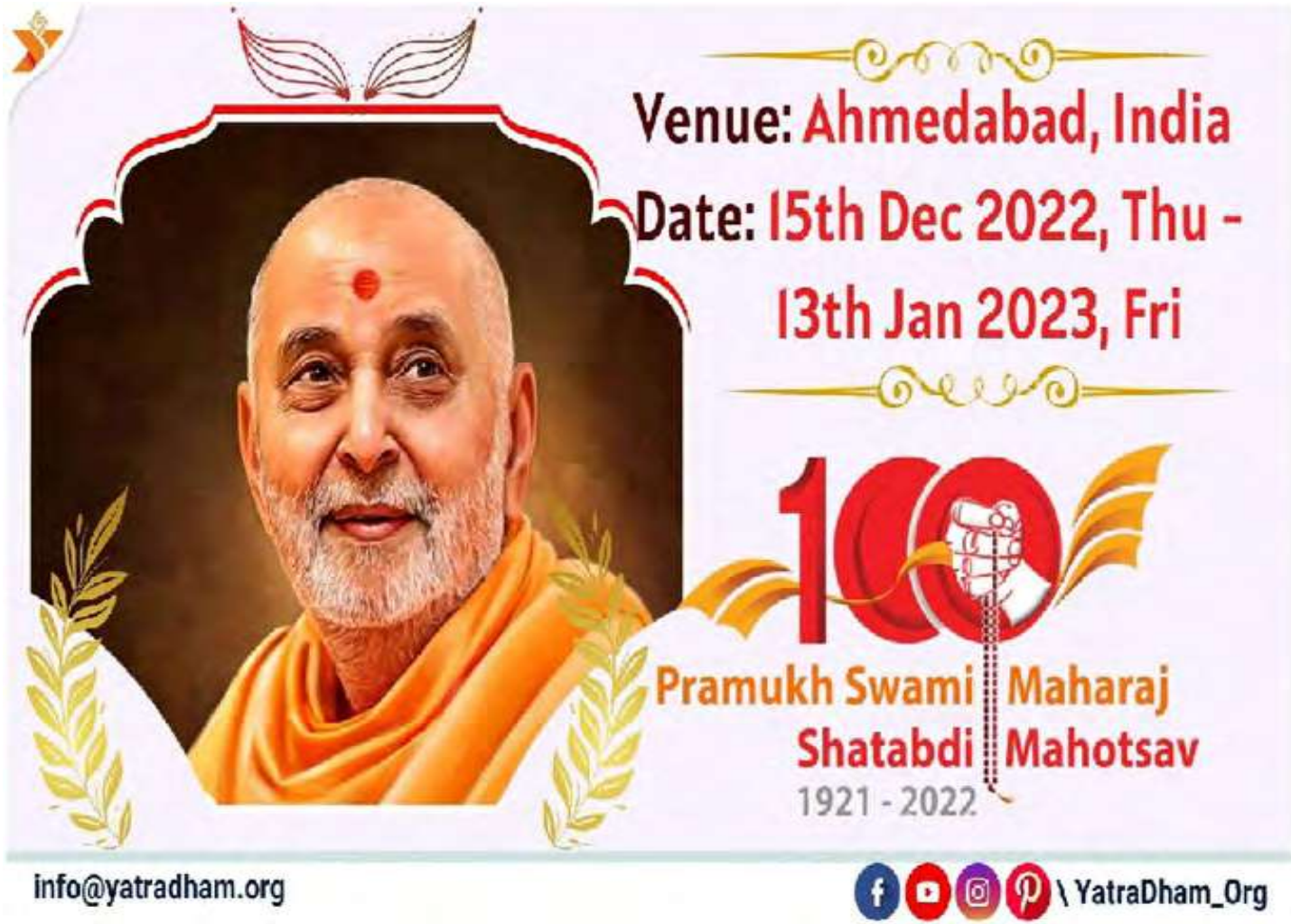
Venue: Ahmedabad, India
Date: 15th Dec 2022, Thu -
13th Jan 2023, Fri
100
Pramukh Swami Maharaj
Shatabdi Mahotsav
1921 - 2022
info@yatradham.org
\ YatraDham_Org

प्रमुखस्वामी महाराज शताब्दी महोत्सव

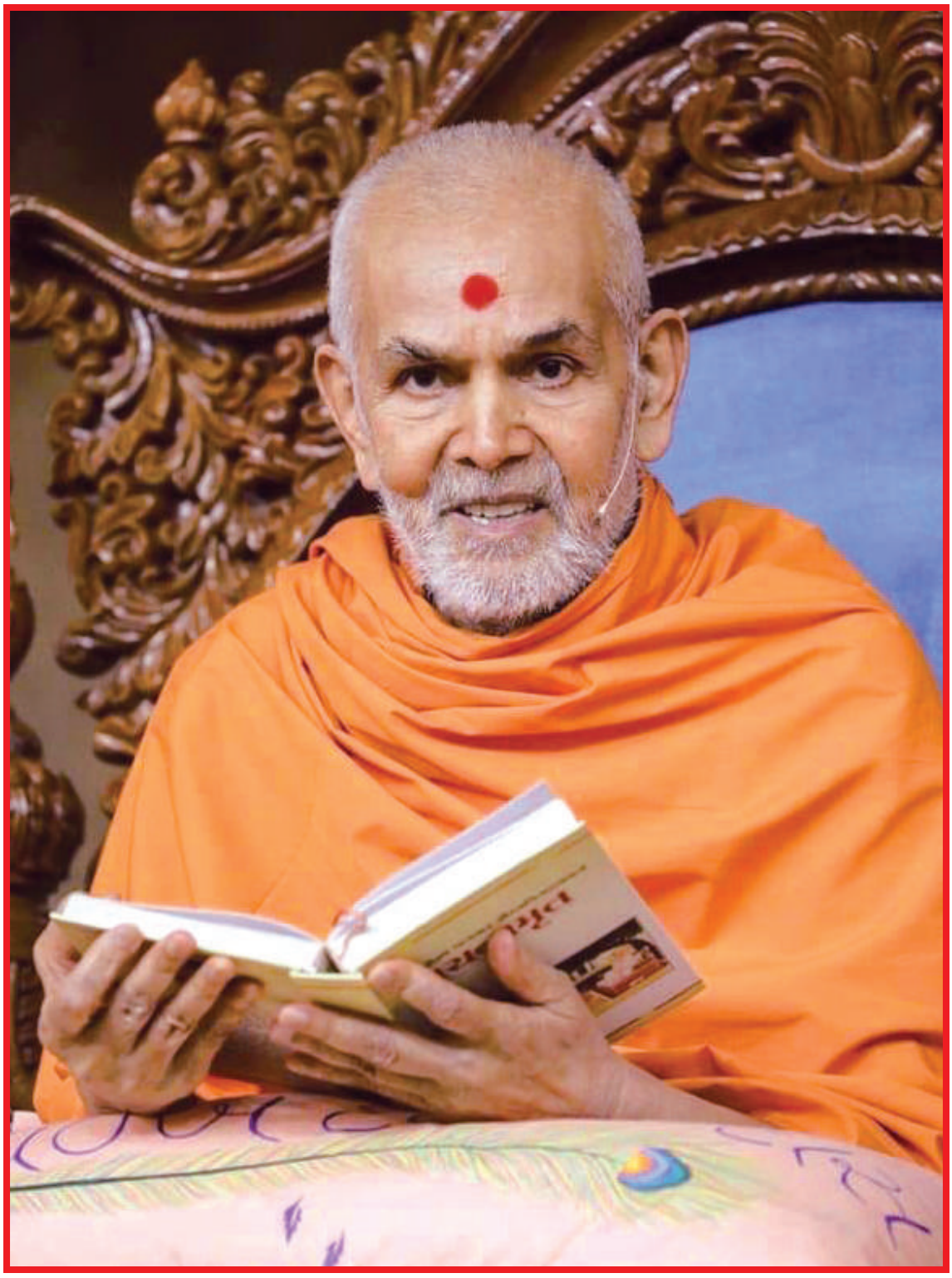

डॉ. किरीट एन. शेलत

प्रकाशक